राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन

National Mission for Manuscripts

आठवें वर्ष की रिपोर्ट
2010 - 2011

आवरण चित्रः

अरण्यकाण्ड पाण्डुलिपि का एक पृष्ठ, राजस्थान प्राच्य शोध संस्थान, जोधपुर, संग्रह में संरक्षित।

प्रकाशकः

निदेशक
राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन
11, मानसिंह रोड
नयी दिल्ली - 110 001
दूरभाषः +91 11 23383894
फैक्सः +91 11 23073340
ई-मेलः director.namami@nic.in
वेबसाईटः www.namami.org

मुद्रण एवं डिज़ाइनः

मैक्रो ग्राफिक्स प्राइवेट लिमिटेड (www.macrographics.com)

राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन

National Mission for Manuscripts

आठवें वर्ष की रिपोर्ट

2010 - 2011

राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन

पाण्डुलिपि संसाधन केन्द्र (एम.आर.सी.)

- लेह, जम्मू-कश्मीर
- श्रीनगर, जम्मू-कश्मीर
- धर्मशाला, हिमाचल प्रदेश
- शिमला, हिमाचल प्रदेश
- पौड़ी गढ़वाल, उत्तराखंड
- हरिद्वार, उत्तराखंड
- कुरुक्षेत्र, हरियाणा
- होशियारपुर, पंजाब
- रामपुर, उ.प्र.
- बनारस, उ.प्र.
- लखनऊ, उ.प्र.
- वृन्दावन, उ.प्र.
- आगरा, उ.प्र.
- ग़ाज़ीपुर, उ.प्र.
- नयी दिल्ली, दिल्ली
- जोधपुर, राजस्थान
- जयपुर, राजस्थान
- उज्जैन, मध्यप्रदेश
- सागर, मध्यप्रदेश
- रायपुर, छत्तीसगढ़
- इन्दौर, मध्यप्रदेश
- अहमदाबाद, गुजरात
- द्वारका, गुजरात
- पुणे, महाराष्ट्र
- रामटेक, महाराष्ट्र
- पटना, बिहार
- दरभंगा, बिहार
- नालन्दा, बिहार
- आरा, बिहार
- कोलकाता, पश्चिम बंगाल
- भुवनेश्वर, उड़ीसा
- भद्रक, उड़ीसा
- गुवाहाटी, असम
- मारनहाट, असम
- सिल्चर, असम
- इम्फाल, मणिपुर
- अगरतल्ला, त्रिपुरा
- तिरुपति, आन्ध्र प्रदेश
- हैदराबाद, आन्ध्र प्रदेश
- पुदुच्चेरि, पुदुच्चेरि
- मैसूर, कर्नाटक
- श्रावणबेलगोला, कर्नाटक
- केलाडी, कर्नाटक
- बंगलुरु, कर्नाटक
- हम्पी, कर्नाटक
- चेन्नई, तमिलनाडु
- कांचिपुरम, तमिलनाडु
- तिरुअनंतपुरम, केरल
- तिरूर, केरल
- त्रिपुनिथुरा, केरल

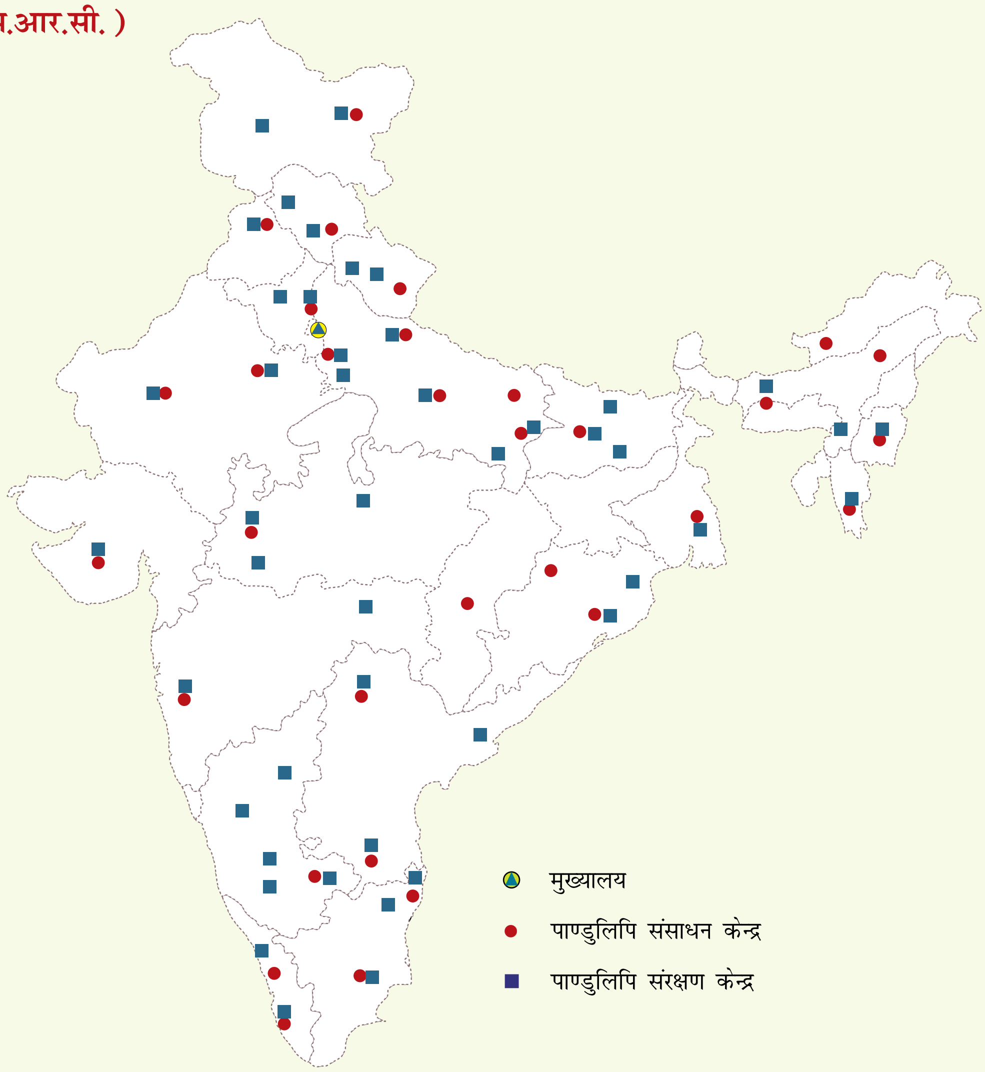

पाण्डुलिपि संरक्षण केन्द्र

- लेह, जम्मू-कश्मीर
- शिमला, हिमाचल प्रदेश
- नैनीताल, उत्तराखंड
- दिल्ली
- वृन्दावन, उ.प्र.
- रामपुर, उ.प्र.
- गोरखपुर, उ.प्र.
- ग़ाज़ीपुर, उ.प्र.
- लखनऊ, उ.प्र.
- बनारस, उ.प्र.
- कुरुक्षेत्र, हरियाणा
- इन्दौर, मध्यप्रदेश
- रायपुर, छत्तीसगढ़
- होशियारपुर, पंजाब
- उज्जैन, मध्यप्रदेश
- जोधपुर, राजस्थान
- कोटा, राजस्थान
- जयपुर, राजस्थान
- अहमदाबाद, गुजरात
- पुणे, महाराष्ट्र
- पटना, बिहार
- आरा, बिहार
- कोलकाता, पश्चिम बंगाल
- भुवनेश्वर, उड़ीसा
- बुरला, उड़ीसा
- गुवाहाटी, असम
- सिल्चर, असम
- अगरतल्ला, त्रिपुरा
- इम्फाल, मणिपुर
- तवांग, अरुणाचल प्रदेश
- हैदराबाद, आन्ध्र प्रदेश
- तिरुपति, आन्ध्र प्रदेश
- बंगलुरु, कर्नाटक
- श्रावणबेलगोला, कर्नाटक
- हम्पी, कर्नाटक
- केलाडी, कर्नाटक
- उडुपी, कर्नाटक
- मैसूर, कर्नाटक
- चेन्नई, तमिलनाडु
- त्रिवेन्द्रम, केरल
- एरनाकुलम, केरल
- तिरूर, केरल

टिप्पणी: यह मानचित्र केवल प्रतीकात्मक है, मानक के अनुरूप नहीं।

निदेशक की कलम से

सन् 2010-11 का वर्ष राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन के लिए अत्यधिक महत्त्वपूर्ण है क्योंकि इस वर्ष जड़ता का परित्याग कर यह संस्था जीवन्त ऊर्जा से ओतप्रोत, सक्रियता की ओर अग्रसर हुई है। यह संस्थागत तथा व्यक्तिगत स्तर पर भी संतोषजनक अनुभव है।

अखिल भारतीय स्तर पर पाण्डुलिपि के क्षेत्र में गम्भीर शास्त्रीय कार्य का प्रचालन चुनौतीपूर्ण कार्य है। हम भारतीय अभी तक अपनी विरासत के साथ भावनात्मक रूप से बहुत नहीं जुड़ पाये हैं फिर वह विरासत चाहे पाण्डुलिपि की हो या अन्य किसी प्रकार की। ऐसे अनेक व्यक्ति हैं जिन्होंने विरासत के संरक्षण के लिए परिश्रम एवं निष्ठा के साथ काम किया है किन्तु एक समाज के रूप में इसके प्रति सजगता का आज भी अभाव है।

सामान्यरूप से, हम अपनी इस प्रवृत्ति के लिए अपने उपनिवेशयुगीन अतीत को दोष देते हैं और आशा करते हैं कि समय के साथ इसमें सुधार हो जायेगा। स्वतन्त्रता के तिरसठ साल बीत चुके हैं और अब समाज की प्रवृत्ति में परिवर्तन राष्ट्रीय अस्मिता की रक्षा के लिए आवश्यक है। दुर्भाग्यवश, हम अपनी सांस्कृतिक विरासत अथवा ज्ञान की विरासत में से किसी एक से भी स्वयं को उस रूप में जोड़ने में समर्थ नहीं हो पाये हैं जिसके द्वारा हम युवा पीढ़ी के मन में इनके प्रति सम्मान और गौरव का भाव उत्पन्न कर सकें। मैं इस विशाल और महत्त्वपूर्ण विरासत से युवा पीढ़ी की अनभिज्ञता के लिए उन्हें दोष नहीं देती क्योंकि उन्हें इनसे परिचय का समुचित अवसर ही नहीं दिया गया है। इस बात की आवश्यकता है कि हम भारतीय ज्ञान परम्परा की विभिन्न विद्याओं को विद्यालय और महाविद्यालय में पढ़ाये जाने वाले पाठ्यक्रमों का यथोचित अभिन्न अंग बनाकर युवा पीढ़ी को इससे परिचित करवायें। इसमें शोध की व्यापक सम्भावनाओं और समसामयिक प्रयोग की सम्भावना से युवा पीढ़ी को तो परिचित कराया ही जाना चाहिए, उसके साथ नीति निर्धारकों का ध्यान भी इस ओर आकृष्ट किया जाना चाहिए।

भौगोलिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक, पारिस्थितिकी और भाषायी दृष्टि से भारत एक विशाल देश है यहाँ विगत पाँच हजार वर्षों से भी अधिक समय से ज्ञान की अक्षुण्ण परम्परा रही है। इसमें सत्य एवं आध्यात्मिक ज्ञान के प्रति जिज्ञासा से प्रेरित साहित्य के साथ भौतिक सुख-सुविधा एवं प्रगति से जुड़ा हुआ साहित्य भी है।

हम सभी जानते हैं कि दशमलव प्रणाली का उद्भव भारत में हुआ और शून्य भी भारतीय मेधा का अवदान है। स्पष्ट है कि ऐसी खोज अचानक नहीं हुई होगी अपितु ये सतत शास्त्रीय अनुसन्धान की परिणति है। हम रसायन विज्ञान के सम्बन्ध में विचार करते हैं जिसे भारतीय परम्परा में रसशास्त्र कहा जाता था। जो व्यक्ति आयुर्वेद के विषय में बहुत नहीं जानता है उसे भी यह ज्ञात है कि इस पद्धति में मनुष्य को ऐसे तत्त्व खिलाये जा सकते हैं जो अन्यथा उसके लिए अखाद्य हैं। ऐसा रोग के उपचार के लिए और रोग-निरोधी क्षमता बढ़ाने के लिए लाभप्रद रीति में किया जाता है। लौह, रजत और स्वर्ण जैसी धातुएं तथा मोती, मूँगा और पारद जैसे पदार्थों की खुराक भी मनुष्य को इस तरह दी जाती है जिससे उसे लाभ हो। ऐसा

सोचना हास्यास्पद होगा कि ऐसी रासायनिक प्रक्रियाओं का विकास विभिन्न स्तरों पर समुचित और परिश्रमपूर्ण प्रयोगों के बिना सम्भव हुआ होगा।

समाज की प्रगति में आम जन को सहभागी बनाना भारतीय बौद्धिक परम्परा का अभिन्न अङ्ग रहा है। समाज के विकास में सभी वर्गों की सहभागिता सुनिश्चित करना हमारे प्रबुद्ध पूर्वजों की सुविचारित नीति थी। पर्यावरण सन्तुलन बनाए रखने तथा प्रकृति की लय में जीवन जीने के लिए स्वस्थ आचरण के विकास में हमारे पूर्वजों की यह रणनीति बहुत ही कारगर एवं प्रभावी रही। लोगों के धार्मिक विश्वासों में इन सिद्धान्तों को गूँथ दिया गया था। यह रणनीति प्रभावी सिद्ध हुई क्योंकि प्रकृति में सन्तुलन बनाए रखने के लिए सबको प्राकृतिक सन्तुलन के शास्त्र की शिक्षा देना सम्भव नहीं है। एक बार धार्मिक विश्वासों में इन सिद्धान्तों के रच-बस जाने के उपरान्त सामान्य रूप से लोग इसके विपरीत आचरण नहीं करते हैं। इससे ऐसी जीवन शैली विकसित होती है जो व्यक्ति के साथ-साथ समष्टि के लिए भी लाभकारी होती है। उदाहरण के रूप में, नदी प्रदूषण और वृक्ष की कटाई जैसे विषय ध्यान देने योग्य हैं। भारतीय परम्परा में नदियों को माता और वृक्ष को देवता कहा गया है। इस विश्वास के कारण यह सुनिश्चित किया जा सका कि नदी को प्रदूषित नहीं किया जाये और वृक्षों की कटाई न हो। इससे सदियों तक पर्यावरण संतुलित बना रहा लेकिन आधुनिकतावादियों ने इसे गलती से अंधविश्वास की श्रेणी में रख दिया। परिणामस्वरूप देश को भयंकर पर्यावरण विनाश का दंश झेलना पड़ा है। मैं इन सब बातों का उल्लेख इसलिए कर रही हूँ कि मैं अत्यन्त कठिन बौद्धिक साधना से प्राप्त भारतीय ज्ञान को आधुनिक सन्दर्भ से जोड़ने पर बल देना चाहती हूँ। इस ज्ञान का समाज के साथ पहले से ही घनष्ठ सम्बन्ध रहा है। इसने ज्ञान के व्यावहारिक प्रयोग में समाज को सक्रिय रूप से सहभागी बनाया है। इसी से समाज में स्थिरता और सम्पन्नता सुनिश्चित हो सकी।

जिनके मन में इसके प्रति अनुराग है तथा जो बौद्धिक प्रगति के साथ-साथ सामाजिक शान्ति एवं उन्नति में इसका उपयोग करना चाहते हैं, उस सभी को हम इस विशाल संसाधन से अवगत कराना चाहते हैं। भारतीय ज्ञान पद्धति यहाँ की प्रकृति, संस्कृति एवं भूगोल में रची-बसी हुई है और इसमें हमारी समस्याओं के समाधान के सूत्र मौजूद हैं। वर्ष 2010-2011 के दौरान राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन ने अतीत को वर्तमान से जोड़ने का सार्थक प्रयास किया है।

विभिन्न समस्याओं में रचित अज्ञात साहित्य को संगोष्ठियों के माध्यम से प्रकाश में लाने पर हमने जोर दिया है। इस वर्ष के दौरान निम्नलिखित संगोष्ठियों का आयोजन किया गया।

1. पूर्वोत्तर क्षेत्र में पाण्डुलिपि संरक्षण : संरक्षण एवं प्रसार में समस्याएं (धर्मनगर, त्रिपुरा में)
2. भारत में पारम्परिक चिकित्सा पद्धति (केरल विश्वविद्यालय, तिरुअनन्तपुरम में)
3. फारसी और अरबी पाण्डुलिपि के सम्बन्ध में अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन : सामासिक संस्कृति की राष्ट्रीय विरासत (दिल्ली विश्वविद्यालय में)
4. बौद्ध संस्कृत ग्रन्थ और उनका संरक्षण पर राष्ट्रीय संगोष्ठी (नागार्जुन बौद्ध फाउंडेशन, गोरखपुर में)
5. दक्षिण भारत में काव्यशास्त्र से सम्बन्धित पाण्डुलिपियाँ (आन्ध्र प्रदेश सरकार प्राच्य पाण्डुलिपि पुस्तकालय, हैदराबाद में)
6. वैकल्पिक ग्रन्थ के रूप में पाण्डुलिपि (केन्द्रीय विश्वविद्यालय गुजरात, गुजरात में)
7. भारत में गणित की पाण्डुलिपियाँ (कुन्द कुन्द ज्ञानपीठ, इन्दौर में)

इस वित्त वर्ष में जिन विषयों पर संगोष्ठी का आयोजन नहीं किया गया उन पर भविष्य में संगोष्ठियाँ आयोजित की जाएँगी।

युवा विद्वानों को पाण्डुलिपि अध्ययन में सम्मिलित करने तथा दक्ष बनाने के लिए पाण्डुलिपि-शास्त्र और पुरालिपि शिक्षण से सम्बन्धित अनेक पाठ्यक्रमों का आयोजन देश के विभिन्न भागों में किया गया। इस कार्य में शिक्षा जगत के सभी वर्गों का अत्यन्त ही उत्साहवर्द्धक सहयोग रहा। युवा विद्वानों को पण्डुलिपियों के विवेचनात्मक सम्पादन में सैद्धान्तिक एवं व्यावहारिक प्रशिक्षण के लिए पाण्डुलिपिशास्त्र एवं पुरालिपिशास्त्र के प्रगत प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन हुआ। विशेषज्ञों का चयन बहुत ही सावधानीपूर्वक किया गया और प्रत्येक विशेषज्ञ के मार्गदर्शन में पाँच-छः युवा विद्वानों के दल को रखा गया। पाण्डुलिपियों के विवेचनात्मक सम्पादन में उन्हें साक्षात् व्यावहारिक प्रशिक्षण तो प्राप्त हुआ ही कार्यक्रम में अन्त में अनेक सम्पादित पाण्डुलिपियाँ प्रकाशन के लिए तैयार हो गयीं। इस प्रकार इन कार्यक्रमों का दोहरा लाभ

दिखायी पड़ा। सम्पादित पाण्डुलिपियों का प्रकाशन राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन द्वारा किया जा रहा है। हमारे निवारक और उपचारात्मक संरक्षण पाठ्यक्रमों को बहुत ही उत्साहवर्द्धक समर्थन मिला। इस प्रयास से पाण्डुलिपि भण्डारों और निजी संग्रहों में विद्यमान पाण्डुलिपियों के उत्तम रख-रखाव को सुनिश्चित किया जा सका है।

पाण्डुलिपियों के प्रकाशन के लिए चयन हेतु तीन विशेषज्ञ समितियाँ गठित की गयी हैं : प्रथम फारसी-अरबी और उर्दू के लिए, द्वितीय द्रविड़ परिवार की भाषाओं के लिए तथा तृतीय भारत यूरोपीय परिवार की भाषाओं के लिए। विशेषज्ञों ने हमें अपना पूर्ण सहयोग दिया जिसके परिणामस्वरूप सम्पादन, व्याख्या और अनुवाद हेतु अनेक पाण्डुलिपियों का चयन और आबंटन किया गया। हमें आशा है कि इन प्रयासों के कारण अगले वर्ष हम कई पाण्डुलिपियों का प्रकाशन कर पायेंगे।

सांख्यिकीकरण में इस वर्ष बहुत अधिक कार्य किया गया है और इस क्षेत्र में हमने अपने द्वितीय चरण को पूरा कर लिया है। इसके अन्तर्गत 70,000 पाण्डुलिपियों (लगभग 44 लाख पृष्ठों) का सांख्यिकीकरण किया गया। इससे हमें भविष्य में एक राष्ट्रीय सांख्यिकीय पाण्डुलिपि पुस्तकालय (नेशनल डिजिटल मैन्युस्क्रिप्ट लाईब्रेरी) की स्थापना में सहायता मिलेगी। नये कार्यक्रमों को प्रारम्भ करने के उत्साह में हम अपने उन नियमित कार्यक्रमों की उपेक्षा नहीं करते जो पहले से चले आ रहे हैं, जैसे तत्त्वबोध व्याख्यान। यह निर्णय किया गया कि सभी व्याख्यानों का आयोजन केवल दिल्ली में ही न हो, बल्कि उनका आयोजन देश के अन्य भागों में भी किया जाये। 24 व्याख्यानों में से 20 का आयोजन देश के विभिन्न राज्यों में स्थित केन्द्रों में किया गया। इन व्याख्यानों को मिले जन समर्थन ने निर्णय में निहित लक्ष्य को सच सिद्ध किया है। इन व्याख्यानों के संकलन को भविष्य में प्रकाशित किया जायेगा, जैसे कि पूर्व में भी किया जा चुका है।

हमने पूर्वोत्तर राज्यों पर विशेष रूप से ध्यान दिया जिसके परिणामस्वरूप हम अपनी गतिविधियों में मणिपुर, मिजोराम, त्रिपुरा और असम जैसे राज्यों को सक्रिय रूप से सम्मिलित कर सके। इन राज्यों में विद्यमान इस मूर्त विरासत की सम्पन्नता से हमारा पूरा परिचय होना अभी शेष है। हमें आशा है कि हम अगले वर्ष अन्य राज्यों में भी अपनी गतिविधियों का विस्तार करेंगे।

इन सभी गतिविधियों के दौरान मिशन ने डाटाबेस निर्मित करने के अपने दायित्व को नहीं भुलाया है। समीक्षाधीन वर्ष के दौरान हमने अपने डाटाबेस में 32 लाख से अधिक पाण्डुलिपियों के सम्बन्ध में सूचना संग्रहीत करने का लक्ष्य प्राप्त किया जिसमें से लगभग 20 लाख को वेब पर डाला जा चुका है। हमारी गतिविधियों और उपलब्धियों का ब्योरा मूल्यांकन हेतु सुधी पाठकों के समक्ष प्रस्तुत है।

वर्ष 2011 को एक अविस्मरणीय वर्ष बनाने में मिशन के प्रति सहयोग देने के लिए संस्कृति मन्त्रालय को, अपने समर्पित कार्य के लिए रा.पा.मि. के कर्मचारियों के प्रति और प्रतिबद्धता, उत्साह तथा सहयोग के लिए देश भर में फैली मिशन की सहायोगी संस्थाओं के प्रति मेरा सादर, सहर्ष आभार एवं धन्यवाद!

प्रो. दीप्ति एस. त्रिपाठी
निदेशक, राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन

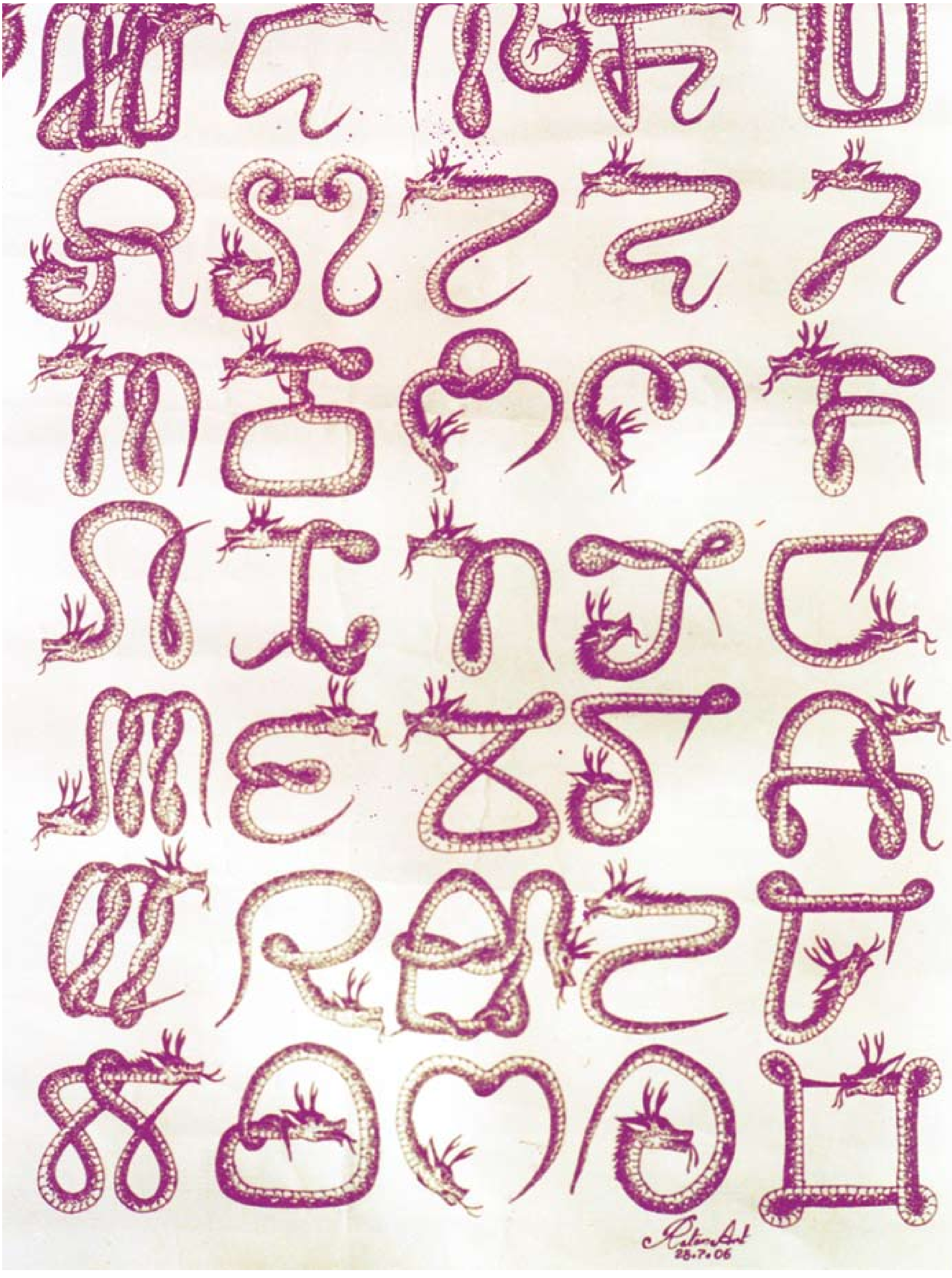

मणिपुरी (मिथै) लिपि की सुलेखन का एक नमूना

राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन
वार्षिक रिपोर्ट 2010-2011

राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन पाण्डुलिपि की विशाल निधि में निहित ज्ञान की विरासत को सुरक्षित रखने के लिए राष्ट्रीय स्तर पर किया गया विश्व में प्रथम समेकित प्रयास है। दर्शन, विज्ञान, साहित्य, कला और भारतीय बहु आस्थावादी व्यवस्था में सदियों से संचित ज्ञान को धारण करने वाली पाण्डुलिपियाँ केवल ऐतिहासिक दस्तावेज ही नहीं है, बल्कि इससे परे भी बहुत कुछ हैं। ये चिंतकों की अनेक पीढ़ियों की संचित प्रज्ञा और अनुभव का प्रतिनिधित्व करती हैं। सन् 2003 में पर्यटन और संस्कृति मंत्रालय ने राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन की स्थापना की थी। इसका उद्देश्य भारत की पाण्डुलिपियों का प्रलेखन, संरक्षण और परिरक्षण करने के साथ-साथ इसमें निहित ज्ञान का सांख्यिकीकरण और प्रकाशन के माध्यम से प्रसार करना है।

राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन सम्पूर्ण देश में स्थापित विभिन्न प्रकार के केन्द्रों के माध्यम के कार्य करता है। श्रेणी के अनुसार केन्द्रों की संख्या निम्नलिखित हैं -

पाण्डुलिपि संसाधन केन्द्र (एम.आर.सी.) - 54
पाण्डुलिपि संरक्षण केन्द्र (एम.सी.सी.) - 49
पाण्डुलिपि सहयोगी केन्द्र (एम.पी.सी.) - 42
पाण्डुलिपि संरक्षण सहयोगी केन्द्र (एम.सी.पी.सी.) - 300

उद्देश्य

राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन की स्थापना के उद्देश्य का उल्लेख करते समय यह कहना गलत होगा कि इसका उद्देश्य भारत और विदेश में स्थित सभी पाण्डुलिपियों की केवल पहचान, गणना, परिरक्षण और वर्णन करना है। इन कार्यों के लिए दायित्व लेने के पीछे उद्देश्य इन तक पहुँच को आसान बनाना, सांस्कृतिक विरासत के प्रति जागरूकता बढ़ाना और शैक्षणिक तथा अनुसंधान कार्य एवं आजीवन अध्ययन हेतु इसका उपयोग करना है। विकास उद्देश्य (उद्देश्य के चरण) को निम्नलिखित श्रेणियों में वर्गीकृत किया जा सकता है।

- **उद्देश्य 1:** प्रशिक्षण, जागरूकता और वित्तीय सहयोग के माध्यम से पाण्डुलिपियों के संरक्षण और परिरक्षण की सुविधा उपलब्ध कराना।
- **उद्देश्य 2:** जहाँ कहीं भी पाण्डुलिपि उपलब्ध हो, उनका प्रलेखन और सूचीकरण करना, उनके संबंध में सटीक और अद्यतन सूचना रखना तथा जिन शर्तों पर उनसे संपर्क किया जा सकता है।
- **उद्देश्य 3:** प्रकाशन और इलेक्ट्रॉनिक, दोनों रूपों में पाण्डुलिपियों को उपलब्ध कराकर उन तक आसानी से पहुँच को बढ़ावा देना।
- **उद्देश्य 4:** भारतीय भाषा और पाण्डुलिपि शास्त्र के अध्ययन में शोध और अध्येतावृत्ति को बढ़ावा देना।
- **उद्देश्य 5:** राष्ट्रीय पाण्डुलिपि पुस्तकालय का निर्माण करना।

कार्यक्रम और गतिविधियां

1. प्रलेखन

- पाण्डुलिपि के राष्ट्रीय इलेक्ट्रॉनिक डाटाबेस को संपन्न बनाना।
- पाण्डुलिपि का राष्ट्रीय सर्वेक्षण तथा सर्वेक्षणोत्तर कार्यक्रम ।
- पाण्डुलिपि संसाधन केन्द्रों (एम.आर.सी.) का विस्तार और सशक्तिकरण।
- पाण्डुलिपि सहयोगी केन्द्रों (एम.पी.सी.) को सहयोग।

2. पाण्डुलिपि संरक्षण और प्रशिक्षण

- एम.सी.सी. नेटवर्क में विस्तार।
- पाण्डुलिपि संरक्षण सहयोगी केन्द्रों (एम.सी.पी.सी.) की स्थापना।
- संरक्षणों के राष्ट्रीय संसाधन दल की स्थापना।
- शोध कार्यक्रमों को बढ़ावा।
- निरोधात्मक सरंक्षण में प्रशिक्षण का समावेश।
- दुर्लभ सहयोग सामग्रियों के संरक्षण हेतु कार्यशाला।
- एम.सी.पी.सी. कार्यशाला।
- क्षेत्र प्रयोगशालाओं की स्थापना।
- एम.आर.सी. में पाण्डुलिपि संकलन का संरक्षण।
- सर्वेक्षण में तथा परवर्ती सर्वेक्षण सहयोग।
- सांख्यिकीकरण में सहयोग।

3. पाण्डुलिपि शास्त्र और पुरातत्वलेखन में प्रशिक्षण

- पाण्डुलिपि शास्त्र और पुरातत्वलेखन में प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन।
- प्रशिक्षित मानव संसाधन का निर्माण।
- भारतीय विश्वविद्यालयों में पाण्डुलिपि शास्त्र पाठ्यक्रम को लागू करना।
- पाण्डुलिपियों का विवेचनात्मक संस्करण जारी करना।

4. सांख्यिकीकरण के माध्यम से प्रलेखन

- परवर्ती उपयोग हेतु मूल पाण्डुलिपियों का परिरक्षण।
- मूल प्रतियों में छेड़छाड़ किए बिना अध्येताओं और शोधकर्ताओं तक उनकी पहुंच और उनके उपयोग को प्रोत्साहित करना।
- देश के विभिन्न संकलनों में परिरक्षित पाण्डुलिपियों की सांख्यिकीकृत प्रतियों के संसाधन आधार के रूप में डिजिटल पुस्तकालय की स्थापना।
- पाण्डुलिपि के सांख्यिकीकरण हेतु मानकों और प्रक्रियाओं का निर्माण।

5. शोध और प्रकाशन

- **तत्त्वबोध:** व्याख्यानों के संकलन का प्रकाशन।
- **समीक्षिका:** संगोष्ठी आलेखों के संकलन का प्रकाशन।
- **संरक्षिका:** संरक्षण संगोष्ठी आलेखों के संकलन का प्रकाशन।
- **कृतिबोध:** विवेचनात्मक संस्करणों का प्रकाशन।
- **प्रकाशिका:** दुर्लभ पाठों का प्रकाशन।
- **कृति रक्षण:** राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन की द्वि-मासिक पत्रिका।

6. जन सम्पर्क कार्यक्रम

- सार्वजनिक व्याख्यान
- संगोष्ठी
- प्रदर्शनी आदि।

कार्यक्रम निष्पादन
वर्ष 2010-2011

(सार-संक्षेप वर्ष)

- आन्ध्र प्रदेश, गुजरात और त्रिपुरा में परवर्ती सर्वेक्षण कार्यक्रम जारी हैं।
- राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन ने 31 मार्च, 2011 तक 2,11,053 पाण्डुलिपियों के संबंध में सूचना संगृहीत की और 32, 79, 028 पाण्डुलिपियों के संबंध में इसे जानकारी प्राप्त हुई है। वर्ष 2010-2011के दौरान रा.पा.मि. के वेब पर 1,84000 अतिरिक्त आंकड़े डाले गए। रा.पा.मि. के वेबसाइट www.namami.org पर लगभग 20 लाख आंकड़े उपलब्ध हैं।
- पाण्डुलिपि संरक्षण हेतु 21 कार्यशालाएं आयोजित की गई हैं।
- 31 मार्च, 2011 तक 70,053 पाण्डुलिपियों (93,97,422 पृष्ठों) का सांख्यिकीकरण पूरा किया गया है। रा.पा.मि. के अधीन पाण्डुलिपियों के डिजिटल इमेज वाली 58,045 डी.वी.डी. उपलब्ध हैं।
- तत्त्वबोध श्रृंखला के अंतर्गत 21 (4 दिल्ली में और 17 दिल्ली से बाहर) व्याख्यान आयोजित किए गए।
- विभिन्न विषयों पर राष्ट्रीय स्तर की आठ संगोष्ठियाँ आयोजित की गई हैं।
- पाण्डुलिपि शास्त्र और पुरातत्वलेखन पर 12 कार्यशालाएं (7 आधारभूत स्तर के और 5 उच्च स्तरीय) आयोजित की गई।
- वर्ष 2010-2011 के दौरान संरक्षिका-2, समीक्षिक-4 और कृतिबोध-2 प्रकाशित किए गए।
- विश्व संस्कृत पुस्तक मेला के दौरान 7-10 जनवरी, 2011 के दौरान एक प्रदर्शनी आयोजित की गई।
- 'अभिलेखागार सामग्री के सांख्कीकरण हेतु दिशानिर्देश' प्रकाशित की गई।
- उपर्युक्त गतिविधियों पर कुल 10.5 करोड़ रूपए का व्यय किया गया।

25 मई, 2010 को नागार्जुन बौद्ध संस्थान, गोरखपुर (एम.सी.सी.) में आयोजित पाण्डुलिपि प्रदर्शनी का दृश्य

मणिपुर में पाण्डुलिपि प्रलेखन : एम.आर.सी., मणिपुर राज्य अभिलेखागार के कार्यकर्ता कार्य में संलग्न

सर्वेक्षण और परवर्ती सर्वेक्षण

पाण्डुलिपियों के लिए राष्ट्रीय सर्वेक्षण

देश के विभिन्न राज्यों के प्रत्येक जिले में पाण्डुलिपियों का पता लगाने के लिए राष्ट्रीय सर्वेक्षण आयोजित किया जाता है। प्रत्येक जिले में 5 आबंटित दिनों के दौरान 50 प्रशिक्षित कार्यकर्ता अपने क्षेत्र में मानक प्रश्नावली प्रपत्र और पाण्डुलिपि आँकड़ा पत्र में पाण्डुलिपियों के खोज करते हैं, पता लगाते हैं और उनका प्रलेखन करते हैं।

उद्देश्य

- अप्रेलेखित निजी संकलनों पर विशेष जोर देते हुए यथासंभव अधिकाधिक पाण्डुलिपियों की पहचान करना।
- गाँव, जिले, राज्य और अंततः राष्ट्रीय स्तर पर पाण्डुलिपियों की खोज को आपस में जोड़कर जमीनी स्तर तक पहुँच कायम करना।
- गाँव, नगर और जिले में लोगों के मन में पाण्डुलिपियों के प्रति रूचि और जारूकता पैदा करना।
- प्रत्येक राज्य में आमजन तक पहुंचने और उनके साथ काम करने के लिए आधारभूत संरचना हेतु राज्य और जिला प्रशासन के साथ समन्वय।
- मौलिक संरक्षण सूचना और प्रशिक्षण सहयोगियों को प्रोत्साहन।
- स्थानीय पाण्डुलिपि संपदा की खोज और प्रलेखन के लिए स्थानीय लोगों तथा साहित्य, भाषा विज्ञान, इतिहास और अन्य विषय के छात्रों को शामिल करना।

तिब्बती साहित्य पुस्तकालय और अभिलेखागार, धर्मशाला (हिमाचल प्रदेश) में पाण्डुलिपि संग्रह

- प्रत्येक जिला, प्रत्येक राज्य और अंततः संपूर्ण देश का पाण्डुलिपि मानचित्र तैयार करना।

रणनीति

- मिशन राज्य के संस्कृति विभाग, अभिलेखागार और संग्रहालय से संपर्क करता है और उस राज्य में सर्वेक्षण कार्य के समन्वय के लिए समन्वयकर्ता के संबंध में निर्णय लेता है।
- प्रत्येक जिले में दो समन्वयकर्ताओं का चयन किया जाता है – जिनमें एक व्यक्ति शिक्षा जगत से और दूसरे स्थानीय प्रशासन से।
- प्रत्येक जिले में पाण्डुलिपियों का पता लगाने के लिए अधिकतम 50 सर्वेक्षकों का चयन किया जाता है।
- जिला समन्वकर्ताओं द्वारा उस जिले का सर्वेक्षण पूर्व मानचित्र तैयार किया जाता है।
- समाचार पत्रों में विज्ञापन तथा जन सभाओं के माध्यम से सम्पर्क अभियान और पंचायत, स्थानीय सरकार एवं गणमान्य व्यक्तियों के साथ सम्पर्क करना।
- कम से कम दो अलग प्रशिक्षण सत्रों में प्रश्नावली और पाण्डुलिपि आँकड़ा पत्र भरने के लिए जिला समन्वयकर्ताओं और सर्वेक्षकों का प्रशिक्षण।
- सर्वेक्षण पूर्व मापन के आधार पर जिला समन्वयकर्ताओं द्वारा सर्वेक्षकों के लिए लक्ष्य निर्धारण।
- प्रत्येक जिले में पाण्डुलिपियों और संग्रहों का पता लगाने के लिए 50 सर्वेक्षकों के चयन के बाद पूरे पांच दिनों का सर्वेक्षण।

पाण्डुलिपि सर्वेक्षण पश्चात् कार्यक्रम

राष्ट्रीय सर्वेक्षण के पश्चात् राज्यों में प्रलेखन कार्य में गति लाने के लिए सर्वेक्षण पश्चात् कार्यक्रम एक विशेष अभियान है। राष्ट्रीय सर्वेक्षण राज्यों में पाण्डुलिपि पहचान करने का एक उपाय है और परवर्ती सर्वेक्षण उन पाण्डुलिपियों के प्रलेखन का आयोजन है। इस अवधि के दौरान प्रशिक्षित विद्वान पहचान किए गए पाण्डुलिपि संग्रहों तक पाण्डुलिपि प्रलेखन और राष्ट्रीय सर्वेक्षण के दौरान छूट गए संग्रहों का पता लगाने के लिए जाते हैं।

सर्वेक्षण पश्चात् कार्यक्रम के दौरान प्रलेखक राष्ट्रीय सर्वेक्षण के दौरान पता किए गए प्रत्येक पाण्डुलिपि संग्रहों तक जाते हैं और राष्ट्रीय इलेक्ट्रॉनिक डाटाबेस के लिए प्रत्येक पाण्डुलिपि का उचित प्रलेखन सुनिश्चित करते हैं। सर्वेक्षण पश्चात् कार्यक्रम में सर्वेक्षण के दौरान प्राप्त सूचनाओं का उपयोग किया जाता है और जिले के लोगों तथा संस्थाओं (अक्सर जिनकी पहचान सर्वेक्षण के दौरान की जाती है।) का सहयोग प्राप्त किया जाता है। साथ ही जिले में किए गए राष्ट्रीय सर्वेक्षण से प्राप्त लाभ को मूर्त रूप दिया जाता है।

उद्देश्य

- सर्वेक्षण के दौरान छूट गए प्रत्येक पाण्डुलिपि संग्रह तक पुनः पहुंचकर राष्ट्रीय पाण्डुलिपि सर्वेक्षण पर अगली कार्रवाई करना।
- प्रत्येक जिले, राज्य और इस प्रकार देश में स्थित प्रत्येक पाण्डुलिपि संग्रह की प्रत्येक पाण्डुलिपि का प्रलेखन करना।

प्रविधि

- निम्नलिखित के संदर्भ में राष्ट्रीय सर्वेक्षण के माध्यम से संग्रहीत सूचना का विश्लेषणः
  - प्रत्येक जिले में पाण्डुलिपि संग्रहों की संख्या
  - प्रत्येक संग्रह और जिले में पाण्डुलिपियों की कुल संख्या
  - उस राज्य में जिले की संख्या
- निम्नलिखित के संदर्भ में पाण्डुलिपि प्रलेखन हेतु अपेक्षित संसाधनों को परिभाषित करनाः
  - प्रत्येक जिले में प्रलेखों और सर्वेक्षणों की संख्या
  - प्रत्येक जिले और राज्य में कार्य पूरा करने के लिए अपेक्षित समय
  - प्रत्येक जिले में समन्वय कार्य के लिए संभावित पाण्डुलिपि सहयोगी केंद्रों (एम.पी.सी.) की पहचान करना
- राज्य में कार्य में समन्वय करने के लिए राज्य स्तरीय एम.आर.सी./सहयोगी संस्थान/एम.पी.सी. की पहचान करना।
- राज्य स्तरीय समन्वय संस्थान द्वारा आवश्यकतानुसार योग्य प्रलेखकों और जिला समन्वकर्ताओं की पहचान करना।
- प्रलेखकों के लिए गहन प्रशिक्षण कार्यशालाओं का आयोजन करना जिन्हें मिशन निम्नलिखित उद्देश्य से प्रशिक्षित करता हैः
  - पाण्डुलिपि आंकड़ा पत्र और प्रश्नावली को भरने के लिए प्रलेखकों को प्रशिक्षित कराना।
  - क्षेत्र में संभावित समस्याओं से प्रलेखकों को परिचित कराना।
- प्रलेखकों को पाण्डुलिपि संग्रहों की सूची उपलब्ध करवाना
- उन प्रलेखकों द्वारा वास्तविक आंकड़ा संकलन जो पाण्डुलिपि आंकड़ा पत्र अपने जिला समन्वकर्ता अथवा राज्य-स्तरीय समन्वय संस्थान के पास प्रस्तुत करते हैं।

- इसके बाद राज्य स्तरीय समन्वय संस्थान अथवा मिशन कार्यालय दिल्ली में मैनुस ग्रंथावली सॉफ्टवेयर का उपयोग कर आँकड़ों को कंप्यूटरीकृत किया जाता है।

बिहार (10 जिले में), उड़ीसा, तमिलनाडु, कर्नाटक और केरल में सर्वेक्षण पश्चात् कार्यक्रम को पूरा किया जा चुका है। वर्तमान में सर्वेक्षण पश्चात् कार्यक्रम निम्नलिखित स्थानों पर जारी है:

आन्ध्र प्रदेश

1. पश्चिम गोदावरी
2. करीमनगर
3. अदिलाबाद
4. महबूब नगर
5. विजयनगरम
6. चितौड़
7. निज़ामाबाद
8. वारंगल
9. श्रीकाकुलम
10. विशाखापटनम
11. कर्नूल

गुजरात

1. मेहसाणा
2. राधानपुर
3. दीसा
4. पाटनपुर
5. बनासकथा

त्रिपुरा

1. उत्तर त्रिपुरा
2. दक्षिण त्रिपुरा
3. धलाई

राष्ट्रीय सर्वेक्षण के दौरान मिशन ने गुजरात में लगभग 20 लाख पाण्डुलिपियों की पहचान की है। आन्ध्र प्रदेश और त्रिपुरा में सर्वेक्षण पश्चात् कार्यक्रम के माध्यम से पाण्डुलिपि प्रलेखन की प्रक्रिया चल रही है।

आन्ध्र प्रदेश: राज्य में 15 अक्टूबर, 2009 को आन्ध्रप्रदेश सरकार के माननीय आई सह पी.आर., सिनेमाटोग्राफी, एफ.डी.सी एवं पर्यटन, पुरातत्त्व, संग्रहालय, अभिलेखागार तथा संस्कृति मंत्री ने परवर्ती सर्वेक्षण कार्यक्रम का उद्घाटन किया। प्राच्य पाण्डुलिपि पुस्तकालय और शोध संस्थान को सम्पूर्ण राज्य में प्रेलखन कार्य संचालित करने का दायित्व दिया गया है।

राजस्थान: राजस्थान राज्य अभिलेखागार ने राज्य समन्वय एजेंसी के रूप में राज्य में परवर्ती सर्वेक्षण कार्यक्रम को संचालित करने का दायित्व लिया है। राज्य के 20 जिलों में लगभग 7.5 लाख पाण्डुलिपियों का प्रलेखन किया जाएगा। इस कार्यक्रम के कार्यान्वयन के लिए राजस्थान राज्य के मुख्य सचिव के साथ एक उच्च स्तरीय बैठक संपन्न हुई है।

गुजरात: एल.डी. भारतविद्या संस्थान, अहमदाबाद को राज्य समन्वय एजेंसी के रूप में चुना गया है। इस कार्यक्रम के दौरान लगभग 5 लाख पाण्डुलिपियों का प्रलेखन किया जाएगा। 21 जनवरी, 2010 को एल.डी. भारतविद्या संस्थान में जिला समन्वयकर्ताओं के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया था।

त्रिपुरा: राज्य में सर्वेक्षण पश्चात् कार्यक्रम के अंतर्गत प्रलेखन का दायित्व त्रिपुरा विश्वविद्यालय को दिया गया है। प्रो. सत्यदेव पोद्दार, प्रो. तथा विभागाध्यक्ष, इतिहास को राज्य समन्वयकर्ता के रूप में नियुक्त किया गया है।

प्रलेखन

भारत में एक करोड़ पाण्डुलिपियों के विद्यमान होने का अनुमान है। इस दृष्टि से भारत में पाण्डुलिपि का कदाचित् सबसे बड़ा भंडार है। हालांकि इस विपुल संपदा के अधिकांश अंश का प्रलेखन इस तरह से नहीं किया गया है कि उसका विद्वान और शोधकर्ता सहज रूप से उपयोग कर सकें। अक्सर इन पाण्डुलिपियों की जानकारी नहीं है अथवा इन तक लोगों की पहुंच नहीं है। इससे अतीत की ज्ञान-संस्कृति और वर्तमान के बीच एक अंतराल उत्पन्न हो गया है।

पाण्डुलिपियों के राष्ट्रीय सूचीकरण के लिए रा.पा.मि. भारत में विस्तृत पाण्डुलिपि प्रलेखन कार्य में संलग्न है। लगभग 20 लाख पाण्डुलिपियों के संबंध में सूचना रा.पा.मि. के वेबसाइट www.namami.org पर पहले से उपलब्ध है। इस इलेक्ट्रॉनिक सूची में संपूर्ण देश की संस्थानिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, शैक्षणिक और निजी संकलनों की पाण्डुलिपियों के संबंध में सूचना उपलब्ध है।

1 अप्रैल, 2003 से 31 मार्च, 2011 तक पाण्डुलिपियों का प्रलेखन

वर्ष	प्राप्त आँकड़े	अनुरक्षित आँकड़े
2003-2004	88,569	88,569
2004-2005	2,02,563	2,91,132
2005-2006	7,70,111	10,61,243
2006-2007	7,03,196	17,64,439
2007-2008	8,13,151	25,77,590
2008-2009	2,76,271	28,53,561
2009-2010	2,14,114	30,67,975
2010-2011	2,11,053	32,79,028

वर्ष 2010-2011 में कार्य निष्पादन

कुल प्राप्त इलेक्ट्रॉनिक आँकड़े	1,91,000
कुल प्राप्त गैर इलेक्ट्रॉनिक आँकड़े	9,20,000
कुल संपादित आँकड़े	3,10,000
वेबसाइट पर जारी कुल आँकड़े*	1,84,000

* वेबसाइट पर डालने के लिए 50,000 अतिरिक्त आँकड़े तैयार हैं और 85,000 अतिरिक्त आंकड़ों का संपादन किया जा चुका है।

उद्देश्य

- संस्थाओं और निजी संग्रहों में उपलब्ध अज्ञात पाण्डुलिपि भंडार का पता लगाना।
- देश के अनुमानित एक करोड़ पाण्डुलिपियों का प्रलेखन
- पाण्डुलिपियों के संबंध में सूचना संकलित करने तथा सजगता लाने के लिए जमीनी स्तर पर सम्पर्क करना
- पाण्डुलिपियों की इलेक्ट्रॉनिक सूची निर्मित्त कर उसे इंटरनेट पर उपलब्ध करवाना

प्रविधि

- ज्ञात-अज्ञात, निजी-सार्वजनिक, सूचीबद्ध-गैर सूचीबद्ध सभी प्रकार की पाण्डुलिपियों की पहचान करने के लिए प्रत्येक राज्य और संघ राज्य क्षेत्र में राष्ट्रीय सर्वेक्षण आयोजित करना।
- स्वशासकीय निकाय एवं आम जन सहित राज्य और जिला प्रशासन के साथ वृहतर स्तर पर समन्वय करना
- पाण्डुलिपि आंकड़ा पत्र में प्रत्येक पाण्डुलिपि के प्रलेखन हेतु सर्वेक्षण पश्चात् व्यापक कार्यक्रम संचालित करना

कुन्दकुन्द ज्ञानपीठ इन्दौर में पाण्डुलिपि प्रदर्शनी

- पाण्डुलिपि संसाधन केंद्रों (एम.आर.सी.) से आँकड़े प्राप्त करना
- आँकड़ों की छँटनी, जांच और उन्हें व्यवस्थित कर डाटाबेस में उनकी प्रविष्टि करना।
- निर्धारित प्रश्नावली और पाण्डुलिपि आँकड़ा प्रपत्र के माध्यम से भारत के बाहर भारतीय पाण्डुलिपियों के संकलन के प्रलेखन को प्रोत्साहन

राष्ट्रीय पाण्डुलिपि इलेक्ट्रॉनिक डाटाबेस

राष्ट्रीय पाण्डुलिपि इलेक्ट्रॉनिक डाटाबेस भारतीय पाण्डुलिपियों का अपने तरह का पहला ऑनलाइन सूचीकरण है। ऐसा विभिन्न संस्थाओं द्वारा अतीत में पाण्डुलिपि प्रलेखन के विभिन्न प्रयासों के कारण संभव हुआ। मिशन के आंकड़े पत्र के माध्यम से प्रलेखित प्रत्येक पाण्डुलिपि से जुड़ी सूचना के विभिन्न पहलू सूची में अंकित होते हैं, यथा- शीर्षक, टिप्पणी, भाषा, लिपि, विषय, उपलब्धता स्थान, पृष्ठों की संख्या, चित्र, लेखन, तिथि आदि। समेकित पोर्टल के रूप में इसे लेखक, विषय जैसी श्रेणियों से खोजा जा सकता है।

भारत के संपन्न बौद्धिक विरासत के प्रति लोगों को संवेदनशील बनाने के साथ-साथ डाटाबेस भावी पीढ़ी के लिए पाण्डुलिपियों को संरक्षित करने, परिरक्षित करने, सांख्यिकी कृत करने, उन तक पहुंच को बढ़ावा देने और सुरक्षित रखने की दिशा में भविष्य में नीति निर्माण करने को प्रोत्साहित करेगा।

प्रारूप

सूचना संग्रहीत करने के बाद एम.आर.सी. अथवा एम.पी.सी. पर उसकी प्रविष्टि मैनुस ग्रंथावली सॉफ्टवेयर में की जाती है और अंततः उस सूचना को मिशन के पास भेजा जाता है जिसकी विभिन्न क्षेत्र के विद्वान जांच करते हैं।

23 मई 2010 को थुचंन मैमोरियल ट्रास्ट, तिरूर के द्वारा आयोजित वार्षिकोत्सव 2010

26 दिसंबर, 2010 को दत्त मंदिर, शिकारीपुर, कर्नाटक में आयोजित पाण्डुलिपि दिवस कार्यक्रम के अवसर पर मंच पर गणमान्य व्यक्ति

एम.आर.सी. का योगदान

क्र.सं	एम.आर.सी. के नाम	31 मार्च 2010 तक कुल आँकड़े	2010-11 में प्राप्त आँकड़े	31 मार्च 2011 तक प्राप्त कुल आँकड़े
1.	ए जी पी ओ एम एल हैदराबाद, आंध्र प्रदेश (एम.आर.सी.)	22,961	1,973	24,934
2.	अखिल भारतीय संस्कृत परिषद्, महात्मा गाँधी मार्ग, हजरतगंज, लखनऊ, उ.प्र. (एम.आर.सी.)	0	2,500	2,500
3.	आनंद आश्रम संस्था पुणे (एम.आर.सी.)	42,998	6,035	49,033
4.	भाई वीर सिंह साहित्य सदन (नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ पंजाब स्टडीज), गोल मार्केट, नयी दिल्ली (एम.आर.सी.)	214	0	214
5.	भंडारकर प्राच्य शोध संस्थान, दक्कन जिमखाना पुणे, महाराष्ट्र (एम.आर.सी.)	55,500	13,377	68,877
6.	भोगीलाल लहरचंद भारत विद्या संस्थान, नई दिल्ली (नया)	0	1,363	1,363
7.	केन्द्रीय बौद्ध अध्ययन संस्थान, लेह (लद्दाख) (एम.आर.सी.)	8,024	1,217	9,241
8.	संस्कृत विभाग, एच.एन.बी. गढ़वाल विश्वविद्यालय, उत्तरांचल (एम.आर.सी.)	741	0	741
9.	तमिल विभाग, मद्रास विश्वविद्यालय, तमिलनाडु (एम.आर.सी.)	5,222	0	5,222
10.	राज्य पुरातत्त्व, अभिलेखागार एवं संग्रहालय निदेशालय	26,331	1,806	28,137
11.	फ्रांसीसी भारतविद्या संस्थान, पांडिचेरी	35,495	1,999	37,494
12.	गुरु चरण महाविद्यालय सिल्चर, असम	602	0	602
13.	एच.एस.गौड़ वि.वि., गौड़ नगर, सागर, म.प्र. (एम.आर.सी.)	33,983	16,240	50,223
14.	हिमाचल कला, संस्कृति एवं भाषा अकादमी, शिमला (एम.आर.सी.)	46,498	13,881	60,379
15.	प्राच्य अध्ययन संस्थान (शिव-शक्ति) महर्षि कार्वे रोड, नौपाड़ा, थाने वेस्ट, महाराष्ट्र	2,800	0	2,800
16.	कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय, दरभंगा, बिहार (एम.आर.सी.)	10,403	0	10,403
17.	कन्नड विश्वविद्यालय, हम्पी, विद्यारण्य, हॉस्पेट तालुका, जिला - बेल्लाड़ी, कर्नाटक (एम.आर.सी.)	50,718	6,059	56,777

क्र.सं	एम.आर.सी. के नाम	31 मार्च 2010 तक कुल आँकड़े	2010-11 में प्राप्त आँकड़े	31 मार्च 2011 तक प्राप्त कुल आँकड़े
18.	कविकुलगुरु कालिदास विश्वविद्यालय, बाघला भवन सितलबाड़ी, मांडा रोड, रामटेक, म.प्र. (एम.आर.सी.)	6,143	0	6,143
19.	कलादि संग्रहालय और इतिहास शोध, कलादि, सागर तालुका, जिला - सिमोगा, कर्नाटक (एम.आर.सी.)	14,808	4,128	18,936
20.	खुदाबख़्श ओरिएन्टल पब्लिक लाइब्रेरी, अशोक राजपथ, पटना, बिहार (एम.आर.सी.)	23,144	0	23,144
21.	कृष्णकांत हांडिक पुस्तकालय, गुवाहाटी विश्वविद्यालय, गोपीनाथ बारदोलाई नगर, गुवाहाटी, असम, (एम.आर.सी.)	25,513	0	25,513
22.	कुन्दकुन्द ज्ञानपीठ, 584, एम.जी. रोड, तुकोगंज, इन्दौर डी.-114, सुदामा नगर, इंदौर, मध्यप्रदेश, (एम.आर.सी.)	27,807	4,358	32,165
23.	कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय कुरुक्षेत्र, हरियाणा (एम.आर.सी.)	16,658	10,765	27,423
24.	लालभाई दलपतभाई भारतविद्या संस्थान, अहमदाबाद, गुजरात (एम.आर.सी.)	64,740	0	64,740
25.	तिब्बती साहित्य पुस्तकालय और अभिलेखागार ग्नचेनकिस्यांग, धर्मशाला, हिमाचल प्रदेश (एम.आर.सी.)	95,898	100	95,998
26.	मणिपुर राज्य अभिलेखागार वाशिंगटन लिकोई, इम्फाल, मणिपुर (एम.आर.सी.)	37,750	751	38, 501
27.	महाभारत संशोधन प्रतिष्ठान, हनुमंत नगर, बंगलुरु, कर्नाटक (एम.आर.सी.)	59,886	0	59,886
28.	नव नालंदा महाविहार, संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार, नालंदा, बिहार (एम.आर.सी.)	20,000	2,164	22,164
29.	राष्ट्रीय प्राकृत अध्ययन एवं शोध संस्थान श्रावणबेलगोला, जिला - हासन, कर्नाटक (एम.आर.सी.)	48,749	12,893	61,542
30.	ओ.आर.आई. श्रीवेंकटेश्वर विश्वविद्यालय, तिरुपति, आंध्रप्रदेश (एम.आर.सी.)	33,543	0	33,543
31.	ओ.आर.आई., मैसूर विश्वविद्यालय कौटिल्य सर्कल, मैसूर, कर्नाटक (एम.आर.सी.)	74,139	4,002	78,141
32.	ओ.आर.आई. एवं पाण्डुलिपि पुस्तकालय केरल विश्वविद्यालय, तिरूअनंतपुरम, केरल (एम.आर.सी.)	74,239	1,441	75,680
33.	उड़ीसा राज्य संग्रहालय, भुवनेश्वर, उड़ीसा (एम.आर.सी.)	2,90,774	0	2,90,774
34.	राजस्थान प्राच्य शोध संस्थान, पी.डब्ल्यू.डी. रोड जोधपुर राजस्थान (एम.आर.सी.)	1,76,954	0	1,76, 954
35.	रामपुर राजा पुस्तकालय, रामपुर	43,300	0	43,300

क्र.सं	एम.आर.सी. के नाम	31 मार्च 2010 तक कुल आँकड़े	2010-11 में प्राप्त आँकड़े	31 मार्च 2011 तक प्राप्त कुल आँकड़े
36.	सलारजंग संग्रहालय, म्युजियम रोड हैदराबाद, आन्ध्र प्रदेश (एम.आर.सी.)	40,845	0	40,845
37.	संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय, वनारस, उत्तरप्रदेश (एम.आर.सी.)	45,320	6,010	51,330
38.	सरस्वती, सरस्वती विहार, भद्रक, उड़ीसा (एम.आर.सी.)	1,08,861	0	1,08,861
39.	सिंधिया प्राच्य शोध संस्थान, उज्जैन	38,840	0	38,840
40.	शिवाजी विश्वविद्यालय कोल्हापुर महाराष्ट्र (एम.आर.सी.)	6,517	0	6,517
41.	श्रीदेव कुमार जैन प्राच्य शोध संस्थान, देवस्थान, महादेव रोड, आरा, बिहार (एम.आर.सी.)	1,17,114	0	1,17,114
42.	श्री सत श्रुत प्रभान न्यास, जयपुर, राजस्थान (एम.आर.सी.)	45,008	13,993	59,001
43.	एस.सी.एस.वी.एम.वी. कांचिपुरम, तमिलनाडु (एम.आर.सी.)	0	0	39,436
44.	तंजौर महाराज सरफोजी सरस्वती महल पुस्तकालय, तंजौर, तमिलनाडु (एम.आर.सी.)	35,914	0	35,914
45.	थुंचन स्मृति न्यास, थुंचन परम्बा, जिला - मामलपुरम, केरल (एम.आर.सी.)	1,36,140	7,830	1,43,970
46.	पाण्डुलिपि पुस्तकालय, कलकत्ता विश्वविद्यालय कोलकाता (एम.आर.सी.)	80,255	12,497	92,752
47.	उत्तरांचल संस्कृत अकादमी, हरिद्वार, उत्तराखंड (एम.आर.सी.)	12,324	13,603	25,927
48.	वी.बी.आई.एस.आई.एस., होशियारपुर (एम.आर.सी.)	24,816	1,406	26,206
49.	वृन्दावन शोध संस्थान, उ.प्र. (एम.आर.सी.)	42,201	3,005	45,206

संरक्षण

भारत में मूर्त और अमूर्त, दोनों प्रकार की विरासत हैं। पाण्डुलिपि, चित्र और पुस्तकें हमारी मूर्त विरासत के अंग हैं। ये न केवल हमारी जीवन शैली, धर्म, परंपरा, संस्कृति, सभ्यता, प्रौद्योगिकी, विज्ञान और ऐतिहासिक संदर्भ के लिए उपयोगी हैं अपितु पूर्वजों द्वारा प्रदत्त हमारी पृष्ठभूमि को भी संबल प्रदान करते हैं।

सजगता और विशेषज्ञता को प्रोत्साहित करके सांस्कृतिक सम्पदा का संरक्षण करना सांस्कृतिक विरासत के क्षेत्र से संबंधित सभी के लिए ध्यान देने योग्य विषय है। पाण्डुलिपि संरक्षण केन्द्रों (एम.सी.सी.) के अपने नेटवर्क के माध्यम से रा.पा.मि. पाण्डुलिपि संरक्षण में विशेषज्ञता का राष्ट्रीय आधार तैयार करने के लिए देश भर में कार्यशालाओं और प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन करता है।

इन कार्यशालाओं में पाण्डुलिपि भंडारों, पाण्डुलिपि के व्यक्तिगत संकलनों, एम.आर.सी., एम.सी.पी.सी., एम.सी.सी. और अन्य संस्थानों में पाण्डुलिपियों के निवारक और उपचारक संरक्षण में संलग्न कार्मिकों को प्रशिक्षण दिया जाता है।

पाण्डुलिपि संरक्षण

किसी क्षतिग्रस्त अथवा सुरक्षित पाण्डुलिपि या पाण्डुलिपि संकलनों के जीवन को बढ़ाने की दिशा में प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष गतिविधि को संरक्षण कहते हैं। संरक्षण दो प्रकार के हो सकते हैं – निवारक और उपचारात्मक।

निवारक संरक्षणः इसके अंतर्गत पाण्डुलिपि के क्षतिग्रस्त होने के भावी जोखिम को कम किया जाता है। इसके तहत

उड़ीसा राज्य संग्रहालय, भुवनेश्वर में विभिन्न आकार-प्रकार की पाण्डुलिपियाँ

27-31 दिसंबर, 2010 को अब्रोल पाण्डुलिपि और दुर्लभ पुस्तक पुस्तकालय, जम्मू-कश्मीर में आयोजित निवारक संरक्षण कार्यशाला का दृश्य

पाण्डुलिपि भंडार क्षेत्र के तापमान और आर्द्रता को नियंत्रित रखा जाता है और पाण्डुलिपि भंडार का नियमित निरीक्षण किया जाता है।

उपचारात्मक संरक्षण: पाण्डुलिपियों के त्वरित क्षय को रोकने के लिए किसी भी प्रत्यक्ष कार्रवाई को उपचारात्मक संरक्षण कहा जाता है। उदाहरण - कीट लगी हुई पाण्डुलिपियों का धूम्रीकरण।

संरक्षकों का सुरक्षित दस्ता

संरक्षण गतिविधियों के विस्तार और उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए मिशन में कार्यशाला के माध्यम से निवारक संरक्षण प्रारंभ किया है। एम.आर.सी. के सहयोग से आयोजित इस तरह की कार्यशालाओं में खास एम.आर.सी. के दायरे में आने वाली संस्थाओं और पाण्डुलिपि भंडारों की पाण्डुलिपियों का संरक्षण किया जाता है। इस तरह की कार्यशालाओं में मिशन पाण्डुलिपि भंडारों के अनुरोध पर ग़ौर करता है। इसमें निवारक संरक्षण को लागू करने तथा संग्रहों को पुनर्व्यवस्थित करने के लिए एम.आर.सी. की सेवा ली जाती है।

एम.सी.पी.सी. कार्यशाला

जिन संस्थाओं के पास पाण्डुलिपियों का विशाल भंडार है और जिन्हें एम.सी.सी. के रूप में विकसित होने की आवश्यकता और सुविधा नहीं है, उन्हें सुविधा और सहायता प्रदान करने के लिए मिशन ने एक अलग तरह का कार्यक्रम विकसित किया है। इस कार्यक्रम के तहत ऐसी संस्था को पाण्डुलिपि संरक्षण सहयोगी केन्द्र (एम.सी.पी.सी.) नामित किया जाता है। इसके अंतर्गत प्रत्येक एम.सी.सी. कुछ संस्थाओं को एम.सी.पी.सी. के रूप में नामित करता है। एम.सी.पी.सी. को अपने संग्रहों के अनुरक्षण और देख-रेख का परामर्श दिया जाता है। वर्तमान में मिशन के साथ 220 संस्थाएं पाण्डुलिपि संरक्षण सहयोगी केन्द्र के रूप में हैं।

इस कार्यक्रम को आगे बढ़ाने के लिए मिशन एम.सी.पी.सी. के कर्मचारियों के लिए तीन दिवसीय कार्यशाला का आयोजन करता

है। इन कार्यशालाओं का मुख्य उद्देश्य है पाण्डुलिपि संग्रहों की नियमित देखरेख और अनुरक्षण के लिए पाण्डुलिपि भंडार स्वामियों को निवारक संरक्षण प्रशिक्षण देना। व्यवहारिक सत्र के अंतर्गत कार्यशाला पाठ्यक्रम के दौरान अपने संकलनों को व्यवस्थित करने के लिए किसी एक पाण्डुलिपि भंडार को चुना जाता है।

एम.आर.सी., एम.सी.पी.सी. और अन्य पाण्डुलिपि भंडारों के लिए सजगता कार्यशाला

एम.आर.सी., एम.सी.पी.सी. और अन्य पाण्डुलिपि भंडार संस्थाओं के कर्मचारियों को प्रशिक्षित करने के लिए रा.पा.मि. एम.सी.सी के संबंधित क्षेत्र में संस्थाओं के पाण्डुलिपि संग्रहों और निजी पाण्डुलिपि भंडारों में निवारक संरक्षण में सहायता पहुंचाने के लिए कार्यशाला आयोजित करता है। इसमें प्रतिभागियों को पाण्डुलिपि के निवारक संरक्षण के संबंध में आधारभूत ज्ञान दिया जाता है।

आधार कपड़ा होता है जिसके दोनों किनारे पर गहरे नीले रंग की लेप होती है। इस पर कैल्सियम कार्बोनेट से अभिलेख लिखा जाता है। द्वितीय कार्यशाला ताड़ पत्र के सरंक्षण के संबंध में आई.एन.टी.ए.सी.एच, आई.सी.आई., भुवनेश्वर में आयोजित की गई। तृतीय कार्यशाला शिला और मृदभांड अभिलेखों के संबंध में शिमला में आयोजित की गई।

इन कार्यशालाओं के परिणाम मिशन और देश की पाण्डुलिपि विरासत के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण होंगे। इन कार्यशालाओं में सामग्रियों, उनके निर्माण, प्रौद्योगिकी और संरक्षण, सभी पर समान ध्यान दिया जाता है। यह निर्णय लिया गया है कि इन संगोष्ठि आलेखों का संयोजन करके उसे मिशन द्वारा प्रकाशित किया जाएगा ताकि इससे हमारे केन्द्रों के साथ-साथ पाण्डुलिपि भंडार स्वामियों को लाभ मिल सके। ये कार्यशालाएं मूलतः पाण्डुलिपि भंडार स्वामियों तथा वहां काम करने वाले कर्मचारियों के लिए आयोजित की जाती हैं जिनके पास ऐसी दुर्लभ पाण्डुलिपि सहायक सामग्री मौजूद हैं। विभिन्न पाण्डुलिपि भंडारों और एम.सी.सी. में काम करने वाले संरक्षक और क्यूरेटर, शोधार्थी और विशिष्ट सामग्री वाले पाण्डुलिपि भंडार

दुर्लभ सहायक सामग्री के संरक्षण हेतु कार्यशाला

भारत भौगोलिक और जलवायु संबंधी विविधताओं से परिपूर्ण एक विशाल देश है। अलग-अलग क्षेत्रों में अलग-अलग सामग्रियों पर वृहतर जलवायु का असर अलग-अलग होता है। चूंकि भारत में विभिन्न प्रकार की पाण्डुलिपि सहायक सामग्रियां मौजूद हैं, इसलिए समस्याओं के प्रकार और प्रकृति भी विशिष्ट और विविध हैं। मिशन के संरक्षण उद्देश्य से अवगत कराने के लिए देश के विभिन्न भागों में संगोष्ठि सह कार्यशालाएं आयोजित करने की योजना बनाई गई है। जिसके तहत प्रथम संगोष्ठि सह कार्यशाला का आयोजन कडातस पर कर्नाटक राज्य अभिलेखागार, बंगलुरु में आयोजित की गई। कडातस अभिलेख लेखन में प्रयुक्त एक अनुपम और विशिष्ट सामग्री है जिसका उपयोग केवल कर्नाटक क्षेत्र में किया जाता था। कडातस के अवयवों के संबंध में लोगों को बहुत अधिक ज्ञान नहीं है। इसका

रा.पा.मि. पुस्तकालय, नयी दिल्ली में पाण्डुलिपि संरक्षण कार्य प्रगति पर

के स्वामी इस कार्यशाला में एकत्र होकर परिचर्चा करते हैं तथा सैद्धांतिक और व्यवहारिक प्रशिक्षण से प्राप्त ज्ञान के आधार पर व्यवहारिक निष्कर्ष पर पहुंचते हैं। इनमें विशिष्ट सहायक सामग्रियों में विशेषज्ञता प्राप्त संपूर्ण भारत के प्रख्यात विद्वान, वैज्ञानिक और संरक्षक व्याख्यान देते हैं। कार्यशाला में सामग्री प्रौद्योगिकी, निर्माण और कडातस, शिला, मृदभांड और ताड़ पत्र जैसी विभिन्न प्रकार की पाण्डुलिपियों के संरक्षण पर विचार किया जाता है।

वर्ष 2010-2011 में आयोजित संरक्षण कार्यशाला

कार्यशाला का नाम	क्र.सं.	स्थान	दिनांक
निवारक संरक्षण एवं सजगता कार्यशाला	1.	राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, श्री गंगानाथ झा परिसर, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश	10-20 जुलाई, 2010
	2.	प्राच्य शोध संस्थान, श्री वेंकटेश्वर यूनिवर्सिटी, तिरुपति, आन्ध्र प्रदेश	24-28 सितम्बर, 2010
	3.	केन्द्रीय पुस्तकालय, बी.एच.यु., उत्तर प्रदेश	21-25 अक्टूबर, 2010
	4.	थुंचन स्मृति न्यास, केरल	16-12 अक्टूबर, 2010
	5.	अब्रोल पाण्डुलिपि एवं दुर्लभ ग्रंथ पुस्तकालय, जम्मू, जम्मू एंड कश्मीर	27-31 दिसम्बर, 2010
	6.	सरकारी डी.एस.आर.एम.भी.पी.जी. संस्कृत यूनिवर्सिटी, रायपुर, छत्तीसगढ़	18-22 जनवरी, 2011
	7.	श्री विदिराज शोध संस्थान उडुपी, कर्नाटक	17-22 मार्च, 2011
	8.	पटना संग्रहालय पटना, बिहार	2-6 मार्च, 2011
	9.	कुंदकुंद जननपीठ, इन्दौर	7-11 मार्च, 2011
	10.	बी.एल.आई.डी, दिल्ली	23-27 मार्च, 2011
	11.	मज़हर स्मृति संग्रहालय	
	12.	मणिपुर राज्य अभिलेखागार	20-24 अक्टूबर, 2010
	13.	त्रिपुरा यूनिवर्सिटी, अगरतल्ला, त्रिपुरा	25-29 मई, 2011
उपचारक संरक्षण प्रशिक्षु कार्यशाला	14.	इनटेक, भुवनेश्वर, उड़ीसा	23 नवम्बर-7 दिसम्बर, 2010
	15.	एन,आर.एल.सी., लखनऊ, 2010	30 नवम्बर-14 दिसम्बर, 2010
	16.	तमिलनाडु सरकारी संग्रहालय, चेन्नई	14-28 फरवरी, 2011
संसाधन पूल हेतु कार्यशाला	17.	इनटेक, लखनऊ	20-24 दिसम्बर, 2010
उपचार संरक्षण कार्यशाला	18.	मणिपुर राज्य अभिलेखागार, इम्फाल	10-24 जनवरी, 2011
चित्रित पाण्डुलिपि कार्यशाला	19.	हिमाचल राज्य संग्रहालय	22-26 फरवरी, 2011
दुर्लभ सहयोगी सामग्री कार्यशाला	20.	राजस्थान प्राच्य शोध संस्थान, जोधपुर	22-24 मार्च, 2011

श्री वदिराजा शोध संस्थान, उडूपी, कर्नाटक, 17-20 मार्च, 2011 को आयोजित निवारक संरक्षण कार्यशाला में प्रतिभागियों के साथ बातचीत करते डॉ. उषा सुरेश

22-26 फरवरी, 2011 को एम.आर.सी., भाषा और संस्कृति विभाग, शिमला में चित्रित पाण्डुलिपि के संबंध में निवारक संरक्षण और जागरूकता कार्यशाला में जिज्ञासु प्रतिभागी।

वार्षिक रिपोर्ट 2010-2011

क्र. सं.	एमसीसी	सहमति पत्र पर हस्ताक्षर तिथि	संयोजक का नाम	निवारक संरक्षण		उपचारात्मक संरक्षण	
				पाण्डुलिपि	पत्र	पाण्डुलिपि	पत्र
1.	सी.आई.बी.एस, लेह, लद्दाख	अक्टूबर 03	प्रो. वागचुक दोरजी नेगी प्राचार्य	कागज -	कागज -	कागज 10	कागज 2,542
	क्षेत्र परीक्षणालय, लेह, लद्दाख		प्रो. वागचुक दोरजी नेगी प्राचार्य	कागज 201	कागज 8,932	कागज 49	कागज 6,251
2.	भाषा एवं संस्कृति विभाग, शिमला, हिमाचल	मई 05	डा. हरी चौहान पंजीकरण अधिकारी	कागज 810	कागज 40,000	कागज 50	कागज 7,484
				कार्यशाला -3, प्रशिक्षण प्रापक - 90 जागरूकता कार्यक्रम और अभियान -10, प्रशिक्षण प्रापक - 500			
3.	रानी बाग, नैनीताल	जुलाई 05	श्री. अनुपम साह निदेशक	कागज 207	कागज 19,681	कागज 116	कागज 1,661
				पुनश्चर्या उपचारात्मक संरक्षण कार्यशाला - 1 जागरूकता अभियान -2			
4.	वृन्दावन शोध संस्थान	सितम्बर 03	डा. हरि मोहन मालवीय निदेशक	कागज 1,611	कागज 53,622	कागज 133	कागज 6,276
5.	नागार्जुन बौद्ध फाउन्डेशन, गोरखपुर उत्तर प्रदेश	मई 05	श्री करुणेश शुक्ला महासचिव	कागज 3,893	कागज 71,138	कागज	कागज
				जागरूकता अभियान - 8 प्रदर्शनी -7, कार्यशाला - 2			
6.	आई.सी.सी.आई, लखनऊ	सितम्बर 03	श्रीमती ममता मिश्रा निदेशक	ताड़ पत्र 1,408	ताड़ पत्र 2,601	ताड़ पत्र 16	ताड़ पत्र 1,343
7.	केन्द्रीय पुस्तकालय, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी	नवम्बर 06	डा. ए.के. सिंह विश्वविद्यालय पुस्तकाध्यक्ष	कागज 1,725	कागज 86,081	कागज 9	कागज 335
8.	प्राच्च शोध संस्थान तिरुपति विश्वविद्यालय, आन्ध्र प्रदेश	मई 05	प्रो. वी. वेंकटरमन रेड्डी, निदेशक	कागज 81	कागज 17,824	कागज	कागज
				ताड़ पत्र 114	ताड़ पत्र 19,366	ताड़ पत्र	ताड़ पत्र
				कार्यशाला - 2 जागरूकता अभियान - 4, प्रदर्शनी - 6			
9.	इनटेक आई.सी.के.पी.ए. सी, बंगलुरु	सितम्बर 03	श्रीमती मधु रानी संयोजक	ताड़ पत्र 1,287	ताड़ पत्र 54,609	ताड़ पत्र 55	ताड़ पत्र 5,406
				कागज 5	कागज 852	कागज	कागज
10.	तमिलनाडु सरकारी संग्रहालय, चेन्नई	अगस्त 04	श्रीमती जे.एम. गांधीमती, क्यूरेटर	ताड़ पत्र 1,287	ताड़ पत्र 41,071	ताड़ पत्र 33	ताड़ पत्र 4,090
				कागज 70	कागज 921	कागज 5	कागज 15
				36वां पाण्डुलिपि के लिए विशेष संदर्भ के साथ संग्रहालय ऑब्जेक्ट्स की देखभाल पर पुनश्र्चर्या पाठ्यक्रम, प्रदर्शनी- 1			
11.	क्षेत्रीय स्रंरक्षणशाला, त्रिपुणीथुरा	अप्रैल 06	डा. के. के. मोहनन पिल्लै, संरक्षण अधिकारी	ताड़ पत्र 23	ताड़ पत्र 1,135	ताड़ पत्र 331	ताड़ पत्र 30,592
				कागज	कागज	कागज 30	कागज 120

क्र. सं.	एमसीसी	सहमति पत्र पर हस्ताक्षर तिथि	संयोजक का नाम	निवारक संरक्षण		उपचारात्मक संरक्षण	
				पाण्डुलिपि	पत्र	पाण्डुलिपि	पत्र
13.	देव कुमार जैन प्राच्य शोध संस्थान आरा, बिहार	अप्रैल 06	श्री ए.के जैन संयोजक	कागज 1,511	कागज 28,105	कागज 8	कागज 351
				ताड़ पत्र 259	ताड़ पत्र 9,325	ताड़ पत्र 30	ताड़ पत्र 783
14.	पाण्डुलिपि संग्रहालय, कलकत्ता विश्वविद्यालय	मई 05	प्रो. रतना वसु	ताड़ पत्र 21	ताड़ पत्र 892	ताड़ पत्र 28	ताड़ पत्र 775
				कागज 3,278	कागज 65,138	कागज	कागज
				जागरूकता और ओरिएंटेशन कार्यक्रम-2			
15.	इनटेक भुवनेश्वर	सितम्बर 03	श्रीमती मलिका मित्र निदेशक	ताड़ पत्र 581	ताड़ पत्र 69,861	ताड़ पत्र 7	ताड़ पत्र 293
				कागज 2,395	कागज 43,723	कागज	कागज
16.	ऐतिह्य भुवनेश्वर	सितम्बर 05	श्री अरुण कुमार नायक संयोजक	कागज 323	कागज 47,000	कागज 30	कागज 4,000
17.	सम्बलपुर विश्वविद्यालय, मध्य प्रदेश	अगस्त 04	डा. पी.के. बहेरा निदेशक	कागज 555	कागज 54,262	कागज 555	कागज 54,262
18.	मणिपुर राज्य अभिलेखागार, इम्फाल	अप्रैल 06	डा. सोवीता देवी निदेशक	कागज 180	कागज 4,956	कागज 108	कागज 2,387
				कार्यशाला -2			
19.	कृष्ण कुमार हांडीक पुस्तकालय गुवाहाटी विश्वविद्यालय, आसाम	अक्टूबर 03	प्रो. उमा शंकर देव नाथ	कागज 98	कागज 3474	कागज 5	कागज 110
				तुला पात 121	तुला पात 5,727	तुला पात 6	तुला पात 84
				सांची पात 206	सांची पात 8,286	सांची पात 14	सांची पात 387
20.	राजस्थान प्राच्य शोध संस्थान, जोधपुर	अक्टूबर 03	श्री श्याम सिंह राजपुरोहित (आर.ए.एस.) निदेशक	कागज 1,999	कागज 68,001	कागज 949	कागज 23,385
				जागरूकता अभियान -1			
21.	डी. जैन पाण्डुलिपि केन्द्र जयपुर	नवम्बर 04	डा. कमल चांद सोगानी	कागज 804	कागज 55,709	कागज	कागज
22.	लाल भाई दलपत भाई प्राच्यविद्या संस्थान, गुजरात	मार्च 04	डा. जितेन्द्र बी. साह, निदेशक	कागज 109	कागज 3,842	कागज 79	कागज 2,055
23.	भंडारकर प्राच्य शोध संस्थान पुने	सितम्बर 03	डा. सरोजा भाटे, संपादक	कागज	कागज	कागज	कागज

क्र. सं.	एमसीसी	सहमति पत्र पर हस्ताक्षर तिथि	संयोजक का नाम	निवारक संरक्षण		उपचारात्मक संरक्षण	
				पाण्डुलिपि	पत्र	पाण्डुलिपि	पत्र
24.	राष्ट्रीय प्राकृत विद्या संस्थान, श्रवणबेलगोला कर्नाटक		डा. एम. उदय राज, कार्यकारी अधिकारी	ताड़ पत्र 519	ताड़ पत्र 31,506	ताड़ पत्र 288	ताड़ पत्र 3,537
				कागज 521	कागज 73,700	कागज 319	कागज 3,675
25.	कन्नड विश्वविद्यालय, जिला - बेलारी, कनार्टक	अक्टूबर 2010	प्रो. वीरेश एस. बादीगर निदेशक	ताड़ पत्र 30	ताड़ पत्र 200	ताड़ पत्र 4	ताड़ पत्र 214
				जागरूकता एवं अभिमुखी कार्यक्रम -11			
26.	थुचंन मेमोरियल टास्ट्र तिरुर	सितम्बर 2011	डा. के.पी. रामानुन्नी निदेशक	ताड़ पत्र 44	ताड़ पत्र 7,029	ताड़ पत्र 4	ताड़ पत्र 214
27.	इतिहास विभाग, तित्रुरा विश्वविद्यालय पश्चिम तित्रुरा		डा. सत्यदेव पोद्दार	ताड़ पत्र 9	ताड़ पत्र	ताड़ पत्र	ताड़ पत्र
	कुल			**26,282**	**9,98,569**	**3,271**	**1,62,627**

फरवरी 2003 से मार्च 2011 तक

	एम.सी.सी प्राप्त रिपोर्ट	निवारक संरक्षक		उपचारात्मक संरक्षण	
		पाण्डुलिपि की संख्या	पृष्ठ संख्या	पाण्डुलिपि की संख्या	पृष्ठ संख्या
अप्रैल 2003 - मार्च 2007	32	1,84,350	95,77,601	14,743	10,91,859
अप्रैल 2007 - मार्च 2011	24	1,55,538	48,04,147	65,537	11,23,497
फरवरी 2003 - मार्च 2011		3,39,888	1,43,81,748	80,280	22,15,356

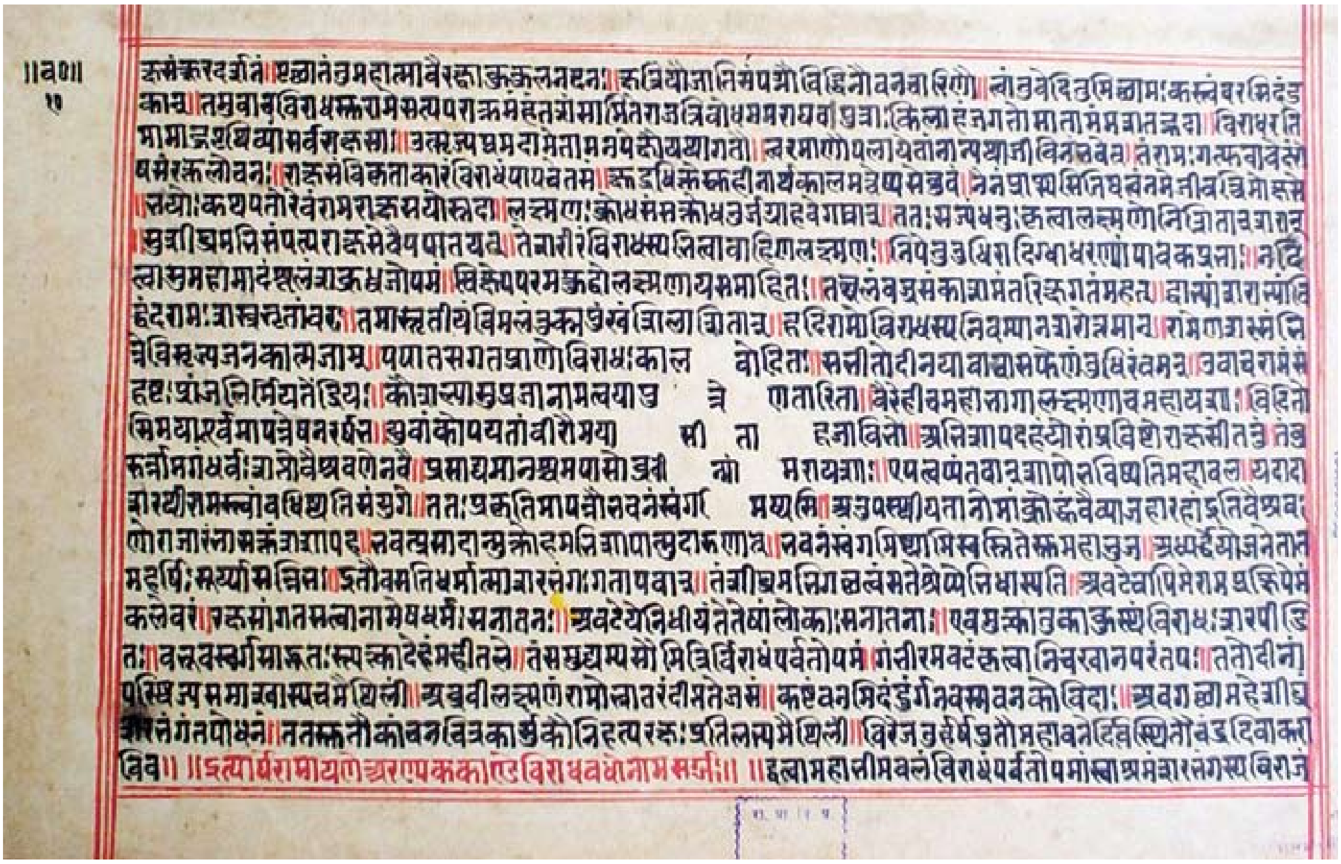

श्रीमद्भगवत पाण्डुलिपि, एम. आर. शर्मा संग्रह, गुड़गाँव, हरियाणा

सांख्यिकीकरण

पाण्डुलिपि के सांख्यिकीकरण का तात्पर्य है शब्द सम्पदा रूपी विरासत का परिक्षण और प्रलेखन करना। वर्तमान समय में सांख्यिकीकरण एक महत्त्वपूर्ण क्षेत्र के रूप में उभरकर सामने आया है। सूचना प्रौद्योगिकी में प्रगति के कारण जहां एक ओर मूल पाठ के परिरक्षण और प्रलेखन की आशा बंधती है वहीं दूसरी ओर इसी के साथ विद्वानों और शोधार्थियों के लिए उसकी उपलब्धता पहले की तुलना में अधिक सुलभ हो गई है। सन् 2004 में मिशन ने सांख्यिकीकरण की एक पायलट परियोजना की शुरूआत की जिसका उद्देश्य संपूर्ण देश के विभिन्न पाण्डुलिपि भंडारों का सांख्यिकीकरण था। सन् 2006 में पायलट परियोजना पूरी हो गई। इसके उपरांत नई परियोजनाओं की शुरूआत हुई। जिनका लक्ष्य देश के महत्वपूर्ण पाण्डुलिपि संकलनों का सांख्यिकीकरण था। नई सांख्यिकीकरण परियोजनाओं के लिए मिशन पाण्डुलिपियों हेतु एक सांख्यिकीकरण संसाधन आधार तैयार करना चाहता है।

डिजिटलीकरण के द्वितीय चरण में मिशन ने बहुत-सी संस्थाओं की महत्त्वपूर्ण पाण्डुलिपियों का चयन किया है।

उद्देश्य

- भावी पीढ़ियों के लिए मूल पाण्डुलिपियों का परिरक्षण।
- मूल प्रतियों में छेड़छाड़ किए बिना उन तक विद्वानों और शोधार्थियों की पहुँच और उपयोगिता को प्रोत्साहित करना।
- देश के कुछ महत्वपूर्ण पाण्डुलिपि संकलनों की सांख्यिकीकृत प्रतियों के संसाधन आधार के रूप में सांख्यिकीकृत पुस्तकालय का निर्माण करना।
- पाण्डुलिपियों के सांख्यिकीकरण हेतु मानकों और प्रक्रियाओं का निर्माण करना।

सांख्यिकीकरण आकलन

सांख्यिकीकरण 'आकलन' में निम्नलिखित पर विचार किया जाता है:

1. उपचारात्मक और संरक्षणात्मक विचार का संबंध है:
   - स्रोत सामग्री का 'सख्तीपन' (क्या सांख्यिकीकरण के समय इसके विशेष उपचार की आवश्यकता है अथवा वैकल्पिक रूप से यह 'डिसबैडिंग' से गुजर सकती है)
   - सांख्यिकीकरण हेतु वाह्य सहायता लेते समय सुरक्षा पक्ष पर विचार।
2. स्रोत सामग्री के अन्य 'भौतिक' एवं 'विषय वस्तु' संबंधी लक्षण।
3. आंतरिक संसाधन और वाह्य संसाधन (यदि अनुमति दी जाती है) के परिप्रेक्ष्य में परियोजना पूरा करने में लागत।

सांख्यिकीकरण आकलन के निम्नलिखित उद्देश्य हैं:

- स्रोत से प्राप्त पाण्डुलिपि का सांख्यिकीकरण किया जाएगा अथवा नहीं इस संबंध में निर्णय लेता है अथवा निर्णय की पुष्टि करता है।
- परीक्षण तकनीक का मोटे तौर पर आकलन जिसका उपयोग किया जाना चाहिए तथा रिशॉल्यूशन, थोड़ी गहनता जिसकी आवश्यकता होती है।
- कार्य को स्थापित दर्रे और तय समय सीमा के अंतर्गत पूरा करने के लिए सुरक्षा जोखिम, लागत, और स्वयं के संसाधन को ध्यान में रखते हुए निर्णय लेना।

स्तर निर्धारण (बेंचमार्किंग)

स्तर निर्धारण को एक ऐसी प्रक्रिया के रूप में परिभाषित किया जाता है जिसे सांख्यिकीकरण परियोजना के प्रारंभ में अपनाया

श्रीमद्भागवत पाण्डुलिपि, एम.आर. शर्मा संग्रह, गुड़गांव, हरियाणा

जाता है जिस पर अत्यंत महत्वपूर्ण सूचना को प्राप्त करने में प्रक्रिया सुनिश्चित करने में स्तर निर्धारण के लिए प्रयास किया जाता है अर्थात् रिशॉल्यूशन या गहनता को ठीक से सेट किया जाता है, स्रोत सामग्री की मुख्य प्रकृति का संपूर्ण ज्ञान। मिशन ने सांख्यिकीकरण कार्यक्रम पूरा करने के लिए कुछ मानक अपेक्षाएं निर्धारित की है। मिशन ने इसे एक पुस्तक 'अभिलेखीय सामग्री के सांख्यिकीकरण हेतु दिशानिर्देश' के रूप में अपने वेबसाईट www.namami.gov.in पर उपलब्ध करा रखा है। इस पुस्तक में निम्नलिखित क्षेत्र पर चर्चा है:

1. **स्कैनर:** स्कैन करने के लिए बिना स्पर्श किए काम करने वाले उपकरणों का प्रयोग किया जाता है क्योंकि स्पर्श करने पर पाण्डुलिपि पर असर पड़ सकता है। इस कारण से फ्लैट बेड स्कैनर के बजाय फेस अप स्कैनर का उपयोग किया जाता है।
2. **बिम्ब गुणवत्ता:** लिए गए बिम्ब की गुणवत्ता को स्कैनिंग रिशॉल्यूशन स्कैन किए गए बिम्ब का बिट डेप्थ उन्नत बनाने की प्रक्रिया और प्रयुक्त संपीडन, स्कैनिंग उपकरण अथवा प्रयुक्त तकनीक तथा स्कैनिंग प्रचालक के कौशल के संचित परिणाम के रूप में परिभाषित किया जा सकता है।

- **रिशॉल्यूशन:** बिम्ब प्रस्तुत करने में प्रयुक्त पिक्सल की संख्या, जिसे प्रति इंच डॉट या प्रति वर्ग इंच पिक्सल के रूप में व्यक्त किया जाता है, द्वारा रिशॉल्यूशन को परिभाषित किया जाता है। बिम्ब लेने के लिए अधिक संख्या में पिक्सल के प्रयोग से रिशॉल्यूशन उच्च हो जाता है और प्रत्येक बारीकी में निखार की संभावना बढ़ जाती है। लेकिन केवल रिशाल्यूशन बढ़ा देने भर से बेहतर गुणवत्ता नहीं हो जाती। अतएव बिम्ब का स्कैनिंग 300 डॉट पर इंच पर होगा।
- **बिट डेप्थ:** यह प्रत्येक पिक्सल को परिभाषित करने के लिए प्रयुक्त बिट्स की संख्या का मापन है। प्रयुक्त बिट की जितनी अधिक गहराई होगी, व्यक्त किए जा सकने वाले भूरे और रंगीन टोन की उतनी ही अधिक संख्या होगी। मिशन में निम्नलिखित प्रकार के स्कैनिंग किया जाता है–
  - श्वेत-श्याम को प्रकट करने के लिए बाई- टोनल स्कैनिंग तथा
  - रंगीन स्कैनिंग रंग प्रकट करने के लिए बहु बिट पिक्सल का उपयोग करता है। प्रति पिक्सल 24 बिट को सही रंग स्तर कहते हैं।

- **छवि निखार प्रक्रियाः** आकार, रंग और धवलता में परिवर्तन तथा छवि की प्रकृति में तुलना और विश्लेषण करके, जिसे केवल देखकर नहीं समझा जा सकता, ली गई छवि को संशोधित करने अथवा उसमें निखार लाने के लिए इसका उपयोग किया जाता है।
- **संपीडनः** डिजिटल छवि के प्रसंस्करण, भंडारण, और प्रेषण हेतु सामान्य तौर पर फाइल के आकार को छोटा करने के लिए संपीडन का प्रयोग किया जाता है। मितशन न्यूनतम संपीडन तकनीक का उपयोग करता है जिससे विसंपीडित छवि पूर्व की छवि जैसी ही हो क्योंकि आकार छोटा करते समय किसी भी सूचना को नष्ट नहीं की जाती है। मिशन संपीडन के लिए जे.पी.ई.जी/जे.पी.ई.जी 2000 अंतर्राष्ट्रीय मानक तकनीक का उपयोग करता है।

3. स्कैन की गई छवि हेतु छवि प्रारूप

- मास्टर इमेज (टीआई एफ एफ प्रारूप)
- क्लीन इमेज (टीआई एफ एफ प्रारूप)
- एक्सेस इमेज (जेपीईजी प्रारूप)
- थम्बनेल इमेज (जेपीईजी प्रारूप)

नामकरण परिपाटी

छवियों का नामकरण एक महत्वपूर्ण मुद्दा है जिस पर मिशन ने अत्यंत ही दक्षतापूर्वक कार्य किया है। प्रत्येक सांख्यिकीकृत पाण्डुलिपि का मिशन के इलेक्ट्रॉनिक डाटाबेस में प्रलेखित किया जा चुका है। स्कैन की गई प्रत्येक पाण्डुलिपि के मेटा डाटा सूचना के लिए (पाण्डुलिपि को वर्णित करने वाली मुख्य सूचना) पाण्डुलिपि पहचान संख्या दी गई है (मैनुस आई डी) जिसे मिशन के मैनुस ग्रंथावली सॉफ्टवेयर में सृजित किया गया है। संस्थान में जहां पाण्डुलिपि रखी जाती है और सांख्यिकीकरण की जाती है वहां से मैनुस आई डी और अधिग्रहण संख्या रखी जाती हैं, ये प्रत्येक पाण्डुलिपि की सांख्यिकीकृत छवि के नामकरण के आधार होते हैं।

गुणवत्ता अवश्वासन

यह अनिवार्य है कि सांख्यिकीकरण गुणवत्ता नियंत्रण विश्लेषण के विभिन्न चरणों से होकर गुजरे। यह इस बात के सत्यापन के लिए स्वीकृत विधि है कि प्रत्येक प्रस्तुति मानक

पाण्डुलिपि दिवस 2010 को ओ.आर.आई., मैसूर में आयोजित प्रदर्शनी में आगंतुक

है। समय और वित्त की सीमा को देखते हुए, इस प्रक्रिया में लागत को कम करने के लिए किसी प्रकार के नूमने तैयार करना अनिवार्य हो जाता है। एन.ए.आर.ए के अनुसार दस छवियां या कुल छवियों के दस प्रतिशत (जो अधिक हो) को गुणवत्ता नियंत्रण से होकर गुजरना चाहिए (यह चयन संपूर्ण संग्रह में से कहीं से भी कर लेना चाहिए)। उचित तो यह होता है कि सभी मुख्य छवियों और उनके व्युत्पन्न के संबंध में गुणवत्ता आश्वासन होना चाहिए, प्रलेखन के प्रत्येक चरण में। इस दौरान निम्नलिखित बिंदुओं पर ग़ौर करना चाहिए -

- छवि के आकार
- छवि का रिज़ॉल्यूशन
- फाइल प्रारूप
- छवि मोड (अर्थात रंगीन छवि रंगीन रहती है, भूरा नहीं)
- बिट डेप्थ
- हाइलाइट और छाया का विवरण
- कुल मान
- धवलता
- कंट्रास्ट
- पैनापन (शार्पनेस)
- इंटरफ्रेंस
- अभिमुख (ओरिन्टेशन)
- क्रॉप्ड तथा बोर्डर क्षेत्र, छुटे हुए पाठ अंश और पृष्ठ संख्या
- छुटी हुई रेखाएं या पिक्सल
- अधिग्रहण और संक्षिप्तता सहित खराब स्तर का क्षेपक
- पाठ की पठनीयता

फाइल नाम समग्रता, कार्य की दक्षता और परियोजना के लक्ष्य को पूरा करने के लिए कुछ प्राप्ति पर ध्यान देना चाहिए। एन.ए.आर.ए. की संस्तुति है कि यदि एक प्रतिशत से अधिक पाण्डुलिपि अंश गुणवत्ता मानक के अनुरूप नहीं होने पर उन पर पुनः काम करने की आवश्यकता होती है। मिशन में गुणवत्ता नियंत्रण मानदंड अच्छी तरह से परिभाषित है। खुदा बख्श ओरियन्टल पब्लिक लाइब्रेरी द्वारा शुरू की गई प्रक्रिया, गुणवत्ता नियंत्रण मानक को निर्धारित करने के लिए मिशन ने एक बैठक आयोजित की। इसमें सांख्यिकीकरण और इमेजिंग प्रौद्योगिकी के विशेषज्ञ इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि सांख्यिकीकरण एजेंसी द्वारा उपलब्ध करायी गई सामग्री की जांच करने का सर्वोत्तम और सस्ता तरीका विशेषज्ञ द्वारा यादृच्छिक जांच करना है। मिशन अंतिम सुपुर्दगी से पहले गुणवत्ता नियंत्रण के लिए सांख्यिकीकरण स्थल पर विशेषज्ञों को भेजता है और पर्यवेक्षण करता है।

उपलब्धता सुविधा मुहैया कराने की दृष्टि से सांख्यिकीकरण के लाभ और मानक परिरक्षण के रूप में सांख्यिकीकरण से होने वाली हानि को स्वीकार करते हुए, यह पूर्व के अनुभवों से स्पष्ट है कि विविध प्रस्तुतियों को होने देने के लिए मुख्य गुणवत्ता नियंत्रण स्तर पर सांख्यिकीकरण सबसे कम लागत वाली विधि है (प्रिंट, अधिग्रहण छवि और संक्षिप्त प्रस्तुति के लिए) जिसे दीर्धकालीन अवधि में मूल प्रलेखन के विकल्प के रूप में किया जा सकता है।

कंप्यूटर तकनीकी से बिल्कुल एक नया परिदृश्य उभरकर सामने आता है। सांख्यिकीकरण का अर्थ है कंप्यूटर के उस प्रारूप में सूचना लेना, उसका भंडारण और उसे कंप्यूटर के जरिए उपलब्ध करवाना जो कि मानक, सुव्यवस्थित और मांग पर उपलब्ध होता है। पाण्डुलिपियों को विशिष्ट स्कैनर युक्त संक्षिप्त सांख्यिकीकृत प्रारूप में परिवर्तित किया जाता है और भविष्य में संदर्भ के लिए संग्रहीत किया जाता है।

श्री डी. आर. मेहता संग्रह, जयपुर के कल्पसुज से चित्र

2010-2011 में कार्य निष्पादन

मार्च 2011 तक 70,053 पाण्डुलिपियों का (9397422 पृष्ठ) के सांख्यिकीकरण को पूरा किया जा चुका है। पाण्डुलिपियों की सांख्यिकीकृत छवियों वाली 58045 डी.वी.डी. की है। अब तक की सांयिख्कीकृत पाण्डुलिपियों के संबंध में विस्तृत विवरण नीचे के स्तंभ में दिए गए हैं।

प्रस्तावित कार्य

आरक्षित रखे गए शेष 20 लाख पृष्ठों को सांख्यिकीकरण हेतु चार एजेंसियों को सुपुर्द किया गया है (टेंडर आमंत्रित करके द्वितीय चरण में सांख्यिकीकरण हेतु छंटनी की गई।)। कुल कार्य के 85 प्रतिशत को पूरा कर लिया गया है और शेष को शीघ्र पूरा करने की उम्मीद है।

रा.पा.मि. संपूर्ण देश में स्थित पाण्डुलिपि भंडारों और संग्रहों में मौजूद पाण्डुलिपियों के सांख्यिकीकरण हेतु शीघ्र तृतीय चरण को प्रारंभ करने जा रहा है। तृतीय चरण के अंतर्गत पाण्डुलिपियों के सांख्यिकीकरण हेतु वेबसाइट पर निविदा जारी की गई और उसी को संपूर्ण देश के अग्रणी समाचार पत्रों में विज्ञापित किया गया। टेंडर प्राप्त हुए हैं और उनके मूल्यांकन का कार्य चल रहा है। सांख्यिकीकरण एजेंसी के चुनाव, उनके साथ सहमति पत्र पर हस्ताक्षर तथा एजेंसियों को सांख्यिकीकरण हेतु पाण्डुलिपि भंडार के आबंटन कार्य को शीघ्र पूरा कर लिया जाएगा। पाण्डुलिपि भंडारों और संस्थाओं में सांख्यिकीकरण जल्द ही शुरू किया जाएगा।

प्रथम चरण में प्रारंभ सांख्यिकीकरण की स्थिति

संस्थान	पाण्डुलिपि सं.	पृष्ठ संख्या	स्थिति
प्राच शोध संस्थान	10,591	21,00,000	पूर्ण
उड़ीसा राज्य संग्रहालय	1,749	3,50,000	पूर्ण
जैन पाण्डुलिपि	180	42,951	पूर्ण
कुटियाटयम	340	38,260	पूर्ण
सिद्ध पाण्डुलिपि	1,938	78,435	जारी
कुल	**14,798**	**26,09,646**	

द्वितीय चरण में प्रारंभ सांख्यिकीकरण स्थिति

संस्थान	पाण्डुलिपि सं.	पृष्ठ सं.	स्थिति
उड़ीसा राज्य संग्रहालय, भुवनेश्वर	4,777	13,48,398	जारी
कृष्ण कांत हांडीक ग्रन्थागार, गुवाहाटी,	2,091	1,56,170	पूर्ण
हरी सिंह गौड़ विश्वविद्यालय सागर	1,010	1,17,603	पूर्ण
आन्नदाश्रम संस्था, पुणे	7,939	9,21,673	पूर्ण
भारत इतिहास संसोधन मण्डल, पुणे	3,523	6,60,730	पूर्ण
हिमाचल अकादमी, शिमला	225	55,751	पूर्ण
बृन्दावन शोध संस्थान	20,075	15,61,864	पूर्ण
एशियाई अध्ययन संस्थान, चेन्नई	481	34,505	पूर्ण
प्रैन्च इंस्टियूट, पाडुचेरी	502	1,70,629	पूर्ण
कुंदकुंद ज्ञानपीठ, इन्दौर	8,622	11,60,453	पूर्ण
भोगीलाल लहर चांद भारतविद्या संस्थान	6,010	6,00,000	जारी
कुल	**55,255**	**67,87,776**	

22 अगस्त 11 सितम्बर, 2010 को मणिपुर राज्य अभिलेखागार, इम्फाल में आयोजित प्राथमिक स्तर के पाण्डुलिपिशास्त्र और पुरातत्त्वलेखन पर कार्यशाला में प्रतिभागी

13 जनवरी, 2011 को भारत इतिहास संशोधन मंडल, पुणे में तत्त्वबोध सार्वजनिक व्याख्यान माला में व्याख्यान देते हुए डॉ. पीटर एम. स्खार्फ

अभिलेखागार सामग्री के सांख्यिकीकरण हेतु दिशा निर्देश

राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन द्वारा डिजिटल प्रौद्योगिकी के उपयोग का मुख्य उद्देश्य है भावी पीढ़ी के लिए पाण्डुलिपि का परिरक्षण। रा.पा.मि. ने सांख्यिकीकरण हेतु दिशा-निर्देश जारी करने से पहले राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अनेक सांख्यिकीकरण परियोजनाओं में अपनायी जा रही सर्वोत्तम विधियों का अध्ययन किया है और इस क्षेत्र में कार्यरत विशेषज्ञों से संपर्क किया है। 'अभिलेखागार सामग्री के सांख्यिकीकरण हेतु दिशा निर्देश' को एक तकनीकी समिति ने तैयार की है जिसमें राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन के निदेशक प्रो. दीप्ति एस. त्रिपाठी के मार्गदर्शन राष्ट्रीय सूचना विज्ञान केंद्र के सूचना प्रौद्योगिकी विशेषज्ञ सहित इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र तथा राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन के विशेषज्ञ शामिल थे। इस सामग्री का संपादन प्रो. दीप्ति एस. त्रिपाठी ने किया और इसे पुस्तक रूप में 07 फरवरी, 2011 को जारी किया गया।

इस दिशा-निर्देश में सांख्यिकीकरण को निम्नलिखित रूप में परिभाषित किया गया है।

सांख्यिकीकरण का अर्थ है कंप्यूटर के उस प्रारूप में सूचना लेना, उसका भंडारण और उसे कंप्यूटर के जरिए उपलब्ध करवाना जो कि मानक, सुव्यवस्थित और मांग पर उपलब्ध होता है।

इन दिशा निर्देश नीति निर्माताओं, अभिलेखागार कर्मियों, पुस्तकालय प्रबंधकों, क्यूरेटर और तकनीकी कर्मचारियों के उपयोग हेतु है। ये दिशा-निर्देश अभिलेखागार स्तर की सामग्रियों की स्थिर डिजिटल छवि तैयार करना है जिसमें छपी हुई पुस्तकें, मानचित्र, स्लाइड, निगेटिव आदि शामिल हैं। छवि गुणवत्ता, फाइल प्रारूप, भंडारण और छवि हेतु अधिग्रहण मानकों प्रभावित करने वाले कारकों को दिशा-निर्देश विनिर्दिष्ट करता है।

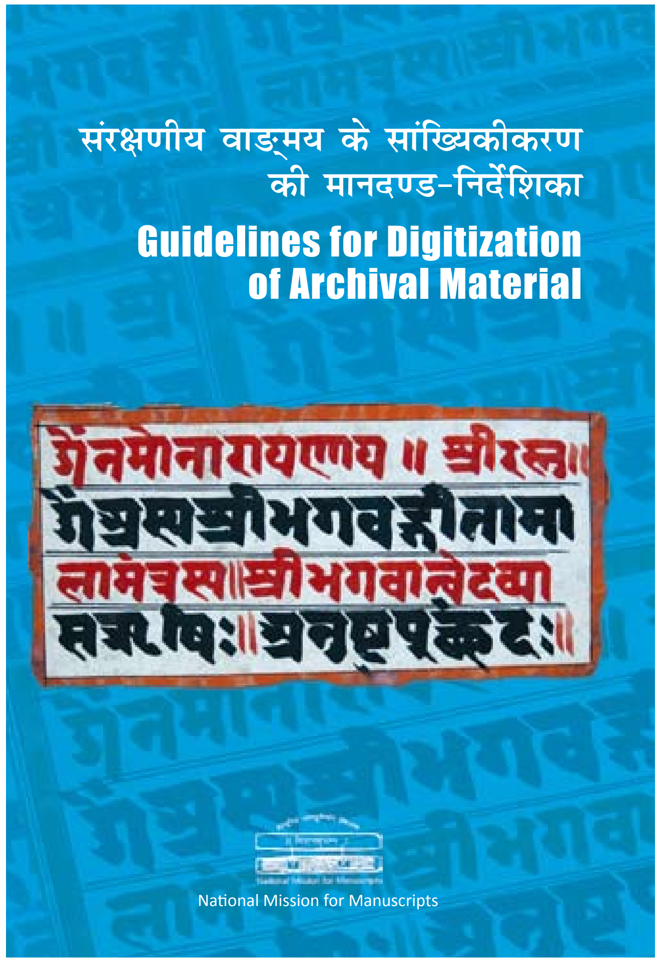

जन सम्पर्क कार्यक्रम

पाण्डुलिपियों, उनके संरक्षण और प्रलेखन की सुविधा उपलब्ध कराने हेतु सजगता फैलाने के लिए रा.पा.मि. ने संगोष्ठि, व्याख्यान, विज्ञापन, समाचार पुस्तिका प्रकाशन और रिपोर्ट छापने जैसे कई कार्यक्रमों को प्रारंभ किया है। सम्पर्क कार्यक्रम के निम्नलिखित उद्देश्य हैं:

- पाण्डुलिपि के संबंध में परिचर्चा, वाद-विवाद और आलोचना के लिए मंच उपलब्ध करवाना।
- भारत की पाण्डुलिपि विरासत के प्रति लोगों में जागरूकता और समझ बढ़ाना।
- आम आदमी में पाण्डुलिपि के प्रति रूचि, जागरूकता और ज्ञान उत्पन्न करना।

वर्ष 2010-2011 के दौरान तत्त्वबोध शृंखला के अंतर्गत सार्वजनिक व्याख्यान

क्र. स.	सहयोगी संस्थान/स्थान	विषय	तिथि	वक्ता
1.	एन.एम.एम, नयी दिल्ली स्थल : व्याख्यान कक्ष 11 मानसिंह रोड नयी दिल्ली - 110 001	वेद विज्ञान एवं पाण्डुलिपि	30-07-2010	प्रो. लक्ष्मीश्वर झा प्रो. श्री लाल बहादुर राष्ट्रीय संस्कृति विद्यापीठ, नयी दिल्ली
2.	संस्कृत अकादमी, उस्मानिया विश्वविद्यालय, हैदराबाद स्थल : संस्कृत अकादमी संगोष्ठी कक्ष, हैदराबाद	अभिज्ञानशाकुन्तलम्-कृतिसमीक्षा से पाठसमीक्षा	09-09-2010	प्रो. वसन्त कुमार भट्ट निदेशक भाषा संकाय, गुजरात विश्वविद्यालय अहमदाबाद
3.	नागार्जुन बौद्ध फाउन्डेशन गोरखपुर, उत्तर प्रदेश	मातृका ग्रन्थों की सुरक्षा और सम्पादन: महाभारत के सन्दर्भ में	11-12-2010	प्रो. उमा रमन झा निदेशक सरस्वती शोध संस्थान लखनऊ, उत्तर प्रदेश
4.	एन.एम.एम., नयी दिल्ली स्थल : संगोष्ठी कक्ष - 1 विश्व युवा केन्द्र चाणक्य पुरी नयी दिल्ली - 21	संगीत सम्बन्धी संस्कृत पाण्डुलिपियों का परिचय एवं उनका महत्त्व	25-11-2010	प्रो. भगवत शरण शुक्ला सरकारी प्राआध्यपक व्याकरण विभाग संस्कृत विद्या धर्म संकाय बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी
5.	एन.एम.एम., नयी दिल्ली (विशेष व्याखान) स्थल: संगोष्ठी कक्ष - 1 विश्व युवा केन्द्र चाणक्य पुरी नयी दिल्ली - 21	सिंधु सभ्यता और लिपि	26-11-2010	डा. एस कल्याणरमन सरस्वती अनुसंधान केन्द्र चेन्नई

क्र. स.	सहयोगी संस्थान/स्थान	विषय	तिथि	वक्ता
6.	एन.एम.एम., नयी दिल्ली स्थल : व्याख्यान कक्ष 11 मानसिंह रोड नयी दिल्ली - 110 001	विशिष्टाद्वैतदर्शन से सम्बद्ध कतिपय विलुप्त महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ	24-12-2010	प्रो. अशोक कुमार कलिया भूतपूर्व कुलपति, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी
7.	एन.एम.एम., नयी दिल्ली स्थल : व्याख्यान कक्ष 11 मानसिंह रोड नयी दिल्ली - 110 001	ज्योतिर्विज्ञान के ग्रन्थो में परिशोधन की समस्या	28-01-2011	प्रो. मोहन गुप्ता कुलपति पाणिनी संस्कृत विश्वविद्यालय, उज्जैन
8.	हिमाचल कला, संस्कृति एवं भाषा अकादमी स्थल : बहुदेशीय कक्ष, गेयाती कैम्पस शिमला	हिमालय ज्ञान और पाण्डुलिपि	23 मार्च, 2011	प्रो. गंगा प्रसाद विमल वरिष्ठ लेखक
9..	आनन्दाश्रम संस्था, पुणे स्थल : डी.वी. पोटदार कक्ष भारत इतिहास संशोधन मण्डल, पुणे	डिजिटल युग में उच्च गुणवत्ता सूची और संस्कृत पाण्डुलिपि तक पहुंच प्रदान करना	13 जनवरी, 2011	डा. पीटर एम. स्कर्फ प्राध्यापक संस्कृत, बाउन विश्वविद्यालय संयुक्त राज्य अमेरिका
10.	डा. हरि सिंह गौड़ विश्वविद्यालय सागर, मध्य प्रदेश	श्रीमद्भागवतमहापुराण की प्रकाशित और अप्रकाशित पाण्डुलिपियाँ	28 दिसम्बर, 2010	प्रो. गंगाधर पंडा प्राध्यपक, पुरान इतिहास, सर्म्पूणान्नद संस्कृत विश्वविद्यालय वाणारसी
11.	राष्ट्रीय प्राकृत विद्या एवं शोध संस्थान श्रावणबेलगोला	पाण्डुलिपि और लिपियों परंपरा	26 फरवरी, 2010	डा. संगमेश कल्याण मोडीलिपि विशेषज्ञ मुडोला, कर्नाटक
12.	समपूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी स्थल: नैमिषारण्य	पाण्डुलिपि एवं भास	10 मार्च, 2011	प्रो. श्रीनिवास रथ पूर्व निदेशक कालीदास संस्कृत एकादमी उज्जैन
13.	प्राच्य विद्या संस्थान एवं पाण्डुलिपि ग्रन्थागार, करीयावट्टम, केरला	पाण्डुलिपि में संस्कृत परंपरा	24 फरवरी, 2011	प्रो. सी राजेन्द्रन विभागाध्यक्ष, संस्कृत कलीकट विश्वविद्यालय केरल
14.	अखिल भारतीय संस्कृत परिषद लखनऊ स्थल : अखिल भारतीय संस्कृत परिषद व्याख्यान कक्ष	भारतीय चित्रकला और हमारी सचित्र पाण्डुलिपियाँ	23 मार्च, 2011	प्रो. गया चरन त्रिपाठी नेशनल फैलो, इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ एडवांस स्टडीज शिमला
15.	राजस्थान प्राच्य विद्या संस्थान, जोधपुर, राजस्थान	भक्ति साहित्य और पाण्डुलिपि संरक्षण	22 मार्च, 2011	डा. डी. के. गौतम सरकारी प्राध्यापक हिन्दी विभाग, जे.एन.वी.यू. जोधपुर
16.	सरस्वती, भद्रक उड़ीसा	उड़ीसा के सन्दर्भ में 'अर्णवविहारविलास' की महत्व	10 अप्रैल, 2011	प्रो. केशव चन्द्र दास विभागाध्यक्ष, न्याय एवं दर्शन, श्री जगरनाथ संस्कृत विश्वविद्यालय, पुरी

क्र. स.	सहयोगी संस्थान/स्थान	विषय	तिथि	वक्ता
17.	थुंचन मेमोरियल ट्रस्ट, तिरूर केरल	हिन्दी, बंगला एवं मलयालम भाषा में उपलब्ध रामायणों की तुलनात्मक विश्लेषण	2 फरवरी, 2011	प्रो. इन्द्रनाथ चौधरी सदस्य सचिव संस्था साहित्य मंडल नयी दिल्ली
18.	कृष्ण कांत हांडीक पुस्कालय गुवाहाटी आसाम	हांडीक एवं उनकी साहित्य दुनिया	22 फरवरी, 2011	प्रो. रणजीत कुमार देव गोसामी अंग्रेजी विभाग, गोहाटी विश्वविद्यालय
19.	कुंद कुंद ज्ञानपीठ, इन्दौर मध्य प्रदेश स्थल : अनकन्त जैन मंदिर, सिताधाम विना	भारतीय संस्कृति के विकास में जैन शास्त्र भण्डारों का योगदान	13 मार्च, 2011	डा. फूल चंद जैन प्रेमी विभागाध्यक्ष, दर्शन सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी
20.	संस्कृत सेवा समिति, अहमदाबाद गुजरात स्थल : हेमचन्द्र जैन ज्ञान मन्दिर पठान	भारतीय पाण्डुलिपि सूची: एक तुलनात्मक विश्लेषण	29 मार्च, 2011	प्रो. मनी भाई प्रजापति पूर्व प्राध्यापक (पुस्तकालय विज्ञान) हेमचन्द्र उत्तर गुजरात विश्वविद्यालय, पटन
21.	खुदाबख़्श ओरिएन्टल पब्लिक लाइब्रेरी पटना	अरबी और फ़ारसी छायांकित पांडुलिपियों और अतीत को समझने में उनकी महत्ता	23 मार्च, 2011	प्रो. एस.पी. वारमा टैगोर नेशनल फैलो

वर्ष 2010-11 में आयोजित संगोष्ठि

क्र.स.	सहयोगी संस्थान/स्थान	तिथि	विषय
1.	धर्म नगर सरकारी महाविद्यालय, त्रिपुरा	20-22 नवम्बर, 2010	उत्तर-पूर्व भारत के पाण्डुलिपि संसाधन: संरक्षण और प्रसार की समस्याएँ
2.	प्राच्य शोध संस्थान एवं पाण्डुलिपि संग्रहालय, केरल विश्वविद्यालय	8-10 दिसम्बर, 2010	भारत के चिकित्सा प्रणाली (उपलब्ध पाण्डुलिपियों के विशेष संदर्भ के साथ)
3.	फारसी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय	16-18 दिसम्बर, 2010	फारसी और अरबी पाण्डुलिपि: सामासिक संस्कृति की राष्ट्रीय विरासत
4.	आन्ध्र प्रदेश सरकारी पाण्डुलिपि संग्रहालय एवं शोध संस्थान, हैदराबाद	18-20 मार्च, 2011	संस्कृत एवं द्रविड़ भाषा में दक्षिणी प्रायद्वीप में उपलब्ध छन्दशास्त्र पाण्डुलिपियों के ऊपर एक राष्ट्रीय संगोष्ठी
5.	कुंदकुंद ज्ञानपीठ, इन्दौर	27-29 मार्च, 2011	भारत में गणितीय पाण्डुलिपि पर राष्ट्रीय संगोष्ठी
6.	नागार्जुन बौद्ध फाउंडेशन गोरखपुर, उत्तर प्रदेश	18-20 फरवरी, 2011	बौद्ध संस्कृत टैक्स्ट और उनके संरक्षण पर राष्ट्रीय संगोष्ठी
7.	गुजरात केन्द्रीय विश्वविद्यालय गाँधीनगर, गुजरात	3-6 मार्च, 2011	वैकल्पिक मूलपाठ के रूप में पाण्डुलिपि: एक विशेष पैनल

कृति रक्षण

कृति रक्षण के तीन अंकों को प्रकाशित और जारी किया गया है तथा आगामी अंक के संपादन का कार्य चल रहा है।

विश्व संस्कृत पुस्तक मेला, बंगलुरु में प्रदर्शनी

7-10 फरवरी, 2011 को चार दिनों तक बंगलुरू में विश्व संस्कृत पुस्तक मेला का आयोजन किया गया जिसमें रा.पा.मि. ने अपने द्वारा प्रकाशित पुस्तकों और फ्रेम किए हुए चित्रों की प्रदर्शनी तथा अपनी गतिविधियों के संबंध में स्लाइड शो में भाग लिया।

विश्व संस्कृत पुस्तक मेला अपने तरह का प्रथम कार्यक्रम था। यह एक सुव्यवस्थित कार्यक्रम रहा और इसमें अधिक संख्या में लोगों ने भाग लिया। वास्तव में चार दिन का यह मेला एक प्रकार का अंतर्राष्ट्रीय उत्सव बन गया। कुछ विदेशी आगंतुकों के साथ-साथ देश के सभी भागों से लोगों ने इसमें भाग लिया। बंगलुरु निवासियों के लिए तो यह वास्तव में एक मेला ही था। पुस्तक मेला के अधिकारियों के आकलन के मुताविक इस मेले में स्कूली बच्चों से लेकर अस्सी साल के बूढ़े तक कुल चार लाख लोग मेले में आए। रा.पा.मि. के प्रदर्शनी केंद्र पर चार दिनों में कम से कम अस्सी हजार लोग आए। इसमें ग़ौर करने लायक यह बात रही कि जिज्ञासु स्कूली बच्चे न केवल विशाल संख्या में रा.पा.मि. की प्रदर्शनी में पहुंचे बल्कि पाण्डुलिपियों और उनके महत्व के संबंध में बहुत से प्रश्न भी पूछे।

पूरे देश से विद्वान और शिक्षाविद् इसमें पधारे थे। इसमें सरकारी अधिकारी, गणमान्य व्यक्ति और आम जन पधारे थे। 9 फरवरी को भारत सरकार के माननीय मानव संसाधन विकास राज्य मंत्री (उच्च शिक्षा) डॉ. दग्गूवति पुरन्देश्वरी रा.पा.मि. की प्रदर्शनी में पहुंचे थे और उन्होंने विरासत के संरक्षण के क्षेत्र में रा.पा.मि. के कार्य की सराहना की। उनके साथ भारत के पूर्व मुख्य चुनाव आयुक्त श्री एन. गोपालस्वमी भी मौजूद थे।

रा.पा.मि. का प्रभावी कार्य निष्पादन पूरी तरह से आम लोगों के स्वैच्छिक सहयोग पर निर्भर करता है। इस तरह की प्रदर्शनी जन समर्थन पाने का एक साधन है और जहां तक आम जन और विद्वानों के साथ संपर्क करने की बात है तो यह प्रदर्शनी बहुत ही सफल रही। लोग इस बात को जानने में अधिक इच्छुक थे पाण्डुलिपियों का संरक्षण करके रा.पा.मि. उसकी किस प्रकार मदद कर सकता है। रा.पा.मि. की गतिविधियों और उपलब्धियों के संबंध में सूचना प्रसारित करने के मिशन में प्राथमिक उद्देश्य की लोगों ने बहुत सराहना की।

जनवरी, 2011 में आयोजित विश्व संस्कृत पुस्तक मेला, बंगलुरु में एन.एम.एम. प्रदर्शन

पाण्डुलिपि शास्त्र और पुरातत्त्व लेखन

भारत की पाण्डुलिपि विरासत अपनी भाषायी और ग्रन्थीय विविधता की दृष्टि से अनुपम है। हालांकि समकालीन अनुसंधान में पाठों में कौशल और विशेषज्ञता में कमी ने पाण्डुलिपि विरासत के अध्ययन और समझ के लिए एक गंभीर संकट उत्पन्न कर दिया है। इस समस्या के निदान के लिए रा.पा.मि. ने भारतीय पाठ और पाण्डुलिपि के अध्ययन में छात्रों और अनुसंधानकर्मियों को प्रशिक्षित करने हेतु एक विस्तृत कार्यक्रम तैयार किया है। कार्यशालाओं, विश्वविद्यालयों के पाठ्क्रमों में पाण्डुलिपि शास्त्र की शुरूआत करने तथा उच्च अध्ययन में पाण्डुलिपि शास्त्र के लिए छात्रवृत्ति देने के माध्यम से रा.पा.मि. ने प्रत्यक्ष तौर पर पाण्डुलिपि अध्ययन में प्रशिक्षित लोगों का दल बनाने में सहयोग दे रहा है।

वर्ष 2010-2011 में आयोजित पाण्डुलिपिशास्त्र कार्यशाला

प्राथमिक स्तर

क्र.सं.	सहयोगी संस्थान/स्थान	तिथि	विवरण
1.	मणिपुर राज्य अभिलेखागार इम्फाल	22 अगस्त -11 सितम्बर 2010	**प्रतिभागियों की संख्या: 35** **लिपियों सिखाया:** ब्राह्मी, ग्रंथ, बंगाली, ओडीया, मितै
2.	आई.जी.एन.सी.ए. वाराणसी क्षेत्रीय केन्द्र वाराणसी, उत्तर प्रदेश	9-30 नवम्बर 2010	**प्रतिभागियों की संख्या: 20** **सिखायी गई लिपियाँ:** शारदा और नेवारी **पाण्डुलिपि संपादित** 1. नाट्यशास्त्र (13 एवं 14 अध्याय) 2. गणितप्रकाश 3. मयूरचित्रक 4. वास्तुराजवल्लभ
3.	केलाडी पाण्डुलिपि संसाधन केन्द्र केलाडी संग्रहालय जिला सिमुगा कर्नाटक	17 नवम्बर -1 दिसम्बर 2010	**प्रतिभागियों की संख्या: 35** **सिखायी गई लिपियाँ:** कन्नड मोडी, माराठी मोडी, तिगलरी, नन्दीनागरी, देवनागरी
4.	रवीन्द्र भारती विश्वविद्यालय कोलकाता	11-28 फरवरी 2011	**प्रतिभागियों की संख्या: 32** **सिखायी गई लिपियाँ:** पुरातन बंगला एवं गोडी
5.	सी.ई.एल.एम.एफ बंगला विभाग, आसाम विश्वविद्यालय, शिलचर	3-18 फरवरी 2011	**प्रतिभागियों की संख्या: 31** **सिखायी गई लिपियाँ:** पुरातन बंगला एवं गोडी
6.	बसन्तराव नायक सरकारी कला एवं समाज विज्ञान संस्थान नागपुर, महाराष्ट्र	12-21 फरवरी 2010	**प्रतिभागियों की संख्या: 40** **सिखायी गई लिपियाँ:** शारदा, शंख एवं नागरी
7.	अरबी एवं उर्दू एवं फारसी विभाग कलीकट विश्वविद्यालय, केरला	7-19 फरवरी 2010	**प्रतिभागियों की संख्या: 39** **सिखायी गई लिपियाँ:** नास्तलिक, कुफी एवं मलयाली

उच्चतर स्तर			
क्र.सं.	**सहयोगी संस्थान/स्थान**	**तिथि**	**विवरण**
1.	मैसूर प्राच्य शोध संस्थान एवं विज्ञान का इतिहास विभाग, मैसूर विश्वविद्यालय कर्नाटक	25 मार्च – 7 मई, 2010	**प्रतिभागियों की संख्या: 40** **सिखायी गई लिपियाँ:** ब्राह्मी, कन्नड़ एवं ग्रन्थ **पाठ संपादित:** 1. सुभाषितकोशुभ 2. तत्त्वसंग्रह 3. बोध्यायन-आधनप्रयोग
2.	एल.डी. प्राच्यविद्या संस्थान अहमदाबाद	25 मार्च – 7 मई, 2010	**प्रतिभागियों की संख्या: 42** **सिखायी गई लिपियाँ:** ब्राह्मी, देवनागरी एवं गुजराती **पाठ संपादित:** 1. छन्दपहचारियम 2. सिंहासनवत्तीसी 3. अनुमानखण्डनम्
3.	चिन्मय इंटरनेशनल फाउंडेशन एवं शोध संस्थान, एर्नाकुलम, केरल	1 नवम्बर – 10 दिसम्बर 2010	**प्रतिभागियों की संख्या: 22** **सिखायी गई लिपियाँ:** शारदा, नागरी गन्थ्र एवं नेवारी **पाठ संपादित:** 1. सामग्रीवाद 2. शतकोटीखण्डनम् 3. भाषकुसुममंजरी 4. स्मृतितत्वमणि 5. एकश्लोकिव्याख्याय
4.	रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर मध्य प्रदेश	8 फरवरी – 24 मार्च, 2010	**प्रतिभागियों की संख्या: 35** **सिखायी गई लिपियाँ:** शारदा एवं नेवारी **पाठ संपादित:** 1. मनस्थीरीप्रकरन
5.	कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय हरियाणा	23 मार्च – 6 मई, 2011	**प्रतिभागियों की संख्या: 35** **सिखायी गई लिपियाँ:** शारदा एवं नेवारी **पाठ संपादित:** 1. न्यायसदर्थसंग्रह 2. कोशिकामतानुसारिणी शिखा 3. कैलाशकारक 4. कठिनावदान 5. कपीशावदान

(9-30 नवम्बर, 2010 को) इं.गां.रा.क. के, बनारस क्षेत्रीय केन्द्र, बनारस में आयोजित पाण्डुलिपिशास्त्र कार्यशाला के दौरान संपादन में व्यस्त प्रतिभागी

25 अगस्त, 2010 को शिमला में आयोजित जागरूकता कार्यक्रम के दौरान जिज्ञासु विद्यालयी बच्चे

प्रकाशन

अप्रकाशित पाण्डुलिपियों, पाण्डुलिपियों के विवेचनात्मक संस्करणों, संगोष्ठि आलेखों और व्याख्यानों आदि के प्रकाशन पर रा.पा.मि. के कार्यक्रमों में विशेष जोर दिया जाता है। रा.पा.मि. ने प्रारंभिक रूप में प्रकाशन की पांच शृंखला प्रारंभ की है - तत्त्वबोध (व्याख्यान आलेख), कृतिबोध (विवेचनात्मक संस्करण), समीक्षिका (संगोष्ठि आलेख), संरक्षिका (संरक्षण संबंधी संगोष्ठि आलेख) और प्रकाशिका (अप्रकाशित पाण्डुलिपियों का प्रकाशन)। इसके साथ ही अन्य प्रकाशन भी उपलब्ध हैं। अभी तक रा.प.मि. ने तत्त्वबोध के अंतर्गत तीन पुस्तकों का, *कृतिबोध* के अंतर्गत दो पुस्तकों का, *समीक्षिका* के अंतर्गत तीन और संरक्षिका के तहत दो पुस्तकों को प्रकाशित किया है। *तत्वबोध 4, समीक्षिका 3 और प्रकाशिका* 1 का संपादन कार्य हो रहा है।

अप्रकाशित पाण्डुलिपियों के प्रकाशन को बढ़ावा देने के लिए रा.पा.मि. ने भारत के विभिन्न पाण्डुलिपि भंडारों में उपलब्ध 300 महत्त्वपूर्ण अप्रकाशित पाण्डुलिपियों की सूची तैयार की है। 200 और पाण्डुलिपियों के चयन करने के बाद कुल 500 पाण्डुलिपियों की सूची एक समिति को सुपुर्द की जाएगी जो उनमें से 100 पाण्डुलिपियों का चयन करेगी। उसके बाद इन्हें *कृतिबोध* शृंखला के तहत प्रकाशित की जाएगी।

रा.पा.मि. प्रकाशन

तत्त्वबोध मासिक व्याख्यान की शुरूआत राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन ने जनवरी 2005 में की थी। अब यह बौद्धिक बहस और परिचर्चा के एक मंच के रूप में उभर गया है। भारत में ज्ञान के विभिन्न क्षेत्र में साधनारत विभिन्न विद्वानों ने दिल्ली तथा देश भर के अन्य केंद्रों में सभा को संबोधित किया है तथा श्रोताओं के साथ परिचर्चा की है।

मिशन ने इन व्याख्यानों का प्रकाशन **तत्त्वबोध** नाम से किया है। अभी तक **तत्त्वबोध** के तीन खंडों का प्रकाशन किया जा चुका है।

तत्त्वबोध खंड - 1
संपादन: सुधा गोपालकृष्णन
प्रकाशक: राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन, नयी दिल्ली और मुंशीराम मनोहरलाल प्रकाशक पब्लिशर्स प्रा. लि., नयी दिल्ली
पृष्ठ: 164
मूल्य: रू. 325/-

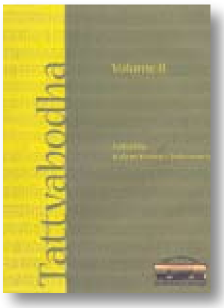

तत्त्वबोध खंड – 2
संपादन: कल्याण कुमार चक्रवर्ती
प्रकाशक: राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन, नयी दिल्ली और मुंशीराम मनोहरलाल प्रकाशक पब्लिशर्स प्रा. लि., नयी दिल्ली
पृष्ठ: 194
मूल्य: रू. 350/-

तत्त्वबोध खंड – 3
संपादन: प्रो. दीप्ति एस. त्रिपाठी
प्रकाशक: राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन, नयी दिल्ली और देव बुक्स, नयी दिल्ली
पृष्ठ: 240
मूल्य: रू. 350/-

राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन अपने संपर्क कार्यक्रम के अंतर्गत राष्ट्रीय स्तर पर संगोष्ठियों का आयोजन करता है। इन संगोष्ठियों में प्रस्तुत आलेखों को संरक्षिका (संरक्षण से जुड़े) और समीक्षिका (अनुसंधान उन्मुखी) शीर्षक से प्रकाशित किया जाता है।

संरक्षिका का प्रथम खंड 'पाण्डुलिपि परिरक्षण की देशी विधि' का प्रकाशन सितम्बर 2006 में किया गया। इसमें फरवरी 2005 में राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन के नयी दिल्ली मुख्यालय में प्रारंभ संगोष्ठि 'परिरक्षण की देशी विधि और पाण्डुलिपि संरक्षण' की कार्यवाही शामिल है। इस संगोष्ठि में प्रस्तुत आलेखों में पाण्डुलिपि संरक्षण की देशी विधि और तकनीकी के साथ-साथ उन्हें पुनर्जीवित करने की आवश्यकता पर बल दिया गया है क्योंकि यह पाण्डुलिपियों के लिए अधिक लाभकारी हैं।

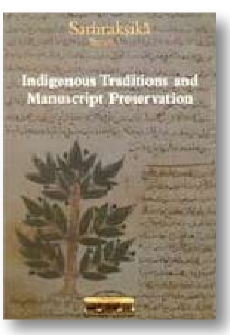

संरक्षिका खंड – 1
पाण्डुलिपि परिरक्षण की देशी विधि
संपादन: सुधा गोपालकृष्णन
खंड संपादन: अनुपम साह
प्रकाशक: राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन, नयी दिल्ली और डी. के. प्रिंटवर्ल्ड (प्रा.) लिमि., नयी दिल्ली
पृष्ठ: 253
मूल्य: रू. 350/-

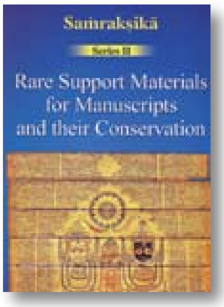

संरक्षिका खंड - 2

पाण्डुलिपि और उनके संरक्षण के लिए दुर्लभ सहायक सामग्री

संपादन: श्री के. के. गुप्ता

प्रकाशक: राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन, नयी दिल्ली और देव बुक्स, नयी दिल्ली

पृष्ठ: 102

मूल्य: रू. 200/-

समीक्षिका - 1 में **'भारत में बौद्ध साहित्य की विरासत : पाठ और संदर्भ'** विषय पर आयोजित संगोष्ठि की कार्यवाही है। इसका आयोजन जुलाई 2005 में कलकत्ता विश्वविद्यालय पाण्डुलिपि संसाधन केंद्र, कोलकाता में किया गया था।

समीक्षिका - 2 में राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन द्वारा फरवरी 2007 में महाभारत पर आयोजित संगोष्ठि के आलेखों का प्रकाशन किया गया है। यह खंड 'महाभारत के पाठ और उनमें अंतर: संदर्भ, क्षेत्रीय और मंचीय परंपरा' के ऊपर है। राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन

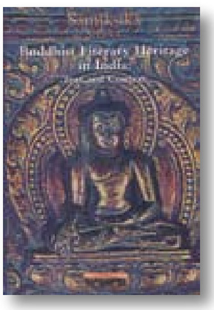

समीक्षिका खंड - 1

भारत में बौद्ध साहित्य की विरासत

संपादन: प्रो. रत्ना बसु

प्रकाशक: राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन, नयी दिल्ली और मुंशीराम मनोहरलाल प्रकाशक पब्लिशर्स प्रा. लि., नयी दिल्ली

पृष्ठ: 158

मूल्य: रू. 325/-

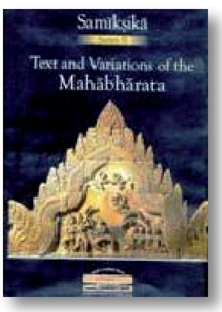

समीक्षिका खंड - 2

महाभारत के पाठ और उनमें अंतर

प्रकाशक: राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन, नयी दिल्ली और मुंशीराम मनोहरलाल प्रकाशक पब्लिशर्स प्रा. लि., नयी दिल्ली

प्रकाशन वर्ष: 2009

पृष्ठ: 335

मूल्य: रू. 500/-

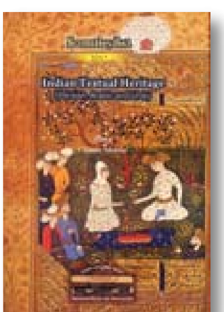

समीक्षिका खंड - 4

भारतीय ग्रन्थ विरासत : फारसी, अरबी और उर्दू

प्रकाशक: राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन, नयी दिल्ली और किताब घर, दिल्ली

संपादन: प्रो. चंद्रशेखर

सर्व संपादन: प्रो. दीप्ति एस. त्रिपाठी

प्रकाशन वर्ष: 2011

पृष्ठ: 368

मूल्य: रू. 350/-

ने कृतिबोध शीर्षक के अंतर्गत अप्रकाशित और दुर्लभ सामग्रियों के समीक्षात्मक संस्करण प्रकाशित करने की पहल की है।

कृतिबोध श्रृंखला में पहला खंड है नारायण मिश्र का वाधूला गृहागमवृत्तिरहस्यम। इसका संपादन प्रो. बृज बिहारी चौबे ने किया। यह ग्रंथ वाधूला गृहसूत्रवृत्ति पर एक काव्यात्मक भाष्य है और जो कि स्वयं वाधूलागृहसूत्र पर एक संक्षिप्त भाष्य है। इस ग्रंथ में पारिवारिक कर्मकांड और संस्कार विशेषकर गृह और स्मार्त कर्म से संबंधित सूचनाओं का भंडार है। इसमें कथा अरण्यक, वधूलागम और व्रत संग्रह जैसे ग्रंथों का उल्लेख है जो अभी तक अज्ञात थे।

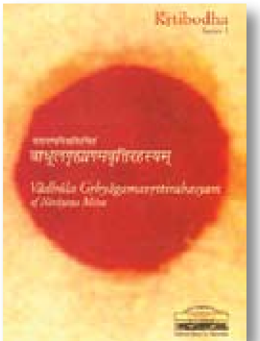

कृतिबोध खंड - 1
नारायण मिश्र कृत वाधूला गृहागमवृत्तिरहस्यम
संपादन: ब्रज बिहारी चौबे
सर्व संपादन: सुधा गोपालकृष्णन
प्रकाशक: राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन, नयी दिल्ली और डी. के. प्रिंटवर्ल्ड (प्रा.) लिमि., नयी दिल्ली
पृष्ठ: 472
मूल्य: रू. 550/-

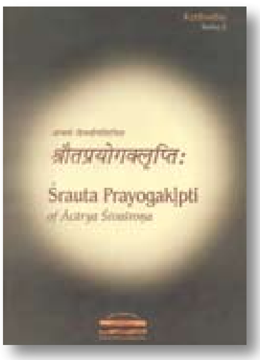

कृतिबोध खंड - 2
आचार्य शिवश्रोण कृत वाधूला श्रौत प्रयोगक्लिप्ति
संपादन: ब्रज बिहारी चौबे
सर्व संपादन: प्रो. दीप्ति एस त्रिपाठी
प्रकाशक: राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन, नयी दिल्ली और डी. के. प्रिंटवर्ल्ड (प्रा.) लिमि., नयी दिल्ली
पृष्ठ: 218
मूल्य: रू. 250/-

सन् 2011 में रा.पा.मि. ने प्रकाशिका नाम से एक नई श्रृखंला की शुरूआत की। इसके तहत दुर्लभ अप्रकाशित पाण्डुलिपियों का प्रकाशन किया जाता है। इस श्रृंखला का प्रथम खंड, फारसी ग्रंथ दीवानज़ादा बाजार में उपलब्ध है।

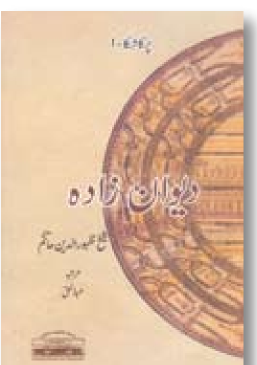

प्रकाशिका खंड - 1
दीवाज़ादा
संपादन: प्रो. अब्दुल हक़
सर्व संपादन: प्रो. दीप्ति एस. त्रिपाठी
प्रकाशक: राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन, नयी दिल्ली और किताब घर, दिल्ली
पृष्ठ: 454
मूल्य: रू. 250/-

मिशन संपूर्ण देश में न केवल पाण्डुलिपि संग्रहों के प्रलेखन को बढ़ावा देता है बल्कि इन्हें प्रकाशित करने की योजना भी बनाता है। मिशन के साथ जुड़े सभी पाण्डुलिपि संसाधन केन्द्रों के संपूर्ण संग्रहों की विवरणात्मक सूचियों के प्रकाशन का कार्यक्रम भी मिशन के पास है।

मिशन ने फ्रैंकफर्ट पुस्तक मेला में भारतीय पाण्डुलिपियों की प्रदर्शनी सूची प्रकाशित की थी। इन सूचियों में भारतीय पाण्डुलिपियों के कई पहलुओं को स्पर्श किया गया है। यह छः भागों में विभाजित है: मिट्टी से लेकर ताम्र तक जो पाठ अंकित होने वाली विभिन्न आधार सामग्रियों की सूचना देते हैं। 'पाण्डुलिपि का निर्माण' भाग में शलाका और दवात के संबंध में सूचना हैं। 'अध्ययन के क्षेत्र' भाग के अंतर्गत पाण्डुलिपि से संबंधित विभिन्न क्षेत्रों के संबंध में सूचनाएं हैं। 'अर्चना, समर्पण और पूजा' भाग के अंतर्गत पावन शब्दों के महत्त्व को दिखाया गया है। पांचवें भाग में 'शब्द और छवि' के अंतर्गत देश की चित्रित पाण्डुलिपियों की छवि पर प्रकाश डाला गया है। अंतिम भाग 'राजकीय आदेश और सरल रेकार्ड' उस तथ्य की ओर संकेत देते हैं कि पाण्डुलिपियां राजा से लेकर आम जन के जीवन के अभिन्न अंग थे।

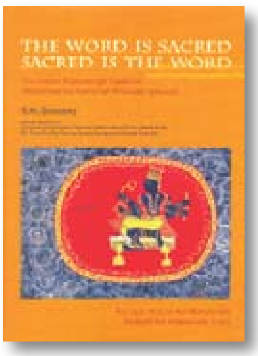

पावन शब्द और शब्द की पावनता

पावन शब्द और शब्द की पावनता – भारतीय पाण्डुलिपि परंपरा बी.एन. गोस्वामी द्वारा संपादित ग्रंथ है। इसमें धृतब्रत भट्टाचार्य, यशस्विनी चन्द्रा, काकुल फातिमा, जगदीश मित्तल, डी. के. राना, रीता देवी शर्मा, संयुक्ता सुदर्शन और गीतांजलि सुदर्शन के आलेख हैं।

प्रकाशक: राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन, नयी दिल्ली और नियोगी ऑफसेट प्रा. लि., नयी दिल्ली

पृष्ठ: 248

मूल्य: रू. 1850/-

विज्ञाननिधि: भारत की पाण्डुलिपि निधि मिशन द्वारा तैयार चुनिंदा पाण्डुलिपियों के संग्रह को 'विज्ञाननिधि: भारत की पाण्डुलिपि निधि' नाम से घोषित किया गया है। इसे फरवरी 2007 में आयोजित एक समारोह में तत्कालीन पर्यटन और संस्कृति मंत्री श्रीमती अम्बिका सोनी ने जारी की थी। इसी समारोह में दस लाख पाण्डुलिपियों के डाटाबेस को वेब पर डाला गया था।

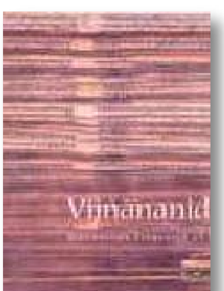

विज्ञाननिधि: भारत की पाण्डुलिपि निधि

प्रकाशक: राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन, नयी दिल्ली

पृष्ठ: 144

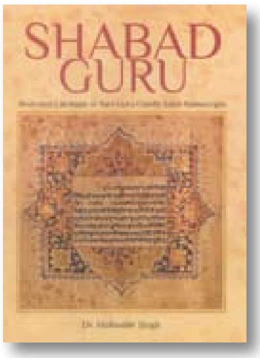

सबद गुरु

दुर्लभ गुरु ग्रंथ साहिब पाण्डुलिपियों की चित्रित सूची

संपादक: डॉ महेन्द्र सिंह

प्रकाशक: राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन, नयी दिल्ली और पंजाब अध्ययन राष्ट्रीय संस्थान, नयी दिल्ली

पृष्ठ: 193

मिशन निर्देशिका

प्रो. दीप्ति एस. त्रिपाठी
निदेशक

पं. सत्कारी मुखोपाध्याय
सलाहकार (पाण्डुलिपि)

श्री आर. एम. नवानी
आंतरिक वित्तीय परामर्शक

श्री एस. पी. स्वामी
व. लेखा अधिकारी एवं संयोजक, एम.आर.सी.तथा एम.सी.सी.

प्रलेखन

डॉ. गणेश प्रसाद पाण्डा
संयोजक

प्रलेखन सहायक

डॉ. प्रभात कुमार दास
श्री शिव प्रसाद त्रिपाठी
डॉ. अवध किशोर चौधरी
श्री अब्दुर राज़ीक़
श्री राम अवतार शर्मा
श्री लक्ष्मीधर पाणिग्रही
सुश्री प्रमिता मिश्रा
श्री श्रीधर बारीक

सूचीकार

सुश्री ममता लेखवार
सुश्री शीजा टी.
सुश्री दीप्ति नेगी
सुश्री लक्ष्मी रावत
श्री मुकेश जनोत्रा
सुश्री लता गोहरी
सुश्री शर्मिष्ठा सेन
श्री दीपक कोच्चर

सर्वेक्षण

डॉ. दिलीप कुमार कार
संयोजक

सर्वेक्षण के बाद

डॉ. एन. सी. कर
संयोजक

अनुसंधान एवं प्रकाशन

डॉ. संघमित्रा बसु
संयोजक

श्री मृण्मय चक्रवर्ती,
संपादक, कृति रक्षण

संरक्षण

डॉ. कीर्ति श्रीवास्तव
संयोजक

सांख्यिकीकरण

श्री विश्वरंजन मलिक
संयोजक

प्रोग्रामर

श्री प्रणय कुमार मिश्रा
श्री मोहम्मद मंसूर अख्तर

लेखा और कार्यालय सहायक

सुश्री दीपा चोपड़ा, निजी सहायक
सुश्री स्नेहलता, लेखा सहायक

चपरासी

श्रीमती कमला रावत
श्री मोहित कुमार करोटिया
श्रीमती सुशीला

राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन प्रशासनिक समिति

राष्ट्रीय अधिकारप्राप्त समिति

पदेन सदस्य

1. संस्कृति मंत्री, भारत सरकार – अध्यक्ष
2. सचिव, संस्कृति मन्त्रालय – सदस्य
3. सदस्य सचिव, इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, नयी दिल्ली
4. संयुक्त सचिव, संस्कृति मन्त्रालय, भारत सरकार – सदस्य
5. निदेशक, राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन
6. महानिदेशक, भारतीय राष्ट्रीय अभिलेखागार, नयी दिल्ली – सदस्य

मनोनित सदस्यों नामित करने की प्रक्रिया चल रही है।

कार्यकारी समिति

पदेन सदस्य

1. सचिव, संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार – अध्यक्ष
2. सदस्य सचिव, इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, नयी दिल्ली – सदस्य
3. संयुक्त सचिव, संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार – सदस्य
4. निदेशक, राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन – सदस्य

मनोनित सदस्यों नामित करने की प्रक्रिया चल रही है।

वित्त समिति

1. ए.एस.एफ.ए., संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार – अध्यक्ष
2. सदस्य सचिव, इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, नयी दिल्ली – सदस्य
3. संयुक्त सचिव, संस्कृति मन्त्रालय, भारत सरकार – सदस्य
4. निदेशक, वित्त, संस्कृति मन्त्रालय, भारत सरकार – सदस्य
5. मिशन निदेशक, राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन – सदस्य

परियोजना अनुवीक्षण समिति

1. संयुक्त सचिव, इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, नयी दिल्ली – अध्यक्ष
2. निदेशक, संस्कृति मन्त्रालय, सदस्य
3. निदेशक, राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन – सदस्य
4. प्रो. एच. के. सतपथी, कुलपति, राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, तिरूपति – सदस्य
5. डॉ. इम्तियाज़ अहमद, निदेशक, खुदाबख़्श पुस्तकालय, पटना – सदस्य
6. डॉ. जीतेन्द्र शाह – निदेशक, लालभाई दलपतभाई भारतविद्या संस्थान, अहमदाबाद – सदस्य
7. डॉ. नवीन पंत – निदेशक, नव नालंदा महाविहार, नालंदा – सदस्य

राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन का क्रियाशील नेटवर्क (सहयोगी संस्थान)

विश्व में पाण्डुलिपि का सबसे बड़ा भंडार भारत में है और यह भंडार पूरे देश में फैला हुआ है। अतएव पाण्डुलिपियों के प्रलेखन, संरक्षण, सांख्यिकीकरण और प्रसार के लक्ष्य को पूरा करने के लिए देश भर में संबंधित गतिविधियों के केन्द्रों के एक समूह (नेटवर्क) की आवश्यकता होती है। राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन संपूर्ण देश में स्थापित विभिन्न प्रकार के केन्द्रों के माध्यम के कार्य करता है: **1. पाण्डुलिपि संसाधन केन्द्र (एम.आर.सी.), 2. पाण्डुलिपि संरक्षण केन्द्र (एम.सी.सी.), 3. पाण्डुलिपि सहयोगी केन्द्र (एम.पी.सी.) तथा 4. पाण्डुलिपि संरक्षण सहयोगी केन्द्र (एम.सी.पी.सी.)।**

पाण्डुलिपि संसाधन केन्द्र (एम.आर.सी.)

अखिल भारतीय संस्कृत परिषद्
देव वाणी मार्ग
सेक्टर-बी, अलीगंज
लखनऊ-226 024
उत्तर प्रदेश

आनंदाश्रम संस्थान
22, बुधवार पेठ
पुणे-411 002
महाराष्ट्र

आन्ध्र प्रदेश सरकार ओरिन्टल मैन्युस्क्रिप्ट लाइब्रेरी एण्ड रिसर्च इंस्टीट्यूट
उस्मानिया यूनिवर्सिटी कैम्पस
हैदराबाद-500 007
आन्ध्र प्रदेश

बी.सी. गुप्ता मैमोरियल लाइब्रेरी
गुरु चरण कॉलेज
सिल्चर-788 004
असम

भण्डारकर ओरिएन्टल रिसर्च इंस्टीट्यूट
812, शिवाजी नगर
डेक्कन जिमखाना
पुणे-411 037
महाराष्ट्र

डिपार्टमेंट ऑफ कल्चर एण्ड आर्कियोलॉजी
रायपुर
छत्तीसगढ़

भोगीलाल लहरचन्द इंस्टीट्यूट ऑफ इन्डोलॉजी
विजय वल्लभ स्मारक कॉमप्लेक्स
20वां कि.मी., जी.टी. करनाल रोड
पी.ओ. अलीपुर
दिल्ली-36

कलकत्ता यूनिवर्सिटी मैन्युस्क्रिप्ट लाइब्रेरी
हार्डिंग्स बिल्डिंग, पहली मंजिल
87/1, कॉलेज स्ट्रीट
कलकत्ता-700 073

सेन्ट्रल इंस्टीट्यूट ऑफ बुद्धीस्टि स्टडीज़
चोगलामसर
लेह (लद्दाख)-194 001
जम्मू और कश्मीर

सेन्टर फॉर हेरिटेज स्टडीज़
त्रिपुनीथुरा हिल पेलैस
एर्नाकुलम् (केरल)

डिमार्टमेंट ऑफ आर्कियोलॉजी
तमिल वालरची वालागम,
हॉल्स रोड, एगमोर
चेन्नई-600 008

त्रिपुरा यूनिवर्सिटी
सूर्यमणी नगर-799130
अगरतला
त्रिपुरा

सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय
वाराणसी-221 001
उत्तर प्रदेश

एच०एन०बी० गढ़वाल यूनिवर्सिटी
पौड़ी गढ़वाल-246 001
उत्तरांचल

कुरुक्षेत्र यूनिवर्सिटी
कुरुक्षेत्र-136 119
हरियाणा

डायरेक्टरेट ऑफ स्टेट आर्कियोलॉजी आर्काइव्स एण्ड म्यूजियम
स्टोन बिल्डिंग, ओल्ड सिक्रेटरीएट
श्रीनगर-190 001
जम्मू और कश्मीर

श्री चन्द्रशेखरेन्द्र सरस्वती विश्व महाविद्यालय, एनाथुर
कांचीपुरम्-631 561
तमिलनाडु

फ्रेन्च इंस्ट्रीट्यूट ऑफ पांडिचेरी
11, संत लुईस स्ट्रीट
पी.बी. नं. 33
पुडुच्चेरी

हिमाचल अकेडमी ऑफ आर्ट्स कल्चर एण्ड लैंग्वेज
क्लिफ-एण्ड एस्टेट
शिमला-171 001
हिमाचल प्रदेश

इंस्ट्रीट्यूट ऑफ ताई स्टडीज़ एण्ड रिसर्च
मोरान हाट-785 670
असम

कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत यूनिवर्सिटी
दरभंगा-846 004
बिहार

कविकुलगुरु कालिदास यूनिवर्सिटी
बघला भवन, सीतालवड़ी
मंडा रोड, रामटेक
महाराष्ट्र-441 106

केलडी म्यूज़ियम एण्ड हिस्टोरिकल रिसर्च
केलडी, सागर तालुक
जिला-शिमोगा
कर्नाटक-577 401

कुंदकुंद ज्ञानपीठ
584, एम.जी. रोड, तुकोगंज
इन्दौर-452 001
मध्य प्रदेश

लालभाई दलपतभाई इंस्टीट्यूट ऑफ इंडोलॉजी
नवरंगपुरा
अहमदाबाद-380 009
गुजरात

मणिपुर स्टेट आर्काइव्स
कैसामपत्
इम्फाल-795 001
मणिपुर

कन्नड यूनिवर्सिटी
हम्पी, विद्यारण्य-583 276
जिला-बेलारी
कर्नाटक

मजहर मैमोरियल म्यूजियम
बाहरियाबाद
गाजीपुर-275 208
उत्तर प्रदेश

भाई वीर सिंह साहित्य सदन
गोल मार्केट
नयी दिल्ली

नव नालंदा महाविहार
नालंदा-803111
बिहार

प्राच्य शोध संस्थान एवं पाण्डुलिपि लाइब्रेरी
यूनिवर्सिटी ऑफ केरल
करीयावट्टम
तिरुवनंतपुरम्-695 581
केरल

प्राच्य शोध संस्थान
श्री वेंकटेश्वर यूनिवर्सिटी
तिरुपति-517 502
आन्ध्र प्रदेश

प्राच्य शोध संस्थान
कौटिल्य सर्कल
मैसूर-570 005

उड़ीसा राज्य अभिलेखागार
म्यूजियम बिल्डिंग
भुवनेश्वर
उड़ीसा

पटना अभिलेखागार
विद्यापति मार्ग
पटना-800 001

राजस्थान प्राच्य शोध संस्थान
पी.डब्ल्यू.डी. रोड
जोधपुर-342 001
राजस्थान

सरस्वती
सरस्वती विहार
भद्रक-756 113
उड़ीसा

श्री द्वारकाधीश संस्कृत अकादमी एवं
भारत विद्या शोध संस्थान
द्वारका-361 335
गुजरात

श्री देव कुमार जैन प्राच्य शोध संस्थान
देवाश्रम, महादेव रोड
आरा-802 301
बिहार

श्री सतश्रुत प्रभावना ट्रस्ट
बी-17, इन्द्रपुरी कलोनी, लालकोठी
जयपुर-302 015

थुंचन मैमोरियल ट्रस्ट
थुंचन परमभु, थिरुर
मालापुरम्-676 101
केरल

नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ प्राकृत स्टडीज़ एण्ड रिसर्च
श्री धवल तीर्थम्
श्रवणबेलगोला-573 135
कर्नाटक

महाभारत संशोधन प्रतिष्ठान
आई/ई, 3 क्रॉस
गिरीनगर
बंगलौर-560 085

रामपुर राजा लाइब्रेरी
हमीद मंजिल
रामपुर, 244 901
उत्तर प्रदेश

वृंदावन शोध संस्थान
रमन रेती, वृंदावन-281 121
उत्तर प्रदेश

तंजावुर महाराजा सरफोजी सरस्वती महल लाइब्रेरी
तंजावुर-613 009
तमिलनाडु

सिन्धिया ओरिएन्टल रिसर्च इंस्टीट्यूट
विक्रम यूनिवर्सिटी
उज्जैन
मध्य प्रदेश

कृष्णकांत हान्डीक लाइब्रेरी
गोहाटी यूनिवर्सिटी
गोपीनाथ बरदोलई नगर
गुवाहाटी-781 014
असम

के.एम. हिन्दी विद्या एवं भाषा विज्ञान संस्थान
डॉ. बी.आर. अम्बेडकर यूनिवर्सिटी
पालीवाल पार्क
आगरा-282 001
उत्तर प्रदेश

विश्वेश्वरानन्द विश्वबंधु
संस्कृत एवं प्राच्यविद्या शोध संस्थान
साधु आश्रम, ऊना रोड
होशियारपुर-146 021
पंजाब

उत्तरांचल संस्कृत अकादमी
संस्कृत भवन, दिल्ली हाइवे, ज्वालापुर
हरिद्वार-249 407
उत्तराखंड

लाईब्रेरी ऑफ तिबेतन वर्क्स एण्ड आर्काइव्स
गंगचेन काइसंग
धर्मशाला-176 215
हिमाचल प्रदेश

खुदाबख़्श ओरिएण्टल पब्लिक लाइब्रेरी
अशोक राजपथ
पटना-800 004
बिहार

डिपार्टमेंट ऑफ तमिल
यूनिवर्सिटी ऑफ मद्रास, मरीना कैम्पस
चेन्नई-600 005
तमिलनाडु

पाण्डुलिपि संरक्षण केन्द्र (एम.सी.सी.)

ऐतिह्य
प्लाट न. 4/330, पहली मंजिल
पी.ओ.-रघुनाथपुर
शिशुपाल गढ़
पुरी रोड
भुवनेश्वर (उड़ीसा)

अकलंक शोध संस्थान
अकलंक विद्यालय एसोसिएशन
वसंत विहार
कोटा-324 009
राजस्थान

दिगम्बर जैन पशुपति स्मारक केन्द्र
जैन विद्या स्मारक,
दिगम्बर जैन नसिम भटारकजी
सवाई मानसिंह रोड
जयपुर-302 004
राजस्थान

भण्डारकर ओरिएन्टल रिसर्च इंस्टीट्यूट
812, शिवाजी नगर
डेक्कन जिमखाना
पुणे-411 037
महाराष्ट्र

मजहर मेमोरियल म्यूजियम
बाहरीयाबाद, गाजीपुर
उत्तर प्रदेश-275 208

ए.पी. स्टेट आर्काइव्स एण्ड रिसर्च इंस्टीट्यूट
तारनाका
हैदराबाद-7

भोगीलाल लहरचंद इंस्टीट्यूट ऑफ इन्डोलॉजी
विजय वल्लभ स्मारक काम्पलेक्स
20वीं कि.मी., जी.टी. करनाल रोड
पी.ओ. अलीपुर
दिल्ली-36

सेन्ट्रल लाइब्रेरी
बनारस हिन्दू यूनिवर्सिटी
वाराणसी-221 005
उत्तर प्रदेश

डिपार्टमेंट ऑफ मैन्युस्क्रिप्टोलॉजी
कन्नड यूनिवर्सिटी
हम्पी विश्व विद्यालय-583 276
जिला-बेलारी
कर्नाटक

डिपार्टमेंट ऑफ लैंग्वेज एण्ड कल्चर
हिमाचल प्रदेश स्टेट म्यूजियम
शिमला
हिमाचल प्रदेश-171 004

इनटेक, चित्रकला परिषद आर्ट
कंर्जवेशन सेन्टर
कुमार कृपा रोड
बंगलौर-560 001

इंडियन काउंसिल ऑफ कंर्ज़्वेशन इंस्टीट्यूट
एच.आई.जी.-44, सेक्टर-ई
अलीगंज स्कीम
लखनऊ-226024
उत्तर प्रदेश

इनटेक आई.सी.आई.-उड़ीसा आर्ट कंर्ज़्वेशन सेन्टर
उड़ीसा स्टेट म्यूजियम प्रेमिसेस
भुवनेश्वर-751 014
उड़ीसा

कुन्दकुन्द ज्ञानपीठ
584, एम.जी. रोड, तुकोगंज
इन्दौर-452 001

मैन्युस्क्रिप्ट लाइब्रेरी
यूनिवर्सिटी ऑफ कलकत्ता
87/1, हार्डिंग बिल्डिंग (पहली मंजिल)
कॉलेज स्ट्रीट,
कलकत्ता-700 073

केलाडी म्यूजियम एण्ड हिस्टॅरीकिल रिसर्च
केलाडी, सागर तालुक, जिला-शिमोगा
कर्नाटक-577 401

डिपार्टमेंट ऑफ संस्कृत, पाली एण्ड प्राकृत
कुरुक्षेत्र यूनिवर्सिटी
कुरुक्षेत्र-136 119
हरियाणा

कृष्ण कान्त हन्दीकइ लाइब्रेरी
गोहाटी यूनिवर्सिटी
गुवाहाटी-781 014
असम

नागार्जुन बुद्धिस्ट फाउडेंशन
18, (सी-143/22), अंधियारी बाग
गोरखपुर-273 001
उत्तर प्रदेश

नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ प्राकृत स्टडीज एण्ड रिसर्च
श्री धवलतीर्थ
श्रवणबेलगोला-573 135
जिला-हासन
कर्नाटक

मणिपुर स्टेट आर्काइव्स
कैसामपत्
इम्फाल-795 001
मणिपुर

उड़ीसा स्टेट म्यूज़ियम
म्यूज़ियम बिल्डिंग
भुवनेश्वर
उड़ीसा-751 014

सेन्टर फॉर हेरीटेज स्टडीज़
त्रिपुनीथुरा हिल पेलैस
एर्णाकुलम्
केरल

डिपार्टमेंट ऑफ कल्चर एण्ड आर्कियोलॉजी
रायपुर
छत्तीसगढ़

राजस्थान ओरिएन्टल रिसर्च इंस्टीट्यूट
पी.डब्ल्यू.डी. रोड
जोधपुर-342 001
राजस्थान

पी.जी. डिपार्टमेंट ऑफ हिस्ट्री
सम्बलपुर यूनिवर्सिटी
ज्योति विहार
सम्बलपुर-768 019
उड़ीसा

बी.सी. गुप्ता मेमोरियल लाइब्रेरी
गुरु चरण कॉलेज
सिल्चर-788 004
असम

पटना म्यूजियम
विद्यापति मार्ग
पटना-800 001
बिहार

त्रिपुरा यूनिवर्सिटी
सूर्यमणिनगर-799130
अगरतला
त्रिपुरा

वृंदावन शोध संस्थान
रमन रेती
वृंदावन-281 121
उत्तर प्रदेश

गवर्नमेन्ट म्यूजियम
एगमोर
चेन्नई-600 008
तमिलनाडु

सेंट्रल इंस्टीट्यूट ऑफ बुद्धिस्ट स्टडीज
चोगलमसर
लेह (लद्दाख)
जम्मू और कश्मीर-194 104

श्री देव कुमार जैन प्राच्य शोध संस्थान
देवाश्रम, महादेव रोड
आरा-802 301 बिहार

तवांग मोनेसट्री
जिला-तवांग
अरुणाचल प्रदेश

लालभाई दलपतभाई भारतविद्या संस्थान
नवरंगपुर, नियर गुजरात यूनिवर्सिटी
अहमदाबाद-380 009 गुजरात

प्राच्यविद्या संस्थान
श्री वेंकटेश्वर यूनिवर्सिटी
तिरुपति-517 502 आन्ध्र प्रदेश

इनटेक, चित्रकला परिषद आर्ट
कंर्ज़र्वेशन सेंटर
कुमारा कृपा रोड
बंगलौर-560 001 कर्नाटक

रिजनल कंर्ज़र्वेशन लेबोरेट्री
डिपार्टमेंट ऑफ आर्कियोलॉजी
श्रीपदम् पेलैस
फोर्ट पी.ओ.
तिरूवनंतपुरम्-695 023 केरल

हिमालयन सोसाइटी फॉर हेरीटेज एण्ड आर्ट्स कंर्ज़र्वेशन
मार्कण्डेय हाउस
(नियर एम.एच.टी. मेन गेट)
रानीबाग, जिला-नैनीताल
उत्तराखंड-231 126

थुंचन मेमोरियल ट्रस्ट
थुंचन परमभु
थिरुर-676 101
जिला-मल्लापुरम्
केरल

रामपुर राजा लाइब्रेरी
हमीद मंजिल
रामपुर-244 901
उत्तर प्रदेश

खुदाबख़्श ओरिएन्टल
पब्लिक लाइब्रेरी
अशोक राजपथ
पटना-800 004
बिहार

सालारजंग म्यूजियम
सालारजंग मार्ग
हैदराबाद-500 002
आन्ध्र प्रदेश

सिन्धिया ओरिएन्टल
रिसर्च इंस्टीट्यूट
विक्रम यूनिवर्सिटी
उज्जैन
मध्य प्रदेश

विश्वेश्वरानन्द विश्वबंधु
संस्कृत एवं भारतविद्या संस्थान
साधु आश्रम
ऊना रोड
होशियारपुर-146 021
पंजाब

हमारे सहयोगी
पाण्डुलिपि संसाधन केन्द्र (एम.आर.सी.)

पाण्डुलिपि संसाधन केन्द्रों का विस्तार और सशक्तीकरण

सर्वेक्षण, प्रलेखन, सूचीकरण और लोगों में जागृति पैदा करने हेतु व्यापक नेटवर्क निर्माण करने तथा पाण्डुलिपि के रक्षकों और इस कार्य में संलग्न लोगों को सहायता पहुँचाने के लिए राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन ने सम्पूर्ण देश में विश्वविद्यालयों, प्रख्यात शोध संस्थानों और पाण्डुलिपि कार्य में संलग्न स्थापित ग़ैर सरकारी संगठनों में पाण्डुलिपि संसाधन केन्द्र स्थापित किया है।

पाण्डुलिपि संसाधन केन्द्रों का संगठन

- प्रत्येक एम.आर.सी. के पास सूचीकरण, सम्पादन और पाठों के अर्थ निकालने में विभिन्न स्तरों के विशेज्ञता प्राप्त प्रशिक्षित कर्मिकों का एक दल होता है।
- प्रत्येक एम.आर.सी. के प्रशासन और संयोजन का कार्य संस्थान के वर्तमान कर्मचारी में से किसी परियोजना संयोजक द्वारा किया जाता है।
- क्षेत्र सर्वेक्षण के माध्यम से आंकड़ों की आपूर्ति करने तथा पाण्डुलिपियों के प्रलेखन के लिए एम.आर.सी. के पास दो तरह के कर्मचारी होते हैं - क्षेत्र में सर्वेक्षण के कार्य में लगे विद्वान और मैनुस ग्रन्थावली सॉफ्टवेयर में आंकड़ों की प्रविष्टि करने के लिए कंप्यूटर प्रविष्टि कार्मिक।
- प्रत्येक एम.आर.सी. में दो कंप्यूटर, एक प्रिंटर, इंटरनेट सुविधा, निर्धारित मैनुस ग्रंथावली सॉफ्टवेयर होते हैं जिसमें पाण्डुलिपि आँकड़े की प्रविष्टि की जाती है और उसे अंततः मिशन कार्यालय स्थित राष्ट्रीय इलेक्ट्रॉनिक डाटाबेस से जोड़ दिया जाता है।
- पाण्डुलिपि शास्त्र और पुरातत्त्व लेखन पर कार्यशाला का आयोजन करके पाण्डुलिपि के पाठ के अर्थ निकालने और उनके संपादन के लिए संसाधन कार्मिक तैयार किए जाते हैं।
- प्रत्येक एम.आर.सी. को उसकी क्षमता और संतोषजनक कार्य निष्पादन के अनुरूप राशि आबंटित की जाती है।

एम.आर.सी. की गतिविधि

- एम.आर.सी. सर्वेक्षण और प्रलेखन के लिए पाण्डुलिपि शास्त्र में प्रशिक्षित अध्येताओं और छात्रों को अपने कार्य में शामिल करता है।
- एम.आर.सी. राज्य स्तर पर राष्ट्रीय सर्वेक्षण को पूरा करने में मदद करते हैं।
- एम.आर.सी. पाण्डुलिपियों के व्यक्तिगत तथा संस्थागत अधिपतियों से संपर्क स्थापित करता है।
- एम.आर.सी. पाण्डुलिपियों के पठन-पाठन और पाण्डुलिपि शास्त्र तथा पुरात्त्व लेखन के अन्य पक्षों के लिए विद्वानों की खोज करता है।
- तत्त्वबोध व्याख्यान और राष्ट्रीय संगोष्ठि आयोजित करने एम.आर.सी. राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन को सहयोग करता है।

पाण्डुलिपि सहयोगी केन्द्रों को सहायता

पाण्डुलिपि संसाधन केन्द्रों के अतिरिक्त, मिशन ने पाण्डुलिपि सहयोगी केन्द्रों का एक नेटवर्क स्थापित किया है। यहां हमने प्रलेखन और उनके संग्रहों के सूचीकरण के लिए महत्त्वपूर्ण पाण्डुलिपि भंडारों को अपने से संबद्ध किया है। उनका कार्य

मैनुस ग्रंथावली सॉफ्टवेयर के माध्यम से मौलिक सूचीकरण करना है जो कि उनके कर्मचारी आनुपातिक आधार पर स्वयं अथवा बाहर के किसी व्यक्ति या संस्था से करवाते हैं।

विदेशी संग्रहों का प्रलेखन

मिशन विदेश में स्थित पाण्डुलिपि भंडारों में संग्रहों के प्रलेखन के लिए आधार तैयार करने में सदैव संलग्न रहा है। सन् 2006 में 70 से अधिक संस्थाओं के साथ संपर्क स्थापित किया गया था। चार साल के अंतराल के बाद विभिन्न दक्षिण एशियाई देशों में स्थित भारतीय पाण्डुलिपियों के प्रलेखन हेतु मिशन एक परियोजना को रूप रेखा देने के लिए दक्षेस के साथ समन्वय कार्य कर रहा है। उम्मीद है कि वर्ष 2011-12 में अंतर्राष्ट्रीय नेटवर्किंग और विदेश में स्थित संग्रहों के प्रलेखन के इस कार्य का राष्ट्रीय इलेक्ट्रॉनिक डाटाबेस के विस्तार और विशेष दुर्लभ तथा महत्त्वपूर्ण भारतीय पाण्डुलिपियों के सांख्यिकीकरण की दृष्टि से ठोस परिणाम प्राप्त होगा।

रणनीति

- यूरोप, अमरीका और एशिया में भारतीय पाण्डुलिपियों के ज्ञात भंडार से संपर्क स्थापित करना।
- जिस प्रारूप में हमारे पाण्डुलिपि आँकड़े संग्रहीत किए जातें हैं उस उचित प्रारूप को भेजना।
- आँकड़े के कंप्यूटरीकरण हेतु मैनुस ग्रन्थावली सॉफ्टवेयर भेजना।
- अब तक की गैर सूचीकृत भारतीय पाण्डुलिपियों के पढ़ने और अर्थ निकालने के लिए भंडारों को उस क्षेत्र में विद्वानों का पता लगाने में मदद करना।
- जहां भारतीय पाण्डुलिपियों की सूची मौजूद हो वहां से सूची का संग्रह करना।
- विदेशों में स्थित संग्रहों में उपलब्ध भारतीय पाण्डुलिपियों का सांख्यिकीकरण करना।

पाण्डुलिपि शोध केन्द्र

आन्ध्र प्रदेश सरकार प्राच्य पांडुलिपि पुस्तकालय, हैदराबाद

राज्य के मूल्यवान और दुर्लभ पाण्डुलिपियों को सुरक्षित रखने की दृष्टि से आन्ध्र प्रदेश राज्य अभिलेखागार विभाग में प्राच्य पाण्डुलिपि पुस्तकालय की स्थापना की गई। सन् 1975 में राज्य शिक्षा विभाग के नेतृत्व में इस पुस्तकालय को एक अलग स्वतंत्र निदेशालय का दर्जा दिया गया। वर्तमान में यह उस्मानिया विश्वविद्यालय परिसर में स्थित है। इस विभाग का मुख्य उद्देश्य पाण्डुलिपियों का प्रलेखन और परिरक्षण करना है। यहां 24017 पाण्डुलिपियों का विशाल भंडार है। यहां ताड़-पत्र और कागज़ पर अंकित, दोनों तरह की पाण्डुलिपियां हैं। तेलुगू, संस्कृत, उर्दू, अरबी, फारसी, कन्नड, हिंदी, उड़िया, मराठी और अन्य भाषाओं में पाण्डुलिपियां यहां उपलब्ध हैं। ये पाण्डुलिपियां वेद, उपनिषद, आगम, धर्मशास्त्र, व्याकरण, छंद शास्त्र, अलंकार शास्त्र, मंत्र शास्त्र, तंत्र शास्त्र भारतीय औषधि, यूनानी चिकित्सा, नक्षत्र शास्त्र, खगोल विद्या, काव्य, शब्द कोश आदि विषयों से संबंधित हैं। इस संस्थान ने विवेचनात्मक सूचियों के तीन खंड प्रकाशित किए हैं। इस पुस्तकालय में कई दुर्लभ पाण्डुलिपियां परिक्षित हैं, यथा - भार्गव पुराण, तत्त्व संग्रह रामायण और तेलुगू में आन्ध्र तुलसी रामायण, अक्रादि अमर निघंटू, संस्कृत में सामवेद, उर्दू में दिवान-ए-गवाज़ी, अरबी तथा फारसी में अलमुक्तर-ए-फूनून तथा अक़्लाक़-ए-नासरी। इन संस्थान ने अपने संग्रह के ताड़-पत्र और कागज पर अंकित 7698 पाण्डुलिपियों के 6.60 लाख पृष्ठों का डिजिटलीकरण किया है। यहां सन् 2005 में एम.आर.सी. की स्थापना की गई। इस एम.आर.सी ने अभी तक 24,934 पण्डुलिपियों का प्रलेखन किया और छः जागृति अभियान संचालित किया है जो लोगों के बीच बहुत ही लोकप्रिय रहा। इस एम.आर.सी ने लोक कलाओं और मौखिक साहित्य के सैकड़ों अभिनयों के ताड़-पत्र और कागज़ स्क्रॉल पर अंकित प्रलेखों का संग्रह किया है। सर्वेक्षण के दौरान गांवों में बहुत प्रकार की पण्डुलिपियों और प्रलेखों को देखा गया। गांव के मंच कलाकरों के पास एक अभिलेख जो उपलब्ध है वह है- 'परिवार अधिकार वसीयत या हक्कू

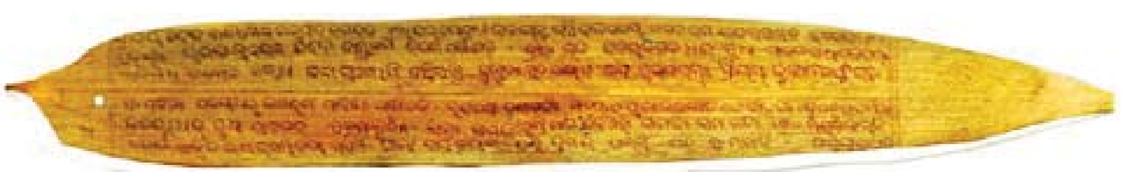

उड़ीसा राज्य संग्रहालय, भुवनेश्वर में परिरक्षित बाँस पत्र पर अंकित पाण्डुलिपि का एक पृष्ठ

एल.टी.एल. पुस्तकालय एवं अभिलेखागार, मिजोरम में आयोजित संगोष्ठि सह प्रदर्शनी में प्रो. दीप्ति एस. त्रिपाठी, निदेशक, राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन को सम्मान

खुदाबख़्श ओरिएन्टल पब्लिक लाइब्रेरी, पटना में सार्वजनिक तत्त्वबोध व्याख्यानमाला के अंतर्गत व्याख्यान देते हुए प्रो. एस. पी. वर्मा

पत्र'। कलाकारों के परिवारों को कला प्रदर्शन का अधिकार उन्हें अपने बुजर्गो और स्थानीय शासन से मिला है। हक्कू पत्र इन गांवों को 'पट्टी' के नाम से ज्ञात चालीस गांवों में प्रदर्शन का अधिकार देता है। यद्यपि ये अभिलेख कम संख्या में प्राप्त हुए हैं तथापि ये सामाजिक-कलात्मक गतिविधियों, स्थानीय इतिहास और मौखिक साहित्य के संबंध में महत्त्वपूर्ण और उपयोगी सूचना प्रदान करते हैं।

पता:

प्रो. श्रीपाद सुब्रमण्यम
निदेशक
आन्ध्र प्रदेश सरकार प्राच्य पाण्डुलिपि पुस्तकालय और शोध संस्थान
जामा-1- उस्मानिया, उस्मानिया विश्वविद्यालय परिसर,
हैदराबाद - 500007
आन्ध्र प्रदेश
टेली/फैक्स: 040 232120236

मद्रास विश्वविद्यालय, चेन्नई

अगस्त 2003 से मद्रास विश्वविद्यालय, चेन्नई मिशन के साथ कैटेलोगस कैटेलोगम नामक नई परियोजना में सहयोग कर रहा है। यह संस्कृत, पालि और प्राकृत के क्षेत्र में कार्यरत विद्वानों के लिए सूचनाप्रद होगा। नया कैटेलोगस कैटेलोगम सन् 1935 से इस विश्वविद्यालय द्वारा संचालित संस्कृत तथा अनुषांगिक पालि, प्राकृत और अपभ्रंश रचनाओं का वर्णमाला क्रम में रजिस्टर है। मिशन ने इस भव्य कार्यक्रम को पुन: प्रारंभ करने की दिशा में पहल की है। मिशन के वित्तीय सहयोग से सन् 2007 में पुस्तकें प्रकाशित की गई। अभी तक इस परियोजना के तहत पुस्तकें प्रकाशित की गई हैं।

इस विश्वविद्यालय ने तमिलनाडु में पाण्डुलिपियों का पता लगाने तथा प्रलेखन करने के लिए एम.आर.सी. के रूप में काम करने हेतु सन् 2004 में मिशन के साथ सहमति पत्र पर हस्ताक्षर किया। अभी तक इस एम.आर.सी. ने सात जिलों के 5 संस्थाओं, 29 मठों, 2 विश्वविद्यालयों और 25 निजी पाण्डुलिपि भंडारों के 7,500 पाण्डुलिपियों का प्रलेखन किया है और उन्हें इलेक्ट्रॉनिक रूप में प्रस्तुत किया है।

पता:

वी. आरसू
तमिल विभाग अध्यक्ष
मरीना परिसर,
मद्रास विश्वविद्यालय,
चेन्नई - 6000005
तमिलनाडु
दूरभाष: 044 28444933/28441686
फैक्स: 044 25366693/288445517
ई. मेल: tamil_lit@rediffmail.com

पांडिचेरी फ्रांसीसी संस्थान, पांडिचेरी

पांडिचेरी फ्रांसीसी संस्थान की स्थापना सन् 1955 में हुई। इस संस्थान की स्थापना शिव आगमों से संबंधित सामग्री को संग्रहीत करने के उद्देश्य से की गई थी। शैव धार्मिक परंपरा से जुड़े शास्त्रों को शैव सिद्धांत कहते हैं जो कि दक्षिण भारत में आठवीं सदी से अपने विकसित स्वरूप में है। संस्थान के पाण्डुलिपि संग्रह का संयोजन इसके संस्थापक निदेशक ज्यां फिलियॉजात ने किया था।

जिन पाण्डुलिपियों की अति तत्काल परिरक्षण की आवश्यकता है उनमें वैदिक कर्मकांड, शैव आगम, स्थल पुराण, तथा ग्रंथा और तमिल पाठ जैसी पाण्डुलिपियाँ हैं। इस संग्रह में पाड़-पत्र पर अंकित लगभग 8600 पुरानी पाण्डुलिपियाँ (जिनमें कागज पर अंकित 360 ग्रंथों के गट्ठर भी हैं।) और पाँच चित्रित पाण्डुलिपि सहित कागज पर अंकित देवनागरी लिपि में लिप्यंतरित 1144 पाण्डुलिपियाँ हैं। सिद्धांतिका पाण्डुलिपियों के सबसे विशाल संग्रह होने के कारण यह अद्वितीय है।

फ्रांसीसी संस्थान में एम.आर.सी. की शुरूआत अगस्त 2003 से हुई। इसने मिशन के डाटाबेस में अभी तक 37494 पाण्डुलिपियों का प्रलेखन किया जा चुका है।

पता:

टी. गणेशन
पांडिचेरी फ्रांसीसी संस्थान
11 सेंट लुई स्ट्रीट, पी.बी.-33
पंडिचेरी - 605001
दूरभाष: 0413 2334168 (विस्तार) 123
फैक्स: 0413 23395434

पाण्डुलिपि शास्त्र विभाग, कन्नड विश्वविद्यालय, हम्पी

पाण्डुलिपि शास्त्र विभाग, कन्नड विश्वविद्यालय, हम्पी की शुरूआत सन् 1996 में हुई थी। इसे कर्नाटक में विश्वविद्यालय स्तर पर पाण्डुलिपियों के अध्ययन के लिए विशेष रूप से तैयार अग्रणी विभाग के रूप में माना जा सकता है। इस विभाग

में चार प्रकार की मुख्य गतिविधियां हैं - पाण्डुलिपियों का संग्रह, उनका संपादन, नवोन्मेषी प्रौद्योगिकी को अपनाकर नए आयाम में उनका अध्ययन और उनका प्रकाशन। इस विभाग का मुख्य उद्देश्य कई सदियों के इतिहास को धारण करने वाली पाण्डुलिपियों का संकलन कर भारत के सांस्कृतिक इतिहास को संपन्न बनाना है। क्षेत्र कार्य, संगोष्ठि, प्रशिक्षण पाठ्यक्रम, कार्यशाला आदि इस विभाग के कार्यक्रम के अंतर्गत संचालित होते हैं। इसने कन्नड के साथ-साथ अभी तक तमिल, तेलुगू, मलयालम, मराठी और संस्कृत भाषाओं के 4000 से भी अधिक महत्त्वपूर्ण पाण्डुलिपियों का संकलन किया है। इनमें से कुछ बहुत ही महत्त्वपूर्ण हैं- नमामि के भारत, हलायुद्ध स्रोत, कुमारसंभव, शिवाधिक्य रत्नावली, और माघकाव्य पर भाष्य आदि। इनमें कई चित्रित और रंगीन पाण्डुलिपियां भी हैं।

कन्नड विश्वविद्यालय के पाण्डुलिपि पुस्तकालय के पाण्डुलिपि विभाग की कई विशेषताएं हैं। इस पुस्तकालय में 5500 दुर्लभ पाण्डुलिपियां हैं। इनमें 3000 से अधिक पाण्डुलिपियां कन्नड की हैं। कन्नड विश्वविद्यालय हम्पी में एम.आर.सी. जून 2004 से कार्यशील है। इसने 11 जिले के 200 संस्थानों और 1600 निजी पाण्डुलिपि भंडारों का सर्वेक्षण किया है और 27 जागरूकता अभियानों का संचालन किया है। इसने 56,777 पाण्डुलिपियों को प्रलेखित किया है जिनमें अधिकांश संस्कृत अथवा कन्नड के हैं। इन पाण्डुलिपियों में धर्म, ज्योतिष, दर्शन, वास्तु शास्त्र, गीत, लोक कथाएं जैसे विविध विषयों की पाण्डुलिपियां हैं। इस विभाग ने सर्वेक्षण अवधि के दौरान 1500 से अधिक पाण्डुलिपियों का संकलन किया है।

फारसी में रामायण का एक चित्र, रामपुर राजा पुस्तकालय संग्रह

पताः

वीरेश एस. बाडिगर
पाण्डुलिपि शास्त्र विभाग
कन्नड विश्वविद्यालय,
हम्पी
विद्यारण्य- 583276
हॉस्पेट तालुक
जिला - बेल्लारी (कर्नाटक)
दूरभाषः 08394 441335 /441317
फैक्सः 08394 441317
ई-मेलः rgistrar@kavihampi.org

केलाडि संग्रहालय एवं ऐतिहासिक शोध ब्यूरो, शिमोगा

गण सहयाद्रि शंकरघट कुवेम्पू विश्वविद्यालय शिमोगा से संबद्ध, केलाडि संग्रहालय के पुस्तकालय में कन्नड, संस्कृत और तेलुगू भाषाओं में कागज और ताड़-पत्र पर अंकित लगभग 1000 पाण्डुलिपियां हैं तथा तिगलारी लिपि में ताड़-पत्र पर अंकित लगभग 400 पाण्डुलिपियां हैं। इन पाण्डुलिपियों में साहित्य, कला, धर्मशास्त्र, इतिहास, ज्योतिष, खगोल शास्त्र, चिकित्सा, गणित और पशु चिकित्सा विज्ञान की पाण्डुलिपियां हैं। यहां पर विजयनगर और केलाडि शासन काल से संबंधित कलात्मक वस्तुएं, शस्त्र, सिक्के, शिला मूतियां और ताम्र पत्र अभिलेख उपलब्ध हैं। मई 2005 में इस संग्रहालय का संपर्क मिशन के साथ हुआ। तब से यह मिशन के साथ काम कर रहा है और 18,936 पाण्डुलिपियों का प्रलेखन किया है।

पताः

केलाडि गुंडा ज्वाइस,
परियोजना संयोजक
केलाडि संग्रहालय एंव ऐतिहासिक शोध ब्यूरो
केलाडि सागर, तालुक
शिमोगा जिला
कर्नाटक - 577401

महाभारत संशोधन प्रतिष्ठानम्, बंगलुरु

विभिन्न बहुराष्ट्रीय कंपनियों में कार्यरत तकनीकीविदों के एक दल ने सन् 1977 में बंगलुरु में महाभारत संशोधन प्रतिष्ठानम् की स्थापना की। यह एक भारतीय विद्या शोध संगठन है। इसे प्राचीन भारतीय ज्ञान और प्रज्ञा को संदर्भानुकूल बनाने और इसके उपयोग से विश्व समुदाय के जीवन स्तर में उन्नति लाने के साथ-साथ भारतीय ज्ञान की विविध विधाओं के चुने हुए क्षेत्रों में शोध संचालित करने के उद्देश्य से स्थापित किया गया था। यह संस्थान अनेक प्रौद्योगिकी और तकनीकी में अनुसंधान तथा विकास कार्य करने तथा उसे निःशुल्क भारतीय विद्या के विद्वानों के बीच वितरित करने में संलग्न है।

महाभारत शोध प्रतिष्ठान में एम.आर.सी. सन् 2004 से क्रियाशील है और यह भारत में पाण्डुलिपियों के सांख्यिकीकरण और परिरक्षण के लिए कार्य कर रहा है। इसने पाण्डुलिपि के 59,886 आंकड़ों का प्रलेखन किया है और पाँच जागरूकता अभियानों का संचालन किया है। म.शो.प्र. ने सात जिलों के 25 संस्थानों और 20 निजी भंडारों का सर्वेक्षण किया है।

पताः

रामचन्द्र बुदिहाल
परियोजना संयोजक
महाभारत संशोधन प्रतिष्ठानम्
1/ई, तृतीय क्रॉस, गिरिनगर प्रथम फेज
बानशंकरी तृतीय चरण
बंगलुरु - 560085
कर्नाटक
दूरभाषः 080 6422387
ई-मेलः mspblr@yahoo.com

राष्ट्रीय प्राकृत अध्ययन एवं शोध संस्थान, श्रावणबेलगोला

प्राकृत भाषा, साहित्य, कन्नड में जैन शास्त्र और जैन साहित्य तथा अन्य द्रविड़ भाषाओं को प्रोत्साहित करने हेतु सन् 1993 में राष्ट्रीय प्राकृत अध्ययन एवं शोध संस्थान की स्थापना की गई थी। इसके पास 20000 ग्रन्थों के विशाल संग्रह के साथ-साथ ताड़-पत्र और कागज पर अंकित 6000 महत्त्वपूर्ण पाण्डुलिपियाँ हैं। यह संस्थान मैसूर विश्वविद्यालय से संबंधित है। यह जैन साहित्य, धर्मशास्त्र, दर्शन, इतिहास और कला से संबंधित दक्षिण भारत में एक मात्र संस्थान होने के कारण विश्व भर से विद्वानों को आकर्षित करता है। यह संस्थान पी.एच.डी. करने के लिए पाँच मेधावी छात्रों को नियमित रूप से मार्गदर्शन और वित्तीय सहयोग देता है।

इस संस्थान के पास कई महत्त्वपूर्ण पाण्डुलिपियाँ उपलब्ध हैं: गोमतेश्वर, छत्तीस गणित, आदिपुराण और *खगेन्द्रमणिदर्पनाद थिलोयपन्नाथि।* इस संस्थान के पास यतिवृषभाचार्य के थिलोयपन्नाथि जैसे महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ भी उपलब्ध है। यह छठी सदी में लिखित जैन ग्रन्थ है जिसमें तीन लोक संबंधी सिद्धांत का वर्णन है।

राष्ट्रीय प्राकृत अध्ययन एवं शोध संस्थान में एम.आर.सी. अक्टूबर 2005 से कार्यशील है। एम.आर.सी. बनने से पहले इसने जैन पाण्डुलिपियों से संबंधित 50000 आँकड़ों को प्रलेखित किया था जिसे मिशन के राष्ट्रीय इलेक्ट्रॉनिक पाण्डुलिपि डाटाबेस से जोड़ दिया गया है। एम.आर.सी. के रूप में इस संस्थान ने 50 व्यक्तिगत पाण्डुलिपि भंडारों और 37 संस्थानों का सर्वेक्षण किया है और पाँच जिलों के 210 संस्थानों और व्यक्तिगत भंडारों के 61,542 पाण्डुलिपियों को राष्ट्रीय इलेक्ट्रॉनिक पाण्डुलिपि डाटाबेस में प्रलेखित किया है।

पताः

एम. उदायराज
कार्यकारी अधिकारी
राष्ट्रीय प्राकृत अध्ययन एवं शोध संस्थान
श्री धवलतीर्थम्
श्रावणबेलगोला - 571335
जिला - हसन
कर्नाटक

प्राच्य शोध संस्थान, मैसूर

प्राच्य शोध संस्थान की स्थापना सन् 1891 में की गयी थी। सन् 1887 में निर्मित्त स्थापत्य कला की दृष्टि से आकर्षक जुबली हॉल में इसका मुख्यालय है। इसकी स्थापना मैसूर के महराजा चामराल वोडयार ने ताड़-पत्र तथा कागज पर अंकित पाण्डुलिपियों के संग्रह, परिरक्षण, अर्थ ज्ञापन और विवरणात्मक समीक्षा के उद्देश्य से की थी। सन 1916 तक यह संस्थान शिक्षा विभाग के अधीन था। उसके बाद मैसूर विश्वविद्यालय के अधीन हो गया।

प्राच्य शोध संस्थान ने अब तक लगभग 200 ग्रन्थों का प्रकाशन किया है जिसमें सबसे अधिक उल्लेखनीय है - सन् 1909 में कौटिल्य के अर्थशास्त्र का प्रथम पूर्ण संस्करण (इस ग्रन्थ की रचना ईसा पूर्व चौथी शताब्दि में हुई थी।)। इस

कार्य ने इस संस्थान को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर शिक्षा जगत में प्रतिष्ठित कर दिया। इसके द्वारा प्रकाशित अन्य महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ हैं - नवरत्नमणि महात्म्य (रत्न शास्त्र पर रचना), तन्त्रसार संग्रह (शिल्प एवं स्थापत्य पर ग्रन्थ), वैद्य शास्त्र दीपिका (आयुर्वेद पर ग्रन्थ), रस कौमुदी (पारद औषधि पर ग्रन्थ) और पर्यायपादमंजरी (आयुर्वेद औषधि सामग्री पर पुस्तक) जो कि प्राच्य शोध संस्थान संग्रह की सामग्री है। इस संस्थान ने विभिन्न विषयों की सत्रह विवरणात्मक सूचियों को प्रकाशन अब तक किया है जिसमें श्रीतत्त्ववसुधानिधि के चित्रित पाण्डुलिपियों के 9 खंड भी सम्मिलित हैं।

अक्टूबर 2003 से प्राच्य शोध संस्थान, मैसूर विश्वविद्यालय एम.आर.सी. के रूप में कार्य कर रहा है। नियमित और परवर्ती सर्वेक्षण के माध्यम से विशेष रूप से इसी एम.आर.सी. के 78,141 पाण्डुलिपियों को प्रलेखन किया गया है। सर्वेक्षण के दौरान इस एम.आर.सी. ने लगभग 100 पाण्डुलिपियों को संग्रहीत किया है।

पता:

डॉ. बी. ए. डोडामणि
परियोजना संयोजक
प्राच्य शोध संस्थान
मैसूर विश्वविद्यालय
कौटिल्य सर्कल
मैसूर - 570005
कर्नाटक
दूरभाष: 08212423136/2420331
ई-मेल: mrcmys@yahoo.com

प्राच्य शोध संस्थान और पाण्डुलिपि पुस्तकालय, केरल विश्वविद्यालय, तिरुअनन्तपुरम

केरल विश्वविद्यालय में स्थापित प्राच्य शोध संस्थान और पाण्डुलिपि पुस्तकालय इस अंचल की पाण्डुलिपियों का प्रख्यात भंडार है। इसके पास ताड़-पत्र, कागज, हस्ति-दन्त, कच्छप कंकाल और धातु पर अंकित 60000 से अधिक पाण्डुलिपियाँ हैं। ये संस्कृत, मलयालम, कन्नड, तेलुगू और तमिल भाषाओं में उपलब्ध हैं। इस संस्थान ने वर्णक्रम में स्तंभाकार सूचियों के आठ खंड तथा मलयालम सूचियों के दो खंड प्रकाशित किए हैं। नवम्बर 2003 से यह संस्थान मिशन के साथ एम.आर.सी. के रूप में कार्य कर रहा है। अब तक इसने 7 जिलों में सर्वेक्षण किया है। इस संस्थान ने अब तक 75680 पाण्डुलिपियों का प्रलेखन किया है और इसने 36240 पाण्डुलिपियों के इलेक्ट्रॉनिक आँकड़े तैयार किए हैं। इस एम.आर.सी. ने आठ जागरुकता अभियान चलाया है और आठ संस्थानों तथा 50 निजी भंडारों का सर्वेक्षण किया है।

पता:

डॉ. के. जी. श्रीलेखा
विभागाध्यक्ष
प्राच्य शोध संस्थान और पाण्डुलिपि पुस्तकालय,
केरल विश्वविद्यालय, करियावत्तोम, तिरुअनन्तपुरम - 695585
केरल
दूरभाष: 0471 241 84 21
फैक्स: 0471 2302898
ई-मेल: keralauniversity@vsnl.com

श्री चन्द्रशेखरानंद सरस्वती विश्व महाविद्यालय, कांचिपुरम

श्री चन्द्रशेखरानंद सरस्वती विश्व महाविद्यालय कांचिकामकोटि पीठम दानार्थ न्यास द्वारा प्रायोजित है। इस विश्वविद्यालय ने सन् 1994-1995 से अपना कार्य प्रारंभ किया। इसमें आधुनिक ज्ञान की विभिन्न शाखाओं का अध्ययन-अध्यापन होता है, यथा- संस्कृत, भौतिकी, रसायन विज्ञान, अभियान्त्रिकी, चिकित्सा विज्ञान (मानव, जन्तु और पादप), जैव- प्रौद्योगिकी, आनुवंशिकी और कंप्यूटर प्रौद्योगिकी। यह विश्वविद्यालय ज्ञान के इन क्षेत्रों में उच्चतर शोध को भी प्रोत्साहित करता है। यहाँ श्री चन्द्रशेखरानंद सरस्वती पुस्तकालय की स्थापना सन् 1995 में की गयी। इसमें प्राचीन दुर्लभ पाण्डुलिपियों को संग्रह है तथा इसमें ताड़-पत्र पर अंकित 6000 से अधिक पाण्डुलिपियाँ हैं। इन पाण्डुलिपियों पर माइक्रोफिल्म तैयार की गई हैं जो संस्कृत सहित आधुनिक ज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में उच्च स्तरीय अनुसंधान में उपयोगी होंगी।

इस संस्थान और मिशन के बीच नवम्बर, 2004 में एक सहमति पत्र पर हस्ताक्षर हुए। इस परियोजना का मुख्य उद्देश्य सम्पूर्ण तमिलनाडु में उपलब्ध पाण्डुलिपियों का सर्वेक्षण करना तथा उनकी सूची तैयार करना है। इस विश्वविद्यालय के कुलपति को परियोजना का निदेशक नियुक्त किया गया है और उप पंजीयक श्रीमती नागलक्ष्मी को परियोजना का संयोजक नियुक्त किया गया है।

इसकी 5000 पाण्डुलिपियों में से लगभग 3500 पाण्डुलिपियों को सूचीकृत किया जा चुका है और 2850 पर रा.पा.मि. ने

माइक्रोफिल्म तैयार कर चुका है। वर्तमान परियोजना में मूल संग्रह में से लगभग 1100 पाण्डुलिपियों को विवरणात्मक सूचीकरण के साथ प्रलेखित किया गया है। मैनुस ग्रन्थावली सॉफ्टवेयर के माध्यम से लगभग 47050 इलेक्ट्रॉनिक आँकड़ों की प्रविष्टि की गई है।

पता:

डॉ. जी. श्रीनिवासु
श्री चन्द्रशेखरानंद सरस्वती विश्व महाविद्यालय
श्री कांचिशंकर मठ,
कांचिपुरम - 631502
तमिलनाडु
दूरभाषः 04112 222115
फैक्सः 04112 224305

थुंचन स्मृति न्यास, तिरूर

केरल के महान आध्यात्मिक नेता, कवि एवं समाज सुधारक थुंचन रामानुजन इझुत्ताचन की स्मृति में स्थापित थुंचन स्मृति न्यास ने स्वयं को संगोष्ठि, परिचर्चा, काव्य-पाठ जैसी विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से इस क्षेत्र के इतिहास, संस्कृति और साहित्य के अध्ययन में समर्पित संस्था के रूप में प्रतिष्ठित किया है। इस संस्थान के पास महत्त्वपूर्ण पाण्डुलिपियों से युक्त एक सुविकसित पुस्तकालय है। थुंचन स्मृति न्यास में एम.आर.सी. जून 2004 से काम करने लगा। इस न्यास ने अब तक 1,43, 970 पाण्डुलिपियों का प्रलेखन किया है।

पता:

के.पी. रामानुजन
निदेशक
थुंचन स्मृति न्यास
थुंचन परामु
तिरूर
जिला- मालाप्पुरम
केरल
दूरभाषः 0494 2422213/2429666
ई-मेलः thunchan@vsnl.com

प्राच्य शोध संस्थान, श्रीवेंकटश्वर विश्वविद्यालय, तिरुपति

तिरुमाल तिरुपति देवसथानम द्वारा सन् 1939 में प्राच्य शोध संस्थान, श्रीवेंकटश्वर विश्वविद्यालय, तिरुपति की स्थापना की गई। इसकी स्थापना सैद्धान्तिक शोध तथा भारतीय संस्कृति एवं

खुदाबख़्श ओरिएन्टल पब्लिक लाइब्रेरी, पटना में परिरक्षित तारीख-ए-खानदान-ए- तैमुतिरयाह

विरासत के प्रचार-प्रसार के उद्‌देश्य से की गयी। सन् 1956 में इस संस्थान को श्री वेंकटेश्वर विश्वविद्यालय को सुपुर्द कर दिया गया। इस संस्थान के पास ताड़-पत्र और कागज पर अंकित 50000 से अधिक पाण्डुलिपियों का विशाल संग्रह है। इसकी पुस्तकालय में 75000 दुर्लभ ग्रन्थ हैं। इस पाण्डुलिपि भंडार में दर्शन, धर्म, काव्य, साहित्य, भाषा, व्याकरण, काव्यशास्त्र और जन्म कुण्डली से संबंधित ग्रन्थ हैं।

एम.आर.सी. के रूप में यह संस्था सितम्बर, 2003 से मिशन के साथ कार्य कर रहा है। इसने चार जिलों के 13 संस्थानों के तेलुगू और देवनागरी लिपि में लिखित 33, 543 पाण्डुलिपियों का प्रलेखन किया है। इस एम.आर.सी. ने दान के रूप में 500 पाण्डुलिपियाँ प्राप्त की हैं। पाण्डुलिपियों से संबंधित आँकड़ों की डाटाबेस में प्रविष्टि कर दी गई है। इसने अनेक जन संपर्क अभियान चलाया है और समाचार पत्रों तथा टी.वी. चैनलों के माध्यम से कार्यक्रम का प्रचार किया है। इसका इस क्षेत्र के लोगों पर, विशेष रूप से शोध अध्येताओं, शिक्षकों और पाण्डुलिपि अधिपतियों पर अच्छा प्रभाव पड़ा है।

एस.पी.के. गुप्ता संग्रह, विष्णु पुराण के पृष्ठ

पताः

श्री वेंकटरामन रेड्‌डी

प्रभारी निदेशक

प्राच्य शोध संस्थान, श्रीवेंकटेश्वर विश्वविद्यालय,

तिरुपति - 517502

आन्ध्र प्रदेश

दूरभाषः 0877 2249666 (विस्तार) 291

फैक्सः 0877 222 6614

तंजौर महाराजा सरफोजी सरस्वती महल पुस्तकालय, तंजौर

तंजौर के नायक और मराठा राजवंशों द्वारा स्थापित तंजौर महाराजा सरफोजी सरस्वती महल पुस्तकालय, तंजौर वर्तमान में विश्व के उन विरले पुस्तकालयों में से हैं जिनकी स्थापना मध्यकाल में हुई थी। इस पुस्तकालय में कला, साहित्य और संस्कृति के सभी पक्षों से संबंधित दुर्लभ और महत्त्वपूर्ण पाण्डुलिपियों, पुस्तकों, मानचित्रों और चित्रों का संग्रह है। यहाँ पर संस्कृत, तमिल, मराठी और तेलुगू भाषाओं में लगभग 59000 पाण्डुलिपियों का विशाल संकलन है जिनमें से दक्षिण भारत के इतिहास और संस्कृति को प्रतिबिम्बित करने वाली अनेक चित्रित पाण्डुलिपियाँ भी हैं। इनमें से कुल 24,432 पाण्डुलिपियों को सूचीकृत किया जा चुका है और वे सक्रिय उपयोग में हैं। संस्कृत भाषा के लिए ग्रन्था, देवनागरी, तेलुगू, मलयालम, कन्नड और उड़िया लिपियों का उपयोग किया गया है। अभी तक पुस्तकालय द्वारा विवरणात्मक सूची के 14 खंड का प्रकाशन किया जा चुका है।

तंजौर महाराजा सरफोजी सरस्वती महल पुस्तकालय, तंजौर एम.आर.सी. के रूप में सितम्बर, 2003 से काम कर रहा है। अब तक इस एम.आर.सी. ने तमिलनाडु में पाण्डुलिपियों का 35914 इलेक्ट्रॉनिक आँकड़े तैयार कर चुकी है।

पताः

श्री एस. शिवज्ञानम

परियोजना संयोजक

तंजौर महाराजा सरफोजी सरस्वती महल पुस्तकालय,

तंजौर - 613009

तमिलनाडु

दूरभाषः 04362 234107/230206

फैक्सः 04362 233568/230857

केन्द्रीय बौद्ध अध्ययन संस्थान, लेह

केन्द्रीय बौद्ध अध्ययन संस्थान, लेह इस क्षेत्र में बौद्ध धर्म की जानकारी उपलब्ध कराने वाले मुख्य स्रोत स्थल के रूप में इस क्षेत्र में कई वर्षों से काम कर रहा है। पहले इसे बौद्ध दर्शन विद्यालय के रूप में जाना जाता था। इस संस्थान की स्थापना सन् 1959 में की गयी। इसका मुख्य लक्ष्य बौद्ध धर्म के विषय में समग्र ज्ञान उपलब्ध कराना है। इसमें प्राचीन शास्त्रों, संस्कृति, दर्शन, इतिहास और हिंदी, संस्कृत, अंग्रेजी, तिब्बती और पालि भाषाओं का अध्ययन कराया जाता है। यह दुर्लभ बौद्ध पाण्डुलिपियों का परिरक्षण और प्रकाशन करता है तथा बौद्ध दर्शन में शोध की सुविधा उपलब्ध करवाता है। यह संस्थान युवा छात्रों में बौद्ध चिंतन, कला और साहित्य संबंधी ज्ञान का संचार करने के लिए समर्पित है।

राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन ने इस संस्थान के साथ सन् 2003 में सहमति पत्र पर हस्ताक्षर किया और तब से यह संस्थान इस कठिन क्षेत्र में कार्य करने में सहयोग कर रहा है। इस क्षेत्र में बहुत से बौद्ध मठ और पाण्डुलिपियों के भंडार हैं। इस संस्थान ने अब तक 755 संस्थानों और व्यक्तिगत संग्रहों का सर्वेक्षण किया है और बौद्ध धर्म से संबंधित 9241 तिब्बती और भोटी पाण्डुलिपियों के लिए इलेक्ट्रॉनिक आँकड़ें तैयार किए हैं। इसने विद्वानों के सहयोग से 17858 भुम, कांग्युर और ग्यास्तोंग्पा पाण्डुलिपियों का प्रलेखन किया है। इसने अब तक 50 प्रचार अभियानों का आयोजन किया है जिन्हें इस क्षेत्र के लोगों का व्यापक समर्थन मिला।

पताः

डॉ. त्सेरिंग मुटुप
निदेशक
केन्द्रीय बौद्ध अध्ययन संस्थान
चोग्लमसार
लेह (लद्दाख)- 194001
दूर/फैक्सः 01982 - 264391
श्री त्सेरिंग मुटुप (ए.ओ.) - 09419177543

राज्य पुरातत्त्व, अभिलेखागार और संग्रहालय, श्रीनगर

कश्मीर में पाण्डुलिपियाँ कई प्रकार से लिखी जाती हैं, यथा - भूर्ज पत्र, हस्त निर्मित्त कागज, काष्ठ, शिला, वस्त्र और मृदभांड पर। ये पाण्डुलिपियाँ सभी समकालीन पक्षों, यथा - धर्म, इतिहास, दर्शन, साहित्य, चिकित्सा, भूगोल सभी से संबंधित हैं। जम्मू-कश्मीर राज्य के पास निस्संदेह रूप से ऐसी पाण्डुलिपियाँ और ऐतिहासिक अभिलेखों का विशाल भंडार है।

यह निदेशालय मिशन से संबंधित होकर एम.आर.सी. के रूप में अगस्त 2003 से काम करना प्रारंभ किया। इस एम.आर.सी. के पास इस क्षेत्र में पाण्डुलिपियों के रूप में बिखरी हुई सांस्कृतिक सम्पदा के संबंध में सूचना संग्रहीत करने का दायित्व है। इस निदेशालय का जम्मू तथा श्रीनगर, दोनों स्थानों पर कार्यालय है। इसने अब तक 3672 पाण्डुलिपियों के इलेक्ट्रॉनिक आँकड़े प्रस्तुत किए हैं और 28137 पाण्डुलिपियों का प्रलेखन किया है। शेष आँकड़ों को मिशन के मुख्य कार्यालय, नयी दिल्ली में मैनुस ग्रन्थावली इलेक्ट्रॉनिक आँकड़ों में प्रविष्टि हेतु भेज दिया गया है। इस संग्रहालय ने सात जिलों के 23 संस्थानों और 190 व्यक्तिगत पाण्डुलिपि भंडारों का अब तक सर्वेक्षण किया है। इसने जम्मू-कश्मीर में कई जागरूकता अभियानों का आयोजन किया है।

पताः

निदेशक
राज्य पुरातत्त्व, अभिलेखागार और संग्रहालय निदेशालय
स्टोन बिल्डिंग
पुराना सचिवालय,
श्रीनगर- 190001
जम्मू-कश्मीर
दूरभाषः 0194 1472361 (श्रीनगर)
0191 2578834(जम्मू)

हिमाचल कला, संस्कृति और भाषा अकादमी, शिमला

हिमाचल कला, संस्कृति और भाषा अकादेमी, शिमला ने एम.आर.सी. के रूप में काम करने के लिए मिशन के साथ मई 2005 में सहमति पत्र पर हस्ताक्षर किए। तब से इस संस्थान ने 1800 व्यक्तिगत पाण्डुलिपि भंडारों और 100 संस्थानों का सर्वेक्षण किया है। इस एम.आर.सी. ने 60379 पाण्डुलिपियों का प्रलेखन किया है। इसने विभन्न स्थानों पर अब तक दस जागरूकता अभियानों का आयोजन किया है जिनको व्यापक जन समर्थन मिला। इस एम.आर.सी. ने हिमाचल प्रदेश में पाण्डुलिपियों के संबंध में राष्ट्रीय सर्वेक्षण का भी आयोजन किया है। सर्वेक्षण अवधि के दौरान इस अकादमी ने 700 पाण्डुलिपियों को संग्रहीत किया है।

पता:

डॉ. बी. आर. जसवाल

परियोजना संयोजक

हिमाचल कला, संस्कृति और भाषा अकादेमी,

शिमला - 171001

हिमाचल प्रदेश

कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र

कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र की स्थापना सन् 1956 में की गई। इसका शिलान्यास भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने किया था। प्रारंभ में इसमें केवल संस्कृत विभाग था लेकिन वर्तमान में यह इस क्षेत्र के प्रमुख संस्थान के रूप में प्रतिष्ठित हो चुका है जिसमें आधुनिक ज्ञान-विज्ञान के विविध विषयों की पढ़ाई होती है। स्तरीय शिक्षा प्रदान करने के प्रति प्रतिबद्ध कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय ने जवाहरलाल पुस्तकालय की स्थापना की। इस पुस्तकालय में 7000 पाण्डुलिपि सहित 2,99,463 अभिलेख हैं। शोध और शिक्षण के लिए पाण्डुलिपियों और पुस्तकों के संग्रह में कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय का बहुत लम्बा इतिहास है। इसकी कुछ पाण्डुलिपियाँ तो 500 वर्ष पुरानी हैं। विश्वविद्यालय के पुस्तक संग्रह से विश्व भर के छात्रों और विद्वानों को लाभ मिलता है। साथ ही पुस्तक प्रेमी सामान्य पाठकों को भी इससे लाभ मिलता है।

हरियाणा में विद्यमान व्यक्तिगत एवं संस्थागत पाण्डुलिपियों के संग्रहों का पता लगाने तथा उनका प्रलेखन करने के लक्ष्य से यह विश्वविद्यालय अक्टूबर 2005 से एम.आर.सी. के रूप में कार्य कर रहा है। इस एम. आर. सी. ने अब तक 12 जिलों से प्राप्त 27,423 पाण्डुलिपियों का प्रलेखन किया है और 16658 इलेक्ट्रॉनिक आँकड़े तैयार किया है। इसने सन् 2006 में हरियाणा में पाण्डुलिपियों के संग्रह के लिए राष्ट्रीय सर्वेक्षण भी किया है। सर्वेक्षण अवधि के दौरान विश्वविद्यालय एम.आर.सी. ने अपने संग्रह में 5000 पाण्डुलिपियों को जोड़ा है। इसने राज्य के 55 संस्थानों और 400 व्यक्तिगत पाण्डुलिपि भंडारों का सर्वेक्षण किया है।

पता:

सुरेन्द्र मोहन मिश्रा

संस्कृत, पालि और प्राकृत विभाग

कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय,

कुरुक्षेत्र - 136119

हरियाणा

दूरभाष: 01744 238367

फैक्स: 01744 238277

तिब्बती रचना और अभिलेखागार पुस्तकालय

परम पावन 14 वें दलाईलामा की संकल्पना के आधार पर उन्हीं के द्वारा स्थापित तिब्बती रचना और अभिलेखागार पुस्तकालय तिब्बती संस्कृति के परिरक्षण और प्रसार को समर्पित विश्व के सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण संस्थाओं में से एक है। 1 नवम्बर, 1971 से इसका उपयोग किया जा रहा है। तिब्बती संस्कृति के अध्ययन केन्द्र के रूप में यह परिरक्षण, संरक्षण और सम्वर्द्धन जैसे त्रि-सूत्रीय लक्ष्य के प्रति समर्पित है। इस पुस्तकालय में विश्व में तिब्बती मौखिक इतिहास पर दो परियोजनाओं में एक स्थित है। यहाँ की तिब्बती पाण्डुलिपि संग्रह में 80000 से अधिक सामग्रियां हैं - हस्तलिखित पाण्डुलिपि से लेकर सदियों पुराने अभिलेख सहित पुस्तकें और पत्रिकाएं हैं। इसमें विशेष महत्त्व की पुस्तकें हैं - कंग्यूर तथा तंग्यूर के अनेक हस्तलिखित संस्करण, तिब्बती बौद्ध धर्मशास्त्र, तिब्बत की चार बौद्ध परंपराओं - न्यिंग्मा, काग्यू, शाक्य और गेलुग की प्रमुख पुस्तकें और तिब्बत की देसी परंपरा की बॉन रचनाएं। इस संग्रह की सभी पाण्डुलिपियों की सामान्य सूची बनाने की प्रक्रिया चल रही है। तिब्बती रचना और अभिलेखागार पुस्तकालय की नयी परियोजना है 14 वें दलाई लामा की कृतियों का केन्द्रीय अभिलेखागार बनाना। इसका उद्देश्य परम पावन दलाई लामा के उपदेश, रचना और प्रवचन से संबंधित सभी सामग्रियों का संकलन करना।

इस पुस्तकालय ने मिशन के साथ सितम्बर 2003 में एक सहमति पत्र पर हस्ताक्षर किया। इस क्षेत्र में सर्वेक्षण से अब तक पाण्डुलिपि पर 95,998 आँकड़ें सृजित किए जा चुके हैं। इस संस्थान ने अभी तक 25 जन सम्पर्क अभियान चलाए हैं जिनको भारी जन समर्थन मिला है। इस एम. आर. सी. ने चार जिलों के 10 व्यक्तिगत पाण्डुलिपि भंडारों और 31 संस्थानों का सर्वेक्षण किया है। एम.आर.सी. द्वारा आयोजित कार्यक्रमों को अधिक लोगों तक पहुंचाने के लिए इन्हें रेडियो और स्थानीय टी.वी. चैनलों द्वारा प्रसारित किया गया।

पता:

डॉ. लबसांग शास्त्री

मुख्य पुस्तकालयाध्यक्ष

तिब्बती रचना और अभिलेखागार पुस्तकालय

गंगचेन क्यिसांग

घर्मशाला - 176215

हिमाचल प्रदेश

ई-मेल: lobshastri@gov.tibet.net

पालकप्य गजायुर्वेद का एक चित्र, आर. ओ. आर. आई., जोधपुर

रामपुर राजा पुस्तकालय, रामपुर

प्रतिभाशाली और दूरदृष्टि से संपन्न शासक नवाब फैज़ुल्लाह खान ने रामपुर राजा पुस्तकालय, रामपुर की स्थापना की। इस पुस्तकालय में अरबी, उर्दू, फारसी और तुर्की के 50000 पुस्तकों और 15000 पाण्डुलिपियों का विशाल संकलन है। इनमें से अनेक पुस्तकें दुर्लभ हैं। इसमें सोलहवीं से अठारहवीं सदी के बीच के मुगल शासन के दौरान के लघु चित्र भी हैं। इस पुस्तकालय को राष्ट्रीय संस्थान का स्तर प्राप्त है और यह संस्कृति मन्त्रालय, भारत सरकार के अधीन है। इस पुस्तकालय में 150 चित्रित पाण्डुलिपियाँ हैं और विभिन्न भाषाओं तथा विषयों के 11 विवरणात्मक सूचियाँ हैं। यह पुस्तकालय अत्यंत ही ऐतिहासिक महत्त्व की पाण्डुलिपि, तारीख–ए–बाबरी के विवेचनात्मक संस्करण निकालने की तैयारी कर रहा है। एक अन्य महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ, तारीख–ए–मोहम्मदी के प्रकाशन के लिए भी मूल ग्रन्थ से उनका लिप्यंतरण किया जा रहा है।

यह पुस्तकालय एम.आर.सी. के रूप में अगस्त 2003 से कार्य कर रहा है। इस एम.आर.सी. ने अरबी, उर्दू और फारसी भाषाओं में अब तक 43300 पाण्डुलिपियों का प्रलेखन किया है। इसने 60 जिलों के 40 संस्थानों और 100 व्यक्तिगत पाण्डुलिपि संकलनों का सर्वेक्षण किया है। इसने 7 जागरूकता कार्यक्रमों का भी आयोजन किया है।

पताः

निदेशक
रामपुर राजा पुस्तकालय
हामिद मंज़िल
रामपुर – 244901
उत्तर प्रदेश
दूरभाषः 0595 2325045
फैक्सः 0955 2340548
ई–मेलः director@razalibrary.com

विश्वेश्वरानंद विश्वबंधु संस्कृत एवं भारत विद्या अध्ययन संस्थान

विश्वेश्वरानंद विश्वबंधु संस्कृत एवं भारत विद्या अध्ययन संस्थान देश के उत्तर– पश्चिम क्षेत्र का एक महत्त्वपूर्ण

पाण्डुलिपि भंडार है। इस संस्थान के पास उत्तर एवं दक्षिण भारत की भाषाओं की 2685 विशिष्ट पाण्डुलिपियाँ हैं। इसमें वेद, पुराण, उपनिषद्, ज्योतिष, नक्षत्र विद्या, आयुर्वेद और अन्य विषयों से संबंधित ग्रन्थ हैं। पाण्डुलिपियाँ भूर्ज-पत्र, ताड़-पत्र और हस्त लिखित कागज पर अंकित हैं। इसने अनेक पुरानी और नई पाण्डुलिपियों का संपादन और प्रकाशन किया है और अनेक पाण्डुलिपियों के प्रकाशन की प्रक्रिया चल रही है। इस संस्थान द्वारा अश्वलायन स्रौतसूत्र का प्रकाशन अति शीघ्र किया जाने वाला है। यह पुस्तक तीन खंडों में प्रकाशित होगी। इस संस्थान के पास पवुची लिपि में अंकित सांचा नामक एक अद्वितीय पाण्डुलिपि है जो किसी अन्य स्थान पर उपलब्ध नहीं है। इस लिपि को विद्वानों द्वारा पढ़ा जाना अभी शेष है।

यह संस्थान सितम्बर 2003 से एम.आर.सी. के रूप में कार्य कर रहा है। चंडीगढ़, मुक्तसर, अमृतसर, पटियाला, लुधियाना और होशियारपुर सहित उत्तरांचल के 60 संस्थानों के सर्वेक्षण के पश्चात् इसने विभिन्न संग्रहों की 26206 पाण्डुलिपियों के संबंध में सूचना संकलित की है। इस एम.आर.सी. ने अपने संकलन के लिए अब तक 100 पाण्डुलिपियाँ संग्रहीत की है।

पता:

प्रो. रघुबीर सिंह
विश्वेश्वरानंद विश्वबंधु संस्कृत एवं भारत विद्या अध्ययन संस्थान
साधु आश्रम
होशियारपुर - 146021
पंजाब
दूरभाष: 01882-275475
फैक्स: 01882-221002

उत्तरांचल संस्कृत अकादमी, हरिद्वार

संस्कृत भाषा को प्रोत्साहित करने के लिए दिसम्बर 2002 में स्थापित उत्तरांचल संस्कृत अकादमी संस्कृत भाषा को नयी प्रौद्योगिकी से जोड़ने का काम करती है। यह संगोष्ठि और प्रदर्शनी का आयोजन करती है और व्यक्तिगत पाण्डुलिपि संकलनों से पाण्डुलिपियाँ संकलित करता है। इस अकादमी के अधीन 88 संस्कृत महाविद्यालय और विद्यालय कार्य कर रहे हैं। इसके पास 4000 पाण्डुलिपियों का संग्रह है। संस्थानों और व्यक्तिगत संकलनों से प्राप्त विभिन्न विषयों - वेद, उपनिषद्, पुराण, इतिहास, धर्म शास्त्र, दर्शन, काव्य, स्त्रोत और अन्य प्रकार की पुस्तकें हैं।

यह अकादमी मिशन के साथ एम.आर.सी. के रूप में जून 2005 से कार्य कर रही है। इसने अपने 9 कर्मचारियों के सहयोग से 6 जिलों के 125 व्यक्तिगत संकलनों और 20 संस्थानों का सर्वेक्षण किया है। इसके परिणामस्वरूप 5993 पाण्डुलिपियों का प्रलेखन किया गया है।

पता:

डॉ. बुद्धदेव शर्मा
सचिव
उत्तरांचल संस्कृत अकादमी
रानीपुर झाट
दिल्ली राष्ट्रीय राजमार्ग
हरिद्वार - 249401

के. एम. हिन्दी एवं भाषाविज्ञान संस्थान

के. एम. हिन्दी एवं भाषाविज्ञान संस्थान वर्तमान में बी. आर. अम्बेडकर विश्वविद्यालय, आगरा के अंतर्गत कार्य कर रहा है। पहले इसे आगरा विश्वविद्यालय के नाम से जाना जाता था। सन् 1996 में इसका नामकरण डॉ. बी. आर. अम्बेडकर विश्वविद्यालय कर दिया गया। इस विश्वविद्यालय में साहित्य, इतिहास, खगोलशास्त्र, ज्योतिष, धर्म और दर्शन से संबंधित दुर्लभ पाण्डुलिपियों का विशाल भंडार है। यहाँ पुराने सिक्के, पुराने तस्वीर और शाहजहाँ के समय के आगरा शहर के पुराने नक्शे और अत्यंत ऐतिहासिक महत्त्व की अन्य सामग्रियाँ विद्यमान हैं। विश्वविद्यालय इन निधियों के सावधानीपूर्वक परिक्षण के लिए हर संभव प्रयास कर रहा है। के. एम. हिन्दी एवं भाषाविज्ञान संस्थान की स्थापना सन् 1953 में की गई थी। यह संस्थान पाण्डुलिपियों के परिरक्षण और अध्ययन में संलग्न है। इस अध्ययन के कुछ परिणाम इन पुस्तकों के संपादित संस्करण के प्रकाशन के रूप में सामने है - सूरसागर, पद्मावत, बीसलदेव रासो आदि। इसके केन्द्रीय पुस्तकालय में महाजन संकलन, श्रीवास्तव संकलन, बागची संकलन के नाम से संकलन उपलब्ध हैं। इस एम.आर.सी. ने दो विद्वानों के सहयोग से 1400 पाण्डुलिपियों का प्रलेखन किया है।

पता:

प्रो. हरि मोहन
निदेशक
कन्हैयालाल माणिकलाल मुंशी हिन्दी भाषा और भाषा विज्ञान संस्थान
डॉ. बी. आर. अम्बेडकर विश्वविद्यालय,
पलिवाल पार्क
आगरा - 2

सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, बनारस

सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, बनारस की स्थापना सन् 1791 में आर्थर वेनिस ने की थी। यह भारत के प्राचीनतम संस्कृत विश्वविद्यालयों में से एक है। इसे भारत में संस्कृत और संस्कृति के अध्ययन के लिए एक महत्त्वपूर्ण केन्द्र माना जाता है। इस संस्थान में देवनागरी, बांग्ला और शारदा लिपि में अंकित 125000 पाण्डुलिपियों का महत्त्वपूर्ण भंडार है। इस विश्वविद्यालय ने पाण्डुलिपियों की महत्त्वपूर्ण सूची प्रकाशित की है। इनमें से एक 1791 से 1950 के बीच प्राप्त पाण्डुलिपियों की पुरानी सूचियाँ हैं और दूसरी सन् 1951-1981 के बीच प्राप्त पाण्डुलिपियों की सूची।

सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय ने राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन के साथ मई 2005 में एक सहमति पत्र पर हस्ताक्षर किए। इसमें 10 जिलों में पाण्डुलिपि संग्रह और परिरक्षण के लिए 8 विद्वान कार्यरत हैं। इस संसाधन केन्द्र ने 16 संस्थानों और 13 व्यक्तिगत संकलनों से 38,270 पाण्डुलिपियों का प्रलेखन किया है।

पता:

प्रो. गंगाधर पण्डा
संपूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय
बनारस: 2210001 (उ. प्र.)
दूरभाष: 0542 2205122

कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय, दरभंगा

कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय, दरभंगा की स्थापना सन् 1961 में की गई। प्रख्यात विद्वान डॉ. उमेश मिश्र इसके प्रथम कुलपति थे। इस विश्वविद्यालय में महाकाव्य, दर्शन, व्याकरण, धर्मशास्त्र, आगम, तन्त्र आदि पर पाण्डुलिपियों का संग्रह है। इसमें रामायण, गीतगोविन्द, श्रीमद्भागवत् और दुर्गासप्तशती की चित्रित पाण्डुलिपियों के साथ-साथ 5562 दुर्लभ पाण्डुलिपियाँ हैं। विद्यापति और महेश ठाकुर की उनकी अपनी लिपि में रचित पाण्डुलिपियाँ विश्वविद्यालय की गौरवशाली धरोहर में से एक है।

कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय, दरभंगा ने एम.आर.सी. के रूप में सितम्बर, 2003 से काम कर रहा है। संस्कृत के अपने विशाल पाण्डुलिपि संकलन के लिए विख्यात इस एम.आर.सी. ने मिथिला और झारखंड ने सर्वेक्षण के उपरांत अनेक पाण्डुलिपियों का प्रलेखन किया है। अब तक सात विद्वानों के सहयोग से 10,403 पाण्डुलिपियों का संकलन किया जा चुका है। इस एम.आर.सी. ने 3 जिलों के 12 संस्थानों तथा 114 व्यक्तिगत पाण्डुलिपि भंडारों का सर्वेक्षण किया है।

पता:

प्रो. कुलानंद झा
उप कुलपति
कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय
कामेश्वर नगरम्
दरभंगा - 846004
बिहार
दूरभाष/फैक्स: 06272 222608/222138

खुदाबख़्श ओरिएन्टल पब्लिक लाइब्रेरी, पटना

खुदाबख़्श ओरिएन्टल पब्लिक लाइब्रेरी, पटना देश की राष्ट्रीय पुस्तकालयों में से एक है। इसकी स्थापना सन् 1891 में खुदाबख़्श खान ने कुछ पाण्डुलिपियों के अपने व्यक्तिगत संकलन के साथ की थी। सन् 1969 में संसद के अधिनियम द्वारा इसे राष्ट्रीय महत्त्व के संस्थान का दर्जा दिया गया। महत्त्वपूर्ण पाण्डुलिपियों, दुर्लभ पुस्तकों, हिंदू देवी-देवताओं के चित्रों और लघु चित्रों, मुगल राजपूत, तुर्की और ईरानी चित्रकला के चित्रों के अपने विशाल संग्रह के कारण यह पुस्तकालय विश्वविख्यात है। इसके पास एक इंच चौड़े क़ुरान पाक की विशेष पाण्डुलिपि है। केवल इसके पास ही स्पेन के कोर्डोबा विश्वविद्यालय की लूट से मुक्त करायी गई पुस्तकें हैं। इसके पास जहाँगीरनामा, शाहनामा, अल-कुअरान, तारीख-ए-खानदान-ए-तैमुरिया और किताब-उल-हशैश जैसी दुर्लभ पाण्डुलिपियाँ हैं। यहां फारसी के खूबसूरत लिखावट और सिक्के के कई नमूने उपलब्ध हैं। इसके पास अलेक्जाणिड्रया, मिस्र, डमैस्कस, बेरूत, अरब से प्राप्त कई मंहगी दुर्लभ पाण्डुलिपियाँ हैं। यहाँ पर प्राच्य अध्ययन में मुसलमान काल से संबंधित अनुसंधान के लिए सुविधा उपलब्ध है। इस संस्थान ने 300 चित्रित पाण्डुलिपियों से संबंधित विवरणात्मक सूचियों के 39 खण्डों का प्रकाशन किया है। इस एम.आर.सी. ने उर्दू, अरबी और फारसी पाण्डुलिपियों के प्रलेखन पर मुख्य रूप से ध्यान दे रहा है।

यह एम.आर.सी. सितम्बर 2003 से कार्य कर रही है। इसने 23144 पाण्डुलिपियों के संबंध में इलेक्ट्रॉनिक आँकड़े सहित सूचना संग्रहीत किया है। इस संस्थान ने अब तक लोगों में जागृति का संचार करने तथा सूचना का आदान-प्रदान करने संबंधी

20 जन जागरण अभियानों का आयोजन किया है। इन अभियानों को व्यापक जन समर्थन मिला।

पताः

डॉ. इम्तयाज अहमद
निदेशक
खुदाबख़्श ओरएन्टल पब्लिक लाइब्रेरी
अशोक राजपथ
पटना - 800004
बिहार
दूरभाषः 0612 2300209
फैक्सः 0612 2300209
ई-मेलः pat_kbopl@data1.in

नव नालंदा महाविहार, नालंदा

भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद की प्रेरणा से प्राचीन नालंदा महाविहार के तर्ज पर पालि तथा बौद्ध अध्ययन के लिए संस्थान निर्मित्त करने से प्रेरित होकर बिहार सरकार ने सन् 1951 में नव नालंदा महाविहार की स्थापना की। श्री भिक्खू जगदीश कश्यप इस संस्थान के पहले संस्थापक निदेशक थे। इस महाविहार का वर्तमान परिसर ऐतिहासिक इन्द्रपुष्करणी के दक्षिणी तट पर स्थित है। इस झील के उत्तरी तट के नजदीक पुराने नालंदा विश्वविद्यालय के खंडहर हैं। सन् 1994 में इस महाविहार को भारत सरकार के संस्कृति मन्त्रालय ने अपने अधीन ले लिया। सोसाइटी रजिस्ट्रेशन एक्ट, 11,1960 के अंतर्गत यह वर्तमान में पंजीकृत सोसाइटी के रूप में कार्य कर रहा है। वर्तमान में यह संस्था पालि में एक साल का प्रमाण पत्र पाठ्यक्रम और पालि, तिब्बती, संस्कृत, हिन्दी और अंग्रेजी में दो वर्ष का डिप्लोमा पाठ्यक्रम चला रहा है। यह महाविहार पालि, दर्शन शास्त्र, प्राचीन भारतीय एवं एशियाई अध्ययन के बहुत से पाठ्यक्रमों के लिए कामेश्वर सिंह संस्कृत विश्वविद्यालय, दरभंगा और मगध विश्वविद्यालय दोनों से संबद्ध है। यह संस्थान मगध विश्वविद्यालय से पी.एच.डी. पाठ्यक्रम का संचालन करता है।

नव नालंदा महाविहार, नालंदा ने मिशन के साथ जून 2005 में एक सहमति पत्र पर हस्ताक्षर किए। इसने दो विद्वानों के सहयोग से 3 जिलों के 22,164 आँकड़े पत्रक का प्रलेखन किया है। इस एम.आर.सी. ने 30 व्यक्तिगत संकलनों तथा 11 संस्थानों का सर्वेक्षण किया है।

पताः

डॉ. डी. लामा
निदेशक
नालंदा - 803111
बिहार
दूरभाषः 0611 2281897
फैक्सः 0611 281820

कृष्णकान्त हांडिक पुस्तकालय, गुवाहाटी, विश्वविद्यालय

सन् 1982 में गुवाहाटी विश्वविद्यालय, पुस्तकालय का नाम बदलकर इस विश्वविद्यालय के प्रथम कुलपति के नाम पर कृष्णकान्त हांडिक पुस्तकालय, गुवाहाटी, विश्वविद्यालय कर दिया गया। इसकी स्थापना मुख्य रूप से विभिन्न शोध कार्यों को प्रोत्साहित करने एवं सहयोग देने के लिए की गई थी। गुवाहाटी विश्वविद्यालय सन् 1948 से कार्य कर रहा है। इस पुस्तकालय में रामायण, भागवत् और लवकुश युद्ध जैसे ग्रन्थों की पाँच पाण्डुलिपियाँ सहित विभिन्न विषयों के 4500 पाण्डुलिपियाँ हैं। इस पाण्डुलिपि संकलन की अधिकांश पाण्डुलिपियाँ अगरु के छाल पर अंकित हैं। यहाँ पर अपने उद्भव क्षेत्र को प्रतिनिधित्व करने वाली ऐतिहासिक और सांस्कृतिक महत्त्व की पाण्डुलिपियाँ हैं।

कृष्णकान्त हांडिक पुस्तकालय, गुवाहाटी, विश्वविद्यालय में एम.आर.सी. अगस्त 2003 से कार्य कर रही है। इस एम.आर.सी. ने असम के 25 जिलों से प्राप्त 25,513 पाण्डुलिपियों का प्रलेखन किया है। इसने अब तक 96 जागरूकता अभियान संचालित की है। इस एम.आर.सी. ने 1324 संस्थाओं और व्यक्तिगत पाण्डुलिपि भंडारों का सर्वेक्षण किया है। इस क्षेत्र में संकलन माध्यम के रूप में सांचिपात और तुलापात अद्वितीय हैं।

पताः

डॉ. उमाशंकर देवनाथ
पुस्तकालयाध्यक्ष
कृष्णकान्त हांडिक पुस्तकालय
गुवाहाटी विश्वविद्यालय
गुवाहाटी - 781014
असम
दूरभाषः 0361 2570529/2674438
फैक्सः 0361 2570133
ई-मेलः kkhl@sancharnet.in

मणिपुर राज्य अभिलेखागार, इम्फाल

मणिपुर में लेखन कला के प्रारंभ होने के साथ ही अभिलेखों को सुरक्षित रखने की परंपरा रही है। सरकारी अभिलेखों को राजदरबार में सुरक्षित रखा जाता था। लोग स्वतंत्र रूप से अभिलेखों को सुरक्षित रखते थे। मणिपुर सरकार के समाज, कल्याण कला एंव संस्कृति निदेशालय के अंतर्गत मार्च 1982 में मणिपुर राज्य अभिलेखागार, इम्फाल की स्थापना की गयी। इस अभिलेखागार का उद्देश्य एक स्थान पर अतीत के सभी अभिलेखों को एकत्र करके रखना है, चाहे वह गोपनीय और अपोगनीय अथवा व्यक्तिगत हों। मणिपुर राज्य अभिलेखागार ने इन श्रेणियों की पाण्डुलिपियों का अधिग्रहण किया है - सार्वजनिक अभिलेख, व्यक्तिगत अभिलेख, प्राचीन मैती और बंगाली लिपियों में ऐतिहासिक पाण्डुलिपियाँ और पुस्तकालय की दुर्लभ पुस्तकें।

सन् 1891 से 1947 के बीच मणिपुर महाराजा के परवान और आदेश तथा मणिपुर में तैनात राजनीतिक ऐजेंट के कागजात तथा सन् 1886 से 1947 के बीच के राजनीतिक ऐजेंट और सहायक रजनीतिक ऐजेंट की डायरी जैसे महत्त्वपूर्ण कागजात मणिपुर राज्य अभिलेखागार में हैं। इस अभिलेखागार ने प्राचीन मणिपुरी और बंगाली लिपियों में लिखित कई ऐतिहासिक महत्त्व की पाण्डुलिपियों का संकलन और परिरक्षण किया है।

मणिपुर राज्य अभिलेखागार, इम्फाल की एम.आर.सी. ने 90 जागरूकता अभियान चलाए हैं। इसने इसने 70 व्यक्तिगत पाण्डुलिपि भंडारों और 50 संस्थानों में 120 सर्वेक्षण किए हैं जिसके परिणामस्वरूप इस संस्थान ने अब तक 59,500 पाण्डुलिपियों का प्रलेखन किया है जिनमें से 38501 पाण्डुलिपियों के इलेक्ट्रॉनिक आँकड़े तैयार किए हैं। सर्वेक्षण के दौरान इस एम.आर.सी. ने 500 पाण्डुलिपियों का संग्रह किया। एम.आर.सी. ने सर्वेक्षण अपनी अहम् सहभागिता निभायी।

पताः

डॉ. के. सविता देवी

निदेशक

मणिपुर राज्य अभिलेखागार

कैसामपाट

इम्फाल - 795001

मणिपुर

दूरभाष/फैक्सः 0385-2222813

मो.: 09436021755

उड़ीसा राज्य संग्रहालय, भुवनेश्वर

उड़ीसा राज्य संग्रहालय, भुवनेश्वर का संग्रह विशाल है और यह इस क्षेत्र की कला पर केन्द्रित है। इस संग्रहालय के मूल्यवान निधि के रूप में ताड़-पत्र पाण्डुलिपियाँ विशेष रूप से उल्लेखनीय है। लगभग 37273 पाण्डुलिपियों का संग्रह किया गया है जिनमें से 52 पाण्डुलिपियों का प्रकाशन किया गया है। इसके पास ताड़-पत्र, बांस-पत्र, हस्त निर्मित्त कागज, हस्ति दन्त, भूर्ज पत्र और कुंभि पत्र पर लिखित पाण्डुलिपियाँ हैं। यहाँ पर दुर्लभ माला आकृति, पंखे की आकृति, मत्स्य आकृति, तलवार आकृति, चूहा आकृति तथा तोते की आकृति की पाण्डुलिपियाँ हैं। साथ ही विभिन्न प्रकार के शलाका भी हैं। चार सौ रंगीन और एक रंगे पाण्डुलिपियाँ भी मौजूद हैं। इस संस्था के पास कालिचरण पटनायक का गीत गोविन्द, उषा हरण और उषा विलास जैसी महत्त्वपूर्ण कृतियों की पाण्डुलिपि सहित विभिन्न प्रकार की आकृतियों में ताड़-पत्र पाण्डुलिपियाँ उपलब्ध हैं।

उड़ीसा राज्य संग्रहालय, भुवनेश्वर में एम.आर.सी. अगस्त 2003 से काम कर रहा है। अपने प्रारंभिक कार्यकाल से ही यह एम.आर.सी. सर्वेक्षण और प्रलेखन के कार्य में सक्रिय रहा है। इस संस्थान में 138 संस्थानों और 174 व्यक्ति पाण्डुलिपि भंडारों में सर्वेक्षण के उपरांत 2,90,774 पाण्डुलिपियों का प्रलेखन किया है। इस एम.आर.सी. ने 52 जागरूकता कार्यक्रम का संचालन किया है। उड़ीसा राज्य अभिलेखागार ने रा.पा.मि. को 250 पाण्डुलिपियाँ भेंट की हैं।

पताः

सी. बी. पटेल

सुप्रिन्टेंडेंट

उड़ीसा राज्य संग्रहालय,

संग्रहालय भवन

भुवनेश्वर

उड़ीसा

दूरभाष/फैक्सः 0674 2431597

ई-मेलः cbpatelosm@rediffmail.com

सरस्वती, भद्रक

उड़ीसा के पूर्वी भाग में स्थित सरस्वती विहार, भद्रक, सरस्वती प्राच्य अध्ययन और शोध की अगणी संस्थानों में से एक है। राज्य में देसी विज्ञान और प्रौद्योगिकी को प्रोत्साहित करने के

उद्देश्य से इसकी स्थापना की गई है। यह संस्थान प्रारंभ से ही पाण्डुलिपि शास्त्र प्रशिक्षण पर स्वयं को केन्द्रित किए हुए है। इसने पाण्डुलिपि शास्त्र पर अनेक अभिमुखी पाठ्यक्रमों का संचालन कर चुका है। अपने इस प्रयास से इसने उड़ीसा, असम और बंगाल में 400 से अधिक विद्वानों के दल को तैयार किया है।

सरस्वती स्थित एम.आर.सी. मिशन के साथ मई 2005 से काम कर रही है। इसने अब तक 108,861 आँकड़ों का प्रलेखन किया है और 98000 इलेक्ट्रॉनिक आँकड़े तैयार किए हैं। पुराण, धर्मशास्त्र, कर्मकांड, आयुर्वेद, तन्त्र और अन्य विषयों से संबंधित उड़िया तथा देवनागरी लिपियों की पाण्डुलिपियों का प्रलेखन किया गया है। इस एम.आर.सी. ने 14 जिलों के 6000 व्यक्तिगत पाण्डुलिपि भंडारों और 192 संस्थानों का सर्वेक्षण किया है।

पता:

सदानंद दीक्षित
निदेशक
सरस्वती
सरस्वती विहार, बारपद
भद्रक - 756113
उड़ीसा
दूरभाष - 06784 261690

श्री डी. के. जैन प्राच्य शोध संस्थान, आरा, बिहार

महान विद्वान और विद्या-प्रेमी श्री देवकुमार जैन ने 'जैन सिद्धांत भवन' की स्थापना सन् 1903 में की। यह केन्द्रीय जैन प्राच्य पुस्तकालय आरा के नाम से विख्यात है। इस पुस्तकालय में विश्व भर की पाण्डुलिपियों का अमूल्य संग्रह है। इसमें ताड़-पत्र पर लिखित 3179 और कागज पर अंकित 3500 ऐसी पाण्डुलिपियाँ हैं जो कम से कम 500 वर्ष पुरानी है। इनमें से सबसे महत्त्वपूर्ण जैन रामायण और भक्तमीरा की चित्रित पाण्डुलिपियाँ हैं। केवल जैन रामायण में ही मुगल और राजपूत शैली के उत्कृष्ट 200 चित्र हैं।

पाण्डुलिपियों के साथ-साथ इस पुस्तकालय ने लगभग सभी भारतीय तथा अनेक विदेशी भाषाओं में धर्म, दर्शन, इतिहास और साहित्य में 9000 पुस्तकें प्रकाशित की है। इसमें पुराने चित्र, कलाकृतियाँ और पुराने सिक्के मौजूद हैं। पौराणिक विषयों पर जो चित्र उपलब्ध हैं उनमें चन्द्रगुप्त के 16 सपने, 16 तीर्थंकर और पावापुरी मंदिर के चित्र हैं।

यह संस्थान एम.आर.सी. के रूप में मई 2005 से काम कर रहा है। तब से यह एम.आर.सी. 15 जिलों में 8 विद्वानों और 6 कर्मचारियों के सहयोग से पाण्डुलिपियों का प्रलेखन का इलेक्ट्रॉनिक आँकड़े प्रस्तुत करने का काम कर रहा है। इन जिलों में वेद, वेदांत, दर्शन, कर्मकांड और अन्य विषयों पर देवनागरी, उर्दू, मैथिली और बंगला में पाण्डुलियाँ मिली हैं।

अब तक इस एम.आर.सी. ने 1,17,114 पाण्डुलिपियों का प्रलेखन किया है और 94650 इलेक्ट्रॉनिक आँकड़े तैयार किए हैं। इसने जैन पाण्डुलिपि योजना के अंतर्गत रजिस्टर में 56,410 पाण्डुलिपियों का प्रलेखन किया है और इसे राष्ट्रीय इलेक्ट्रॉनिक डाटाबेस से जोड़ दिया गया है। इस एम.आर.सी. ने 22 जिलों का सर्वेक्षण किया है।

पता:

डॉ. अजय कुमार जैन
श्री डी. के. जैन प्राच्य शोध संस्थान
देवाश्रम, महादेव रोड (आरा)
बिहार - 802301
तथा
809, आशियाना प्लाज़ा
बुद्ध मार्ग
पटना: 800001 (बिहार)
दूरभाष: 0612 2352285

कलकत्ता विश्वविद्यालय पाण्डुलिपि पुस्तकालय, कोलकाता

कलकत्ता विश्वविद्यालय पाण्डुलिपि पुस्तकालय, कोलकाता के स्थापना समय, 1857 से ही पाण्डुलिपि अनुभाग यहाँ पर कार्यरत है। सन् 1990 से पाण्डुलिपि पुस्तकालय कलकत्ता विश्वविद्यालय, कोलकाता के उप कुलपति (अकादमी) के अधीन के पूर्ण क्रियाशील इकाई बन गयी है। इस पुस्तकालय में 42000 पाण्डुलिपियों का संकलन है जिसमें 20,000 संस्कृत, 12000 तिब्बती और बंगला में तथा अनेक फारसी और अरबी पाण्डुलिपियाँ हैं और कुछ ताड़-पत्र पर अंकित पाण्डुलिपियाँ हैं। ये पाण्डुलिपियाँ संस्कृत, तिब्बती, बंगला, उड़िया, मैथिली, पालि, अरबी और फारसी भाषाओं में हैं तथा ये बंगला, उड़िया, गौड़ी, नेवाड़ी, मलयालम और मैथिली लिपियों में हैं। कुछ पाण्डुलिपियाँ स्वर्ण और रजत में अक्षरांकित हैं।

कलकत्ता विश्वविद्यालय में एम.आर.सी. अगस्त 2003 से कार्य कर रही है। इस एम.आर.सी. ने पश्चिम बंगाल में स्थित

सरकारी और सरकार प्रायोजित पुस्तकालयों, संस्थाओं के पुस्तकालयों, व्यक्तिगत पुस्तकालयों और व्यक्तिगत पाण्डुलिपि संग्रहों में सर्वेक्षण किया है। इस एम.आर.सी. ने पश्चिम बंगाल के सभी जिलों से प्राप्त 92,752 पाण्डुलिपियों का प्रलेखन किया है और सांख्यिकीकरण हेतु पाण्डुलिपियों की सूची तैयार की है। इसने प्रलेखन के समय अपनायी गयी देसी संरक्षण विधि द्वारा पाण्डुलिपियों संग्रह के संरक्षण में सहयोग देने की पहल प्रारंभ की है। इस एम.आर.सी. ने 75 पाण्डुलिपि भंडारों में प्रलेखन किया है। यह एम.आर.सी. पश्चिम बंगाल के 19 जिलों में राष्ट्रीय सर्वेक्षण संचालित करने में सहभागी रही है।

पता:

प्रो. रत्ना बसु
प्रभारी, पाण्डुलिपि पुस्तकालय
हार्डिंग भवन, प्रथम तल
87/1, कॉलेज स्ट्रीट सीनेट हाऊस,
कलकत्ता विश्वविद्यालय,
कोलकाता: 700073, पश्चिम बंगाल
दूरभाष-फैक्स: 033 22413763/22413222

गुरुचरण महाविद्यालय, सिल्चर, असम

गुरुचरण महाविद्यालय, सिल्चर की स्थापना सन् 1935 में हुई। गुरुचरण महाविद्यालय, सिल्चर में एम.आर.सी. अक्टूबर 2005 से कार्य कर रही है। इस एम.आर.सी. ने अब तक 7 जिलों के 31 संस्थानों और 168 व्यक्तिगत पाण्डुलिपि भंडारों के 199 सर्वेक्षण किए हैं। इसने आयुर्वेद, तंत्र/मंत्र, ज्योतिष, पूजानिधि आदि विभिन्न विषयों के 3,032 पाण्डुलिपियों का प्रलेखन किया है। इनमें से अधिकांश पाण्डुलिपियाँ पुराने बंगला लिपि में लिखित हैं।

पता:

श्री उत्पल दास
परियोजना संयोजक
बी. सी. गुप्ता स्मृति पुस्तकालय
जी. सी. महाविद्यालय मार्ग
सिल्चर - 788004
असम
दूरभाष: 03842 264257

आनंद आश्रम संस्था

आनंद आश्रम संस्था पुणे की प्रमुख संस्थाओं में से एक है। इस संस्था की स्थापना सन् 1888 में मुंबई उच्च न्यायालय के प्रख्यात वकील स्व. महादेव चियाजी आप्टे ने की थी। उन्होंने अपनी सम्पूर्ण सम्पत्ति सहित पाण्डुलिपियों के मूल्यवान संकलन इस संस्थान को दे दिया। इसका सन् 1954 में सर्वाजनिक सेवार्थ न्यास के रूप में पंजीकृत करवाया गया।

इस संस्था की विश्व भर में संस्कृत विद्वानों और भारत विद्या के ज्ञाताओं के बीच एक प्रतिष्ठित प्रकाशन गृह के रूप में मान्यता है। अपने स्थापना काल से अब तक इसने 144 पुस्तकों का प्रकाशन किया है। इन पुस्तकों के 61000 पृष्ठों में 188 खण्डों का प्रकाशन हो चुका है। ये सभी पुस्तकें संस्था की पाण्डुलिपियों से प्रकाशित की गयी। इस संस्थान के कुछ महत्त्वपूर्ण प्रकाशन निम्नलिखित हैं:

1. मीमांसादर्शन
2. कृष्ण यजुर्वेद तैत्रिय संहिता
3. ऐतरेय ब्राह्मण
4. ऐतरेय आरण्यक
5. तैतरीय ब्राह्मण
6. तैतरीय आरण्यक
7. वायु पुराण
8. मत्स्य पुराण
9. कमण्डकीयनीतिशास्त्र

इस संस्थान में कविता से लेकर काव्यशास्त्र और वास्तुकला से लेकर संगीत तक के विभिन्न 26 विषयों के 1000 पाण्डुलिपियों के संग्रह हैं। रा.पा.मि. के लिए भण्डारकर प्राच्य शोध संस्थान ने इन पाण्डुलिपियों के लिए प्रलेखन किया है। आनंद आश्रम ने हाल ही में अपना वेबसाइट www.anadashramsanastha.org तैयार किया है।

आनंद आश्रम संस्था 27 जनवरी 2006 से एम. आर. सी. के रूप में काम कर रहा है। तब से यह संस्थान जागरूकता कार्यक्रम चलाता रहा है। इसने पाण्डुलिपियों का प्रलेखन किया है और 49033 इलेक्ट्रॉनिक डाटाबेस तैयार किया है। इस संस्थान ने तीन अनरू संस्थानों और 10 निजी पाण्डुलिपि भण्डारों का सर्वेक्षण किया है।

पता:

प्रो. सरोज भाटे
निदेशक
आनंद आश्रम संस्था
22 बुधवार पथ
पुणे - 411002
दूरभाष: 020 24226854, कार्यालय- 020 24457119

भण्डारकर प्राच्य शोध संस्थान, पुणे

प्रख्यात विद्वान, साहित्यकार और भारत में भारतविद्या के वैज्ञानिक प्रणेताओं में से एक रामकृष्ण गोपाल भण्डारकर की स्मृति में सन् 1917 में भण्डारकर प्राच्य शोध संस्थान, पुणे की स्थापना की गयी। इस संस्थान में धर्म, भाषा, वैदिक साहित्य, व्याकरण, संगीत, नाटक, पुराण, स्त्रोत्र, तंत्र, चिकित्सा और दर्शन शास्त्र सहित विभिन्न विषयों की 20000 पाण्डुलिपियाँ मौजूद हैं। इसके अभिलेखागार में दारा शिकोह द्वारा गीता और योगवशिष्ठ का फारसी अनुवाद, एक कश्मीरी पण्डित द्वारा विष्णु पुराण के फारसी अनुवाद, काजी हसन इफ्तखान द्वारा 390 वर्ष अश्व पालन पर लिखी पुस्तक और बादशाह शाहजहां के शाही पुस्तकालय की मुहर लगी हुयी मूल पाण्डुलिपि हैं।

अब तक इसने विवरणात्मक सूचियों (सरकारी पाण्डुलिपि पुस्तकालय की 1200 पाण्डुलिपियों से अधिक) के 35 खण्ड का प्रकाशन किया है। इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, नयी दिल्ली के तत्त्वावधान में इसने दस लाख पृष्ठों (4000 गैर सूचीकृत पाण्डुलिपियाँ इसमें सम्मिलित हैं।) की माइक्रोफिल्म तैयार की है।

भण्डारकर प्राच्य शोध संस्थान में एम.आर.सी. सितम्बर 2003 से कार्य कर रही है। इस एम.आर.सी. ने अब तक 68,877 पाण्डुलिपियों का प्रलेखन किया है और मैनुस ग्रन्थावली हेतु 46308 पाण्डुलिपियों के इलेक्ट्रॉनिक आँकड़े तैयार किए हैं। इस एम.आर.सी. ने तीन विद्वानों के माध्यम से 123 संस्थानों और और 30 निजी पाण्डुलिपि भण्डारों का सर्वेक्षण किया है।

पताः
प्रो. सरोजा भाटे
मान. सचिव
भण्डारकर प्राच्य शोध संस्थान
दक्कन जिमखाना
पुणे - 411047
महाराष्ट्र
दूरभाषः 020 25656932, फैक्सः 020 25661362
ई-मेलः boril@vsnl.net

प्राच्य अध्ययन संस्थान (शिव शक्ति), पुणे

कार्यशालाओं, संगोष्ठियों, प्रदर्शनी और परिचर्चा के माध्यम से भारतीय संस्कृति, इतिहास, पाण्डुलिपि अध्ययन और संस्कृति भाषा के प्रोत्साहन के लिए सन् 1980 में प्राच्य अध्ययन संस्थान

हिमाचल प्रदेश राज्य संग्रहालय, शिमला में 18 मार्च 2011 को एक दिवसीय पाण्डुलिपि जागरूकता कार्यक्रम

(शिव शक्ति), पुणे की स्थापना की गई थी। इसके पुस्तकालय में 3300 संस्कृत पाण्डुलिपियाँ और 26000 पुस्तकें हैं।

यह संस्थान मई 2005 से एम.आर.सी. के रूप में कार्य कर रहा है। इसने मिशन के डाटा प्रपत्र में अपने संकलन की 2800 पाण्डुलिपियों का प्रलेखन किया है।

पताः
डॉ. वी. वी. बेडकर
अध्यक्ष
डॉ. बेडकर अस्पताल
महर्षि कार्वे रोड
नैपाड़ा, थाने पश्चिम
पिन - 400000
महाराष्ट्र
दूरभाषः 022 25422392

कविकुल गुरु कालिदास संस्कृत विश्वविद्यालय, रामटेक

कविकुल गुरु कालिदास संस्कृत विश्वविद्यालय, रामटेक भारत के अन्य संस्कृत विश्वविद्यालयों से अलग हटकर है। परंपरागत रूप से अन्य संस्कृत विश्वविद्यालयों में वेद, वेदांत, व्याकरण, न्याय, मीमांसा, धर्मशास्त्र और संस्कृत साहित्य की पढ़ाई की जाती है। कविकुल गुरु कालिदास संस्कृत विश्वविद्यालय, रामटेक में नवोन्मेषी आधुनिक विषयों सहित परंपरागत संस्कृत का पाठ्यक्रम चलाया जाता है। यह संस्थान एक ओर आधुनिक दृष्टि के अनुकूल कार्य करता है तो दूसरी ओर परंपरागत सिद्धातों का पोषण करता है। सभी पाठ्यक्रमों को इस रूप में ढाला गया है कि उनमें संस्कृत ग्रन्थों में उल्लेखित प्राचीन भारत की ज्ञान-प्रौद्योगिकी पर जोर डाला जाता है।

कविकुल गुरु कालिदास संस्कृत विश्वविद्यालय में 40 नवोन्मेषी और आधुनिक पाठ्यक्रमों का संचालन किया जाता है। यह भारत के नौ संस्कृत विश्वविद्यालयों में अग्रणी है। महाराष्ट्र में इससे संबंधित 50 संस्थान हैं तथा महाराष्ट्र से बाहर गुजरात से लेकर पश्चिम बंगाल तक तथा केरल से लेकर हरियाणा तक 30 संस्थान हैं।

संस्कृत भाषा की व्यापक संपन्नता और सौन्दर्य तथा विचारों के संचार की पद्धति को महसूस करने के कारण कविकुल गुरु कालिदास संस्कृत विश्वविद्यालय ने विदेशियों के लिए आयुर्वेद पाठ्यक्रम चलाने तथा प्राचीन वैदिक ज्ञान के परिरक्षण की दिशा में कार्य कर रहा है।

कविकुल गुरु कालिदास संस्कृत विश्वविद्यालय नवम्बर 2004 से मिशन के साथ एम.आर.सी. के रूप में कार्य कर रहा है। महाराष्ट्र के विदर्भ और मराठवाड़ा क्षेत्र से प्राप्त पाण्डुलिपियों के संबंध में इसने 6143 आँकड़ों का प्रलेखन किया है। इनमें से अधिकांश पाण्डुलिपियाँ व्रत, वैदिक साहित्य, पुराण और अन्य शास्त्रों से संबंधित हैं।

पताः
प्रो. हर्षदा दवे
कुलपति
कविकुल गुरु कालिदास संस्कृत विश्वविद्यालय
भागला भवन, शीतलवाड़ी
मांडा रोड
रामटेक - 441106
महाराष्ट्र
दूरभाषः 0711 455549/0712 531298/0712 560992

लालभाई दलपत भाई भारतविद्या संस्थान, अहमदाबाद

लालभाई दलपत भाई भारतविद्या संस्थान में जैन पाण्डुलिपियों के विशालतम निधि में से एक है। इसकी स्थापना मुनि श्री पुण्यविजय जी और श्री कस्तूरीभाई लालभाई ने की थी। इसमें 500 चित्रित पाण्डुलिपियों सहित 75000 पाण्डुलिपियाँ हैं और 45000 पुस्तकें हैं। इसमें वेद, आगम, बौद्ध धर्म, तंत्र, भारतीय दर्शन और काव्यशास्त्र सहित विभिन्न विषयों पर पाण्डुलिपियाँ हैं। संस्कृत, पुरानी गुजराती, हिंदी और राजस्थानी जैसी अनेक भाषाओं की स्तंभाकार सूचियाँ प्रकाशित की गई हैं।

यह संस्थान सितम्बर, 2003 से एम. आर. सी. के रूप में कार्य कर रहा है और अब इसने मैनुस ग्रन्थावली डाटाबेस के लिए 64740 इलेक्ट्रॉनिक आँकड़े तैयार किए हैं। इसने 18 जिलों के 104 संस्थानों और 27 व्यक्तिगत पाण्डुलिपि भण्डारों का सर्वेक्षण किया है। इसने पाण्डुलिपि परिरक्षण पर लोगों को जागृत करने के लिए 10 जागरूकता अभियान चलाए हैं।

पताः
डॉ. जीतेन्द्र बी. शाह
निदेशक
लालभाई दलपत भाई भारतविद्या संस्थान
नवरंगपुर
निकट गुजरात विश्वविद्यालय

अहमदाबाद - 380009
गुजरात
दूरभाषः 079 6302463
ई- मेलः ldil@adl.vsnl.net.in

राजस्थान प्राच्य शोध संस्थान, जोधपुर

राजस्थान और आसपास के क्षेत्र से संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश और हिंदी-राजस्थानी में उपलब्ध प्राचीन साहित्य की खोज, संग्रह, परिरक्षण, संपादन और प्रकाशन हेतु राजस्थान सरकार के प्रयास से राजस्थान प्राच्य शोध संस्थान, जोधपुर की स्थापना की गयी। इसे पहले सन् 1950 में संस्कृत मण्डल नाम से स्थापित किया गया और सन् 1954 में इसे पूर्ण विभाग का स्तर प्रदान किया गया।

इसके पास एक विशाल संदर्भ पुस्तकालय है जिसमें 26713 दुर्लभ पुस्तकें और 6000 पत्रिकाएं हैं। इसके बिकानेर, जयपुर, भरतपुर, कोटा, चित्तौड़गढ़, उदयपुर और अल्वर में सात पाण्डुलिपि भण्डार शाखाएं हैं। इसमें वेद, धर्मशास्त्र, इतिहास, पुराण, तंत्र, मंत्र, दर्शन, ज्योतिष और आयुर्वेद जैसे विषयों से संबंधित 1,011 चित्रित पाण्डुलिपियों सहित 119830 पाण्डुलिपियों का संकलन है। इस संस्थान ने 130 विरणात्मक सूचियाँ तथा 200 महत्त्वपूर्ण ग्रन्थों के विवेचनात्मक संस्करण प्रकाशित किया है।

राजस्थान प्राच्य शोध संस्थान, जोधपुर के विशाल पाण्डुलिपि संकलन में ग्रन्थों के साथ- साथ ताड़-पत्र, भूर्ज-पत्र, कागज, काष्ठ और वस्त्र पर पाल, पश्चिम भारतीय, राजपूत, कांगड़ा और जम्मू-कश्मीर शैली के लघु चित्र भी हैं। इसके पास द्विपथ, त्रिपथ और पंचपथ नामक सुलेखित पाण्डुलिपियाँ भी हैं। इसके कुछ अनुपम उदाहरण हैं, आर्ष रामायण, गीत गोविन्द (मेवाड़ शैली), वी.एस. 1485 का चित्रित कल्पसूत्र, बौद्ध आर्य महाविद्या पाण्डुलिपि और संक्षिप्त भागवत। गुजरात के धरनोज गाँव से पृथ्वीराज रासो की प्रामाणिक पाण्डुलिपि और स्वर्ण स्याही में अंकित अनेक पाण्डुलिपियाँ उल्लेखनीय है।

राजस्थान प्राच्य शोध संस्थान, जोधपुर में सितम्बर 2003 से एम. आर. सी. कार्य कर रही है। राजस्थान भर में स्थित अपनी शाखाओं के माध्यम से इसने 176954 पाण्डुलिपियों के लिए इलेक्ट्रॉनिक डाटाबेस जोड़कर राष्ट्रीय इलेक्ट्रॉनिक डाटाबेस को

आर.ओ.आर., जयपुर में परिरक्षित भगवद्गीता का एक पृष्ठ

27- 29 मार्च को कुंद कुंद ज्ञानपीठ, इन्दौर में गणित पाण्डुलिपि पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठि में प्रतिभागी

समृद्ध किया है। इस संस्थान ने ढोलपर, अल्वर, जयपुर, कोटा और बिकानेर सहित नौ जिलों के 22 संस्थानों तथा 140 व्यक्तिगत पाण्डुलिपि भण्डारों का सर्वेक्षण किया है। इस एम.आर.सी. द्वारा संचालित नौ सजगता कार्यक्रमों से पाण्डुलिपि से संबंधित नए आँकड़े प्राप्त हुए हैं।

पताः

डॉ, श्याम सिंह राजपुरोहित
आर. ए. एस.
राजस्थान प्राच्य शोध संस्थान
पी. डब्ल्यू. डी. रोड
जोधपुर - 342011
राजस्थान
दूरभाषः 02912430244

कुंद कुंद ज्ञानपीठ, इन्दौर

श्री देवकुमार सिंह जी कासलीवाल ने दिगम्बर जैन उदासीन आश्रम न्यास के अधीन सन् 1987 में कुंद कुंद ज्ञानपीठ, इन्दौर की स्थापना की। इस संस्थान का मुख्य उद्देश्य जैन धर्म के इतिहास और वास्तुकला पर जोर देते हुए जैन धर्म के वैज्ञानिक अध्ययन को प्रोत्साहित करना है। देवी अहल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर प्राचीन भारतीय गणित और गणित का इतिहास, पर्यावरण, परिस्थितिकी विज्ञान, प्राकृत, पलि, अपभ्रंश और प्राच्य भाषाएं, तुलनात्मक धर्म, प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति और पुरातत्त्व जैसे पाँच विषयों की पीएच. डी. को मान्यता दी है। कुंद कुंद ज्ञानपीठ, इन्दौर के पुस्तकालय में 12500 मुद्रित पुस्तकें और 350 पत्रिकाएं हैं। इसने 1999 से जैन पाण्डुलिपि परियोजना के नाम से 479 जैन भंडारों के 58766 जैन पण्डुलिपियों की सूची तैयार की है। इन आँकड़ों को मिशन के डाटाबेस से जोड़ दिया गया है।

कुंद कुंद ज्ञानपीठ, इन्दौर में एम.आर.सी. मिशन के साथ मई 2005 से कार्य कर रही है। इस एम.आर.सी. ने 55 जिलों के 90 संस्थानों और 350 व्यक्तिगत पाण्डुलिपि भण्डारों का सर्वेक्षण किया है तथा इसने विभिन्न स्थानों पर अनेक जागरूकता कार्यक्रम संचालित किए हैं। इस एम.आर.सी. ने 58766 आँकड़ों का प्रलेखन तथा 32165 इलेक्ट्रॉनिक प्रपत्र का प्रलेखन किया है।

पता:

डॉ. अनुपम जैन
सचिव
584 एम. जी. रोड
तुकोगंज, इन्दौर - 452001

सिंधिया प्राच्य शोध संस्थान, विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन

सिंधिया प्राच्य शोध संस्थान, विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन की स्थापना सन् 1957 में की गयी। इस विश्वविद्यालय में पुरातत्त्व संग्रहालय और कला वीथिका के अतिरिक्त विरासत सामग्रियों और कलाकृतियों का एक प्रमुख भण्डार है।

डॉ. हर्षदेव संग्रह से ज्ञानेश्वरी के बिखरी हुयी चित्रित पाण्डुलिपि का एक पृष्ठ

सिंधिया प्राच्य शोध संस्थान, विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन में सभी भाषाओं की पाण्डुलिपियाँ हैं लेकिन संस्कृत की प्रमुख रूप से। इसके पास पुराने ताड़-पत्र, भूर्ज-पत्र और कागज की 18000 दुर्लभ पाण्डुलिपियों का संकलन है। इसमें प्राचीन दर्शन, विज्ञान, धर्म, दर्शन, भाषा, व्याकरण और कला से संबंधित विषयों की पाण्डुलिपियाँ हैं। इनमें श्रीमद्भगवत गीता की स्वर्ण और रजत सेट में चित्रित पाण्डुलिपियाँ हैं, पुराने मुगल और राजपूत शैली की चित्रित पाण्डुलिपियाँ और अन्य विरासत के महत्त्व की पाण्डुलिपियाँ हैं।

सिंधिया प्राच्य शोध संस्थान, विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन में सितम्बर 2003 से एम. आर. सी. कार्य कर रही है। इस एम.आर.सी. मध्य प्रदेश राज्य में व्यापक सर्वेक्षण के आधार पर 46000 पाण्डुलिपियों का प्रलेखन किया है तथा मिशन के मैनुस ग्रन्थावली डाटाबेस से 38840 पाण्डुलिपियों के इलेक्ट्रॉनिक डाटाबेस को जोड़ा है। इस एम.आर.सी. ने 90 संस्थानों और 34 व्यक्तिगत पाण्डुलिपि भण्डारों का सर्वेक्षण किया है।

पता:

बालकृष्ण शर्मा
निदेशक
सिंधिया प्राचीन शोध संस्थान,
विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन,
मध्य प्रदेश
दूरभाष: 0734 2515400
फैक्स: 07342514276
ई-मेल: sorimrc@yahoo.com

राष्ट्रीय संग्रहालय, नयी दिल्ली में आयोजित निवारक संरक्षण जागरूकता कार्यक्रम में राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, नयी दिल्ली के कुलपति प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी

11–20 फरवरी, 2011 को वैदिक अध्ययन विद्यालय, आर. बी. यू. कोलकाता में आयोजित प्राथमिक स्तरीय पाण्डुलिपि शास्त्र तथा पुरातत्व लेखन कार्यशाला

हमारे सहयोगी
पाण्डुलिपि संरक्षण केन्द्र

एम.सी.सी. का संगठन

- प्रत्येक एम.सी.सी. में पाण्डुलिपि संरक्षण प्रशिक्षित संरक्षकों और विशेषज्ञों का एक दल होता है।
- प्रत्येक एम.सी.सी. में उस संस्थान के वर्तमान में उपलब्ध कर्मचारियों में से एक जो परियोजना संयोजक होता है वह गतिविधियों के प्रशासन और देखरेख का दायित्व लेता है।
- प्रत्येक एम.सी.सी. में पाण्डुलिपि संरक्षण कार्य करने के लिए आधारभूत सुविधा-युक्त प्रयोगशाला होती है।
- प्रतेयक एम.सी.सी. अनेक संस्थाओं को उनके पास उपलब्ध पाण्डुलिपियों के संरक्षण हेतु अनेक स्तर का प्रशिक्षण देती है।
- एम.सी.सी. सम्पूर्ण देश में पाण्डुलिपि भण्डार स्वामियों को निवारक एवं उपचारात्मक संरक्षण में प्रशिक्षण देता है।
- एम.सी.सी. में काम करने वाले संरक्षकों के कौशल को बढ़ाने नियमित रूप से कार्यशालाओं और प्रशिक्षण सत्र का आयोजन किया जाता है।

एम. सी. सी. का कार्य निष्पादन

- सभी एम.सी.सी. में आधारभूत सुविधाओं से युक्त संरक्षण प्रयोगशाला होती है।
- प्रत्येक एम.सी.सी. में संबंधित कर्मचारियों के दल को विभिन्न स्तर की विशेषज्ञता प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है।
- एम.सी.सी. के निवारक संरक्षण कार्यक्रम में व्यवस्थित ढंग से बढ़ोतरी की जाती है।
- संरक्षण से संबंधित विषयों में समझ बढ़ाने और देख रेख के लिए अधिकाधिक संस्थानों के साथ सम्पर्क अभियान चलाया जाता है।
- किसी संस्थान में उपलब्ध आधारभूत सुविधा, अतीत के कार्य और पाण्डुलिपि संकलन और संस्थान में उपचारात्मक संरक्षण कार्य में उसके सहयोग के आधार पर उसे एम.सी.सी. बनाया जाता है।

केन्द्रीय बौद्ध अध्ययन संस्थान, लेह

केन्द्रीय बौद्ध अध्ययन संस्थान विगत अनेक वर्षों से लेह क्षेत्र में बौद्ध धर्म से संबंधित कार्यो के लिए प्रमुख संस्था के रूप में कार्य कर रहा है। पहले इस संस्थान को बौद्ध दर्शन विद्यालय के रूप में जाना जाता था। इसकी स्थापना सन् 1959 में हुई थी। इसका मुख्य उद्देश्य बौद्ध धर्म का समग्र ज्ञान प्राप्त करना है। इसके अंतर्गत प्राचीन शास्त्रों, संस्कृति, दर्शन, इतिहास, और हिन्दी, संस्कृत, अंग्रेजी और पालि भाषाओं का अध्ययन किया जाता है। यह दुर्लभ पाण्डुलिपियों का परिरक्षण और प्रकाशन भी करता है। साथ ही इसमें बौद्ध धर्म में शोध करने की सुविधा भी उपलब्ध है। यह संस्थान बौद्ध मत, साहित्य और कला की चेतना का संचार युवाओं में करता है।

इन पाण्डुलिपियों के संरक्षण हेतु के.बौ.अ.सं. में पाण्डुलिपि संरक्षण केन्द्र की स्थापना की गई थी। यहाँ पहुँच कर मिशन का केन्द्रीय संरक्षण दल ने संरक्षण हेतु आधारभूत सुविधा युक्त प्रयोगशाला की स्थापना की। इसमें 3592 से अधिक पृष्ठों का निवारक संरक्षण किया जा चुका है तथा 3000 पण्डुलिपियों का उपचारक संरक्षण हो चुका है।

पताः
वांचुक दोरजी नेगी
निदेशक
केन्द्रीय बौद्ध अध्ययन संस्थान,
चोग्लामसार
लेह (लद्दाख) - 194001
दूरभाष/फैक्सः 01982 - 264391
श्री त्सेरिंग मुथुप (प्रशा. अधि.) - 09419177543
ई-मेलः office@cibsladakh.com

भाषा एवं संस्कृति विभाग, शिमला

इस संस्थान ने एम.आर.सी. के रूप में काम करने के लिए मिशन के साथ 27 मई 2005 को सहमति पत्र पर हस्ताक्षर किए। इसके पास सुव्यवस्थित प्रयोगशाला की स्थापना की गई है। यह केन्द्र हिमाचल प्रदेश के दूरस्थ अंचल में निवारक संरक्षण कार्य करता है। इसके पास 9 पुनर् संगठन भण्डार हैं। इसने 29 संस्थानों के 99869 पृष्ठों का निवारक संरक्षण किया है। साथ ही 26744 पृष्ठों का उपचारक संरक्षण किया जा चुका है।

पताः

डॉ. हरि चौहान
निदेशक
भाषा एवं संस्कृति विभाग
ब्लॉक सं.- 395, एस. डी. ए. परिसर
कासुमपुटी
शिमला - 171009
हिमाचल प्रदेश
दूरभाषः 0177 1626614

उत्तरांचल संरक्षण, शोध एवं प्रशिक्षण संस्थान, नैनीताल

उत्तरांचल संरक्षण, शोध एवं प्रशिक्षण संस्थान, नैनीताल ने एम.सी.सी. के रूप में कार्य करने के लिए 19 जुलाई 2005 को मिशन के साथ सहमति पत्र पर हस्ताक्षर किया। इसमें आधारभूत सुविधा युक्त एक संरक्षण प्रयोगशाला की स्थापना की गई। इस कार्य के लिए दो लोगों को नियुक्त किया गया और उन्हें आधारभूत प्रशिक्षण दिया गया। इस केन्द्र की आधारभूत सुविधाओं का उपयोग करके इसे एक प्रशिक्षण केन्द्र के रूप में विकसित किया जा रहा है। इस केन्द्र ने 5 संस्थानों में निवारक संरक्षण कार्य किया है और इसने 9500 पृष्ठों का निवारक संरक्षण किया है।

पताः

अनुपम साह
निदेशक
उत्तरांचल संरक्षण, शोध एवं प्रशिक्षण संस्थान,
मार्कण्डेय भवन (निकट एच. एम. टी. मुख्य द्वार)
रानी बाग
जिला- नैनीताल - 263126
उत्तरांचल
दूरभाषः 05946 - 244242
फैक्सः 05946 - 244242
ई-मेलः uicrat@sancharent.com

वृन्दावन शोध संस्थान

विद्याप्रेमी डॉ. आर. के. गुप्ता द्वारा सन् 1968 में स्थापित वृन्दावन शोध संस्थान का उद्घाटन तत्कालीन पर्यटन एवं नागरिक उड्डयन मंत्री डॉ. कर्ण सिंह ने किया था। भारतीय संग्रहालय संघ द्वारा इस संस्थान को पाण्डुलिपि एवं अभिलेखागार सामग्री संग्रहालय का स्तर प्रदान किया गया है। इस प्रकार यह संस्थान भारतीय संस्कृति के संरक्षक एवं प्रकाशक के रूप में प्रतिष्ठित है। इस संस्थान का मूल उद्देश्य सामान्य रूप से सम्पूर्ण भारत और विशेष रूप से ब्रज क्षेत्र की पाण्डुलिपियों, अभिलेखागार सामग्रियों, कलाकृतियों और सांस्कृतिक सामग्रियों का संग्रह, परिरक्षण और अध्ययन करना है। इस संस्थान ने इस क्षेत्र के व्यक्तिगत पाण्डुलिपि भण्डारों से हजारों पाण्डुलिपियों और मंदिर सामग्रियों का संग्रह करके उन पर लघु चलत्रित्र तैयार किया है। इसके पासा वर्तमान में संस्कृत, हिन्दी, बांग्ला और अन्य भारतीय भाषाओं की 30000 पाण्डुलिपियों, मंदिर अभिलेखों और अभिलेखागार सामग्रियों का संकलन है जो उस क्षेत्र के मध्यकालीन भारत के सामाजिक-आर्थिक, धार्मिक और सांस्कृतिक जीवन पर प्रकाश डालते हैं।

वृन्दावन शोध संस्थान सितम्बर, 2003 से मिशन के साथ एम.सी.सी. के रूप में जुड़ा हुआ है। इसने 4 जागरूकता अभियानों और अनेक जन सम्पर्क अभियानों का आयोजन किया है। इसने 18 पाण्डुलिपि संरक्षण सहयोगी संस्थानों का चयन किया है और 180382 पृष्ठों का निवारक संरक्षण किया है। साथ ही इसने 6173 पृष्ठों का उपचारात्मक संरक्षण किया है।

पताः

डॉ. पी. गोस्वामी
संयोजक
वृन्दावन शोध संस्थान
रमणरेती मार्ग
वृन्दावन - 281121
दूरभाषः 0565-2540628
फैक्सः 2540576
ई-मेलः vrivbn@sancahrnet.in

नागार्जुन बौद्ध संस्थान, गोरखपुर

नागार्जुन बौद्ध संस्थान, गोरखपुर ने 18 मई 2005 को मिशन के साथ सहमति पत्र पर हस्ताक्षर किया। इस एम.सी.सी. गोरखपुर शहर के अंदर और आसपास में सम्पूर्ण रूप से पाण्डुलिपि सर्वेक्षण किया। संरक्षण के उद्देश्य से व्यक्तिगत तथा संस्थागत स्तर पर व्यापक परिमाण में पाण्डुलिपियों का सर्वेक्षण किया गया। वर्तमान में यह संस्थान अपनी पाण्डुलिपियों के संरक्षण

कार्य में संलग्न है। साथ ही इसने 5 संस्थानों के 68764 पृष्ठों का निवारक संरक्षण किया है।

पताः

श्री करुणेश शुक्ल
नागार्जुन बौद्ध संस्थान
18 अंधियारी बाग
गोरखपुर - 273001
दूरभाषः 0551 2242258/2249914

भारतीय संरक्षण संस्थान, लखनऊ

सन् 1985 में आई.एन.टी.ए.सी.एच. के प्रथम संरक्षण पुस्तकालय के रूप में भारतीय संरक्षण संस्थान, लखनऊ की स्थापना की गयी। यह मिशन के साथ सितम्बर 2003 से एम.सी.सी. के रूप में जुड़ा हुआ है। इसने दस कार्यशालाओं और अनेक जन सम्पर्क अभियानों का संचालन किया है। इस संस्थान ने 20 अन्य संस्थानों के विभिन्न संकलनों के 59487 पृष्ठों का संरक्षण किया है। सरक्षण और प्रशिक्षण से संबंधित अनेक क्षेत्रों में मानव संसाधन का सहयोग देने में यह संस्थान मिशन को पर्याप्त सहायता दे रहा है।

पताः

डॉ. ममता मिश्र
संरक्षक
भारतीय संरक्षण संस्थान परिषद्
एच.आई.जी. - 44 सेक्ट ई, अलीगंज स्कीम
लखनऊ
दूरभाषः 0522 2377814/2376858
फैक्सः 0522 233432
ई-मेलः iccin@sancharnet.in

प्राच्य शोध संस्थान, श्रीवेंकटश्वर विश्वविद्यालय, तिरुपति

इसकी स्थापना सैद्धान्तिक शोध तथा भारतीय संस्कृति एवं विरासत के प्रचार-प्रसार के उद्देश्य से की गयी। तिरुमाल तिरुपति देवसथानम द्वारा सन् 1939 में प्राच्य शोध संस्थान, श्रीवेंकटश्वर विश्वविद्यालय, तिरुपति की स्थापना की गई। । सन् 1956 में इस संस्थान को श्री वेंकटेश्वर विश्वविद्यालय को सुपुर्द कर दिया गया।

जैन पाण्डुलिपि आवरण पृष्ठ, आर.ओ.आर.आई., जोधपुर

इस संस्थान के पास ताड़-पत्र और कागज पर अंकित 50000 से अधिक पाण्डुलिपियों का विशाल संग्रह है। इसकी पुस्तकालय में 75000 दुर्लभ ग्रन्थ हैं। इस संस्थान ने वर्णमाला क्रम में एक स्तम्भाकार सूची प्रकाशित की है। इस पाण्डुलिपि भंडार में दर्शन, धर्म, काव्य, साहित्य, भाषा, व्याकरण, काव्यशास्त्र और जन्म कुण्डली से संबंधित ग्रन्थ हैं।

एम.सी.सी. के रूप में कार्य करने के लिए इस संस्था ने 18 मई 2005 को मिशन के साथ सहमति पत्र पर हस्ताक्षर किया। इसने अपने संकलन के लिए अच्छी भण्डारण व्यवस्था की है। इसमें प्रयोगशाला स्थापित होने के साथ ही निवारक और उपचारक संरक्षण प्रारंभ हो गया। इस केन्द्र ने 10 संस्थानों के विभिन्न प्रकार के संकलनों के 5067 पृष्ठों का उपचारक संरक्षण व्यवस्थित रूप से किया है।

पता:

श्री वी. वेंकटरामन रेड्डी
प्रभारी निदेशक
प्राच्य शोध संस्थान, श्रीवेंकटेश्वर विश्वविद्यालय,
तिरुपति - 517502
आन्ध्र प्रदेश
दूरभाष: 0877 2249666 (विस्तार) 291
फैक्स: 0877 222 6614

सलार जंग संग्रहालय, हैदराबाद

सलार जंग संग्रहालय, हैदराबाद में विश्व की सुंदरतम कलाकृतियाँ विद्यमान हैं। इस संग्रहालय ने आन्ध्र प्रदेश में पाण्डुलिपियों के संरक्षण हेतु मिशन के साथ अक्टूबर 2003 से एम.सी.सी. के रूप में कार्य करना प्रारंभ किया। इसने 19 संस्थानों के ताड़-पत्र और कागज पर अंकित पाण्डुलिपियों का निवारक एवं उपचारात्मक संरक्षण किया है। इसने विभिन्न संकलनों के 14264 पृष्ठों का उपचारात्मक संरक्षण तथा 49268 पृष्ठों का निवारक संरक्षण किया है।

पता:

डॉ. सी. पी. उनिहाल
निदेशक
सलार जंग संग्रहालय,
सलारजंग मार्ग
हैदराबाद - 500002
दूरभाष: 040 24523211/301
फैक्स: 040 24572558
ई-मेल: salarjung@hotmail.com

आई.एन.टी.ए.सी.एच. चित्रकला परिषद् कला संरक्षण केन्द्र, बंगलुरु

आई.एन.टी.ए.सी.एच. चित्रकला परिषद् कला संरक्षण केन्द्र, बंगलुरु मिशन के साथ 23 सितम्बर, 2003 से कार्य कर रहा है। इस एम.सी.सी ने विभिन्न संस्थानों की 5663 पाण्डुलिपियों का निवारक संरक्षण किया है। साथ ही इसने 23501 पाण्डुलिपियों का आकस्मिक संरक्षण किया है। इसके पास निवारक तथा उपचारात्मक संरक्षण हेतु सुव्यवस्थित प्रयोगशाला तथा प्रशिक्षित संरक्षक हैं।

पता:

सुश्री मधुरानाय
निदेशक
आई.एन.टी.ए.सी.एच. चित्रकला परिषद् कला संरक्षण केन्द्र,
कुमारकृपा मार्ग
बंगलुरु - 560001
दूरभाष - 080 2250418
फैक्स: 0802263424
ई-मेल: ickpac@vsnl.net

सरकारी संग्रहालय, चेन्नई

सरकारी संग्रहालय, चेन्नई मिशन के साथ अगस्त 2004 से एम.सी.सी. के रूप में कार्य कर रहा है। वर्तमान में प्रयोगशाला सुविधा के साथ-साथ इस एम.सी.सी. में अतिरिक्त सुविधाएँ भी हैं और कर्मचारियों की नियुक्ति भी की गयी है। इसने ताड-पत्र पाण्डुलिपियों के 766126 पृष्ठों का निवारक संरक्षण किया है और 7402 पृष्ठों का उपचारात्मक संरक्षण किया है।

पता:

वी. जयराज
सरकारी संग्रहालय
एगमोर
चेन्नई: 600008
दूरभाष: 044 28193238
ई-मेल: jeyrajv@rediffmail.com

कर्नाटक राज्य अभिलेखागार, बंगलुरु

कर्नाटक राज्य अभिलेखागार, बंगलुरु ने मिशन के साथ अगस्त 2004 में सहमति पत्र पर हस्ताक्षर किया। इसके पास पूर्ण संरक्षण पुस्तकालय है। इसने 20 संस्थानों की पाण्डुलिपियों का

उपचारात्मक संरक्षण किया है और 65255 पृष्ठों का निवारक संरक्षण किया है। साथ ही इसने संरक्षण पर 10 कार्यशालाओं का आयोजन किया है।

पताः

सुश्री उषा सुरेश
निदेशक
कमरा संख्या- 9
भूतल, विधान सभा
कर्नाटक राज्य अभिलेखागार, बंगलुरु - 1
दूरभाषः 22254465
फैक्सः 2235257
ई-मेलः dir_Archives@mail.kar.nic.in
website : http://kannadasiri.kar.nic.in/Archives

तंजौर महाराजा सरफोजी सरस्वती महल पुस्तकालय, तंजौर

तंजौर के नायक और मराठा राजवंशों द्वारा स्थापित तंजौर महाराजा सरफोजी सरस्वती महल पुस्तकालय, तंजौर वर्तमान में विश्व के उन विरले पुस्तकालयों में से हैं जिनकी स्थापना मध्यकाल में हुई थी। इस पुस्तकालय में कला, साहित्य और संस्कृति के सभी पक्षों से संबंधित दुर्लभ और महत्त्वपूर्ण पाण्डुलिपियों, पुस्तकों, मानचित्रों और चित्रों का संग्रह है। यहाँ पर संस्कृत, तमिल, मराठी और तेलुगू भाषाओं में लगभग 59000 पाण्डुलिपियों का विशाल संकलन है जिनमें से दक्षिण भारत के इतिहास और संस्कृति को प्रतिबिम्बित करने वाली अनेक चित्रित पाण्डुलिपियाँ भी हैं। इनमें से कुल 24,432 पाण्डुलिपियों को सूचीकृत किया जा चुका है और वे सक्रिय उपयोग में हैं। संस्कृत भाषा के लिए ग्रन्था, देवनागरी, तेलुगू, मलयालम, कन्नड और उड़िया लिपियों का उपयोग किया गया है। अभी तक पुस्तकालय द्वारा विवरणात्मक सूची के 14 खंड का प्रकाशन किया जा चुका है।

तंजौर महाराजा सरफोजी सरस्वती महल पुस्तकालय, तंजौर एम.सी.सी. के रूप में अक्टूबर, 2003 से काम कर रहा है। इस पुस्तकालय ने संरक्षण और पाण्डुलिपि भण्डारण के लिए कई देसी विधियों का प्रयोग किया है। इस एम.सी.सी. नेक तमिलनाडु सरकार के सहयोग से दो कार्यशालाओं और प्रचार अभियानों का संचालन किया है। इस एम.सी.सी. ने दस संस्थानों के कागज और ताड़-पत्र दोनों पर अंकित पाण्डुलिपियों का निवारक संरक्षण कार्यक्रम आयोजित किया है।

पताः

श्री पी. पेरूमल
परियोजना संयोजक
तंजौर महाराजा सरफोजी सरस्वती महल पुस्तकालय,
तंजौर - 613009
तमिलनाडु
दूरभाषः 04362 234107/230206
फैक्सः 04362 233568/230857

भित्ति चित्र संरक्षण शोध एवं प्रशिक्षण केन्द्र, त्रिपुनिथुरा भवन, कोचिन

भित्ति चित्र संरक्षण शोध एवं प्रशिक्षण केन्द्र, त्रिपुनिथुरा भवन, कोचिन कलाकृतियों, चित्रकृतियों और ऐतिहासिक अभिलेखों का भण्डार है। इस केन्द्र ने अपने 5 कर्मचारियों के साथ जुलाई 2004 से मिशन के साथ एम.सी.सी. के रूप में सहयोग करना प्रारंभ किया। इसने निवारक संरक्षण हेतु 19 संस्थानों और व्यक्तिगत पाण्डुलिपि भण्डारों की पहचान की। इसने कागज पर अंकित पाण्डुलिपियों के 837239 पृष्ठों का संरक्षण किया है।

पताः

अरविन्द कुमार
आई.एन.टी.ए.सी.एच. - एरनाकुलम्
हिल पैलेस संग्रहालय परिसर
त्रिपुनिथुरा
एरनाकुलम - 682301
केरल
दूरभाषः 09447451486
फैक्सः 0484 2780202
ई मेलः mcrtthrissur@rediffmail.com

खुदा बख़्श ओरिएन्टल पब्लिक लाइब्रेरी, पटना

खुदाबख़्श ओरिएन्टल पब्लिक लाइब्रेरी, पटना देश की राष्ट्रीय पुस्तकालयों में से एक है। इसकी स्थापना सन् 1891 में खुदा बख़्श खान ने कुछ पाण्डुलिपियों के अपने व्यक्तिगत संकलन के साथ की थी। सन् 1969 में संसद के अधिनियम द्वारा इसे राष्ट्रीय महत्त्व के संस्थान का दर्जा दिया गया।

महत्त्वपूर्ण पाण्डुलिपियों, दुर्लभ पुस्तकों, हिंदू देवी-देवताओं के चित्रों और लघु चित्रों, मुगल राजपूत, तुर्की और ईरानी चित्रकला के चित्रों के अपने विशाल संग्रह के कारण यह पुस्तकालय विश्वविख्यात है। इसके पास एक इंच चौड़े क़ुरान पाक की

विशेष पाण्डुलिपि है। केवल इसके पास ही स्पेन के कोर्डोबा विश्वविद्यालय की लूट से मुक्त करायी गई पुस्तकें हैं।

इसके पास जहाँगीरनामा, शाहनामा, अल-कुअरान, तारीख-ए-खानदान-ए-तैमुरिया और किताब-उल-हशैश जैसी दुर्लभ पाण्डुलिपियाँ हैं। यहां फारसी के खूबसूरत लिखावट और सिक्के के कई नमूने उपलब्ध हैं। इसके पास अलेक्जाण्ड्रिया, मिस्र, डमैस्कस, बेरूत, अरब से प्राप्त कई मंहगी दुर्लभ पाण्डुलिपियाँ हैं। यहाँ पर प्राच्य अध्ययन में मुसलमान काल से संबंधित अनुसंधान के लिए सुविधा उपलब्ध है। इस संस्थान ने 300 चित्रित पाण्डुलिपियों से संबंधित विवरणात्मक सूचियों के 39 खण्डों का प्रकाशन किया है। इस एम. आर. सी. ने उर्दू, अरबी और फारसी पाण्डुलिपियों के प्रलेखन पर मुख्य रूप से ध्यान दे रहा है।

यह एम.सी.सी. के रूप में सितम्बर 2003 से कार्य रहा है। इस संस्थान ने अपने सहयोगी संस्थानों की पहचान की है और उनके पास निवारक एवं उपचारक संरक्षण कार्यक्रम चला रहा है। इसने 14 संस्थानों की पाण्डुलिपियों के 169502 पृष्ठों का निवारक संरक्षण किया है और 37033 पृष्ठों का उपचारक संरक्षण किया है।

पता:

डॉ. इम्तयाज अहमद
निदेशक
खुदा बख़्श ओरिएन्टल पब्लिक लाइब्रेरी
अशोक राजपथ
पटना - 800004
बिहार
दूरभाष: 0612 2300209
फैक्स: 0612 2300209
ई-मेल: pat_kbopl@data1.in

कलकत्ता विश्वविद्यालय पाण्डुलिपि पुस्तकालय, कोलकाता

कलकत्ता विश्वविद्यालय पाण्डुलिपि पुस्तकालय, कोलकाता के स्थापना समय, 1857 से ही पाण्डुलिपि अनुभाग यहाँ पर कार्यरत है। सन् 1990 से पाण्डुलिपि पुस्तकालय कलकत्ता विश्वविद्यालय, कोलकाता के उप कुलपति (अकादमी) के अधीन के पूर्ण क्रियाशील इकाई बन गयी है। इस पुस्तकालय

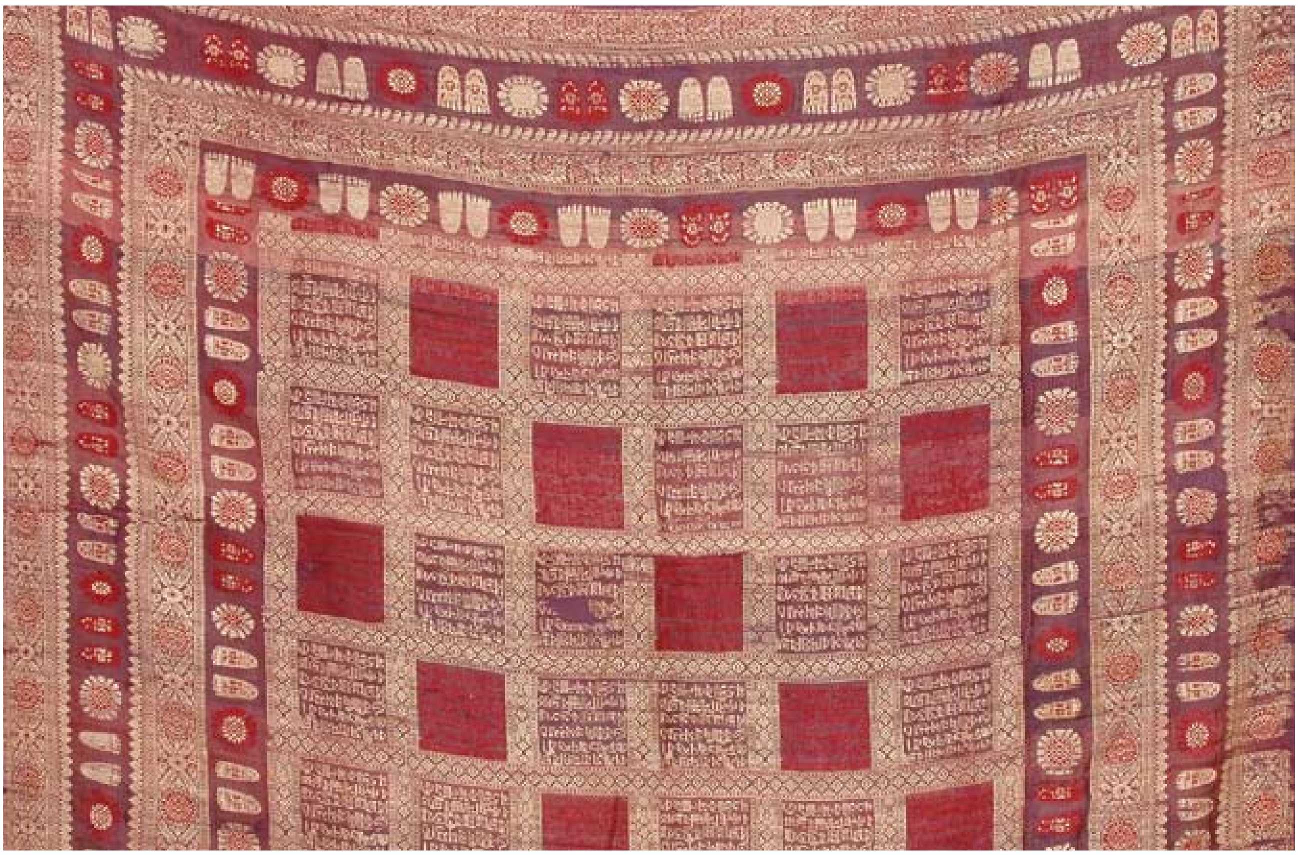

कपड़े पर काली मंत्र, राष्ट्रीय संग्रहालय, नयी दिल्ली संग्रह

में 42000 पाण्डुलिपियों का संकलन है जिसमें 20,000 संस्कृत, 12000 तिब्बती और बंगला में तथा अनेक फारसी और अरबी पाण्डुलिपियाँ हैं और कुछ ताड़-पत्र पर अंकित पाण्डुलिपियाँ हैं। ये पाण्डुलिपियाँ संस्कृत, तिब्बती, बंगला, उड़िया, मैथिली, पालि, अरबी और फारसी भाषाओं में हैं तथा ये बंगला, उड़िया, गौड़ी, नेवाड़ी, मलयालम और मैथिली लिपियों में हैं। कुछ पाण्डुलिपियाँ स्वर्ण और रजत में अक्षरांकित हैं।

कलकत्ता विश्वविद्यालय में यह एम.सी.सी. 26 मई 2005 से कार्य कर रही है। इसने अपने संकलन के लिए अच्छी भण्डारण व्यवस्था की है। इसमें संरक्षण प्रयोगशाला के लिए स्थान उपलब्ध कराया गया है और दो कर्मचारियों को संरक्षण कार्य के लिए नियुक्त किया गया है। इसने अपने 13 सहयोगी संस्थानों की पहचान की है और अन्य संस्थानों में निवारक संरक्षण में सहयोग दे रहा है। इसने 3,69361 पृष्ठों का निवारक संरक्षण किया है और 400 पाण्डुलिपियों के लिए उपचारात्मक संरक्षण किया है।

पता:

प्रो. रत्ना बसु
प्रभारी, पाण्डुलिपि पुस्तकालय
हार्डिंग भवन, प्रथम तल
87/1, कॉलेज स्ट्रीट सीनेट हाऊस,
कलकत्ता विश्वविद्यालय,
कोलकाता - 700073, पश्चिम बंगाल
दूरभाष-फैक्स: 033 22413763 /22413222

आई.एन.टी.ए.सी.एच. उड़ीसा कला संरक्षण केन्द्र, भुवनेश्वर

आई.एन.टी.ए.सी.एच. उड़ीसा कला संरक्षण केन्द्र, भुवनेश्वर अपने 14 संरक्षक कर्मचारियों के साथ मिशन के साथ सितम्बर 2003 से कार्य कर रहा है। यह केन्द्र ताड़-पत्र पाण्डुलिपि के संरक्षण में तीव्र गति से विशेषज्ञता प्राप्त कर रहा है। विगता वर्षो में इस केन्द्र ने 6 संस्थानों में निवारक और उपचारात्मक संरक्षण में सहयोग दिया है। इसने ताड़- पत्र तथा कागज, दोनों पर अंकित पाण्डुलिपियों का संरक्षण किया है। इस एम.सी.सी. ने 6006963 ताड़-पत्र पृष्ठों का संरक्षण किया है।

पता:

मल्लिका मित्रा
आई.एन.टी.ए.सी.एच. उड़ीसा कला संरक्षण केन्द्र
उड़ीसा राज्य संग्रहालय परिसर
भुवनेश्वर - 751014 (उड़ीसा)
दूरभाष - 0674 2432638
फैक्स - 0674 2432638
ई मेल: icioacc@sancharnet.in

ए.आई.टी.आई.एच.वाई.ए., भुवनेश्वर

ए.आई.टी.आई.एच.वाई.ए., भुवनेश्वर ने मिशन के साथ 11 मई 2005 को सहमति पत्र पर हस्ताक्षर किया। इसके पास संरक्षण कार्य के लिए 4 कर्मचारी हैं। इसने 8700 पृष्ठों का निवारक संरक्षण किया है। इसने उपचारात्मक संरक्षण हेतु अनेक संस्थानों को सहयोग दिया है।

पता:

श्री अरुण कुमार नायक
अध्यक्ष
ए.आई.टी.आई.एच.वाई.ए./एल -5
भीमतांगी हाउसिंग बोर्ड कालोनी
फेज - 1
भुवनेश्वर- 751002 उड़ीसा
दूरभाष: 06802296131

संबलपुर विश्वविद्यालय, बुरला, उड़ीसा

संबलपुर विश्वविद्यालय, बुरला, उड़ीसा ने एम.सी.सी. के रूप में अगस्त 2004 से कार्य प्रारंभ किया। संरक्षण प्रयोगशाला को आधारभूत सुविधा एंव सामग्री के साथ प्रारंभ किया गया। इसने अपने पाण्डुलिपि संरक्षण सहयोगी संस्थानों की पहचान कर ली है। इसमें निवारक संरक्षण पर बल दिया गया और अब तक ताड़-पत्र पर अंकित पाण्डुलिपियों के 446729 पृष्ठों का निवारक संरक्षण किया है।

पता:

पी.के. नायक
परियोजना संयोजक
संबलपुर विश्वविद्यालय पुस्तकालय
संबलपुर विश्वविद्यालय
बुरला - 768001
दूरभाष: 0663243061/2430329

श्रीमद्भागवत का एक पृष्ठ, सिंधिया प्राच्य शोध संस्थान, विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन

कृष्णकान्त हांडिक पुस्तकालय, गुवाहाटी, विश्वविद्यालय

सन् 1982 में गुवाहाटी विश्वविद्यालय, पुस्तकालय का नाम बदलकर इस विश्वविद्यालय के प्रथम कुलपति के नाम पर कृष्णकान्त हांडिक पुस्तकालय, गुवाहाटी, विश्वविद्यालय कर दिया गया। इसकी स्थापना मुख्य रूप से विभिन्न शोध कार्यों को प्रोत्साहित करने एवं सहयोग देने के लिए की गई थी। गुवाहाटी विश्वविद्यालय सन् 1948 से कार्य कर रहा है। इस पुस्तकालय में रामायण, भागवत् और लवकुश युद्ध जैसे ग्रन्थों की पाँच पाण्डुलिपियाँ सहित विभिन्न विषयों के 4500 पाण्डुलिपियाँ हैं। इस पाण्डुलिपि संकलन की अधिकांश पाण्डुलिपियाँ अगरु के छाल पर अंकित हैं। यहाँ पर अपने उद्‌भव क्षेत्र को प्रतिनिधित्व करने वाली ऐतिहासिक और सांस्कृतिक महत्त्व की पाण्डुलिपियाँ हैं।

कृष्णकान्त हांडिक पुस्तकालय, गुवाहाटी, विश्वविद्यालय ने एम.सी.सी. के रूप में कार्य करने के लिए 3 नवम्बर 2003 को मिशन के साथ सहमति पत्र पर हस्ताक्षर किया । इस संस्थान ने 2006 में 5 जन सम्पर्क सह कार्यशाला कार्यक्रमों का आयोजन किया है। इस एम.सी.सी. ने अधिक संख्या में सांचिपात तुलापात पण्डुलिपियों का निवारक एवं उपचारक संरक्षण किया है। इसने 65 संस्थानों के 104218 पृष्ठों का निवारक संरक्षण और 1682 पाण्डुलिपियों का उपचारक संरक्षण किया है।

पताः

डॉ. रमण बर्मन
पुस्तकालयाध्यक्ष
कृष्णकान्त हांडिक पुस्तकालय
गुवाहाटी विश्वविद्यालय
गुवाहाटी - 781014
असम
दूरभाषः 0361 2570529/2674438
फैक्सः 0361 2570133
ई मेलः kkhl@sancharnet.in

राजस्थान प्राच्य शोध संस्थान, जोधपुर

राजस्थान और आसपास के क्षेत्र से संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश और हिंदी-राजस्थानी में उपलब्ध प्राचीन साहित्य की खोज, संग्रह, परिरक्षण, संपादन और प्रकाशन हेतु राजस्थान सरकार के प्रयास से राजस्थान प्राच्य शोध संस्थान, जोधपुर की स्थापना की गयी। इसे पहले सन् 1950 में संस्कृत मण्डल नाम से स्थापित किया गया और सन् 1954 में इसे पूर्ण विभाग का स्तर प्रदान किया गया। इसके पास एक विशाल संदर्भ पुस्तकालय है।

इसमें 26713 दुर्लभ पुस्तकें और 6000 पत्रिकाएं हैं। इसके बिकानेर, जयपुर, भरतपुर, कोटा, चित्तौड़गढ़, उदयपुर और अल्वर में सात पाण्डुलिपि भण्डार शाखाएं हैं। इसमें वेद, धर्मशास्त्र, इतिहास, पुराण, तंत्र, मंत्र, दर्शन, ज्योतिष और आयुर्वेद जैसे विषयों से संबंधित 1,011 चित्रित पाण्डुलिपियों सहित 119830 पाण्डुलिपियों का संकलन है। इस संस्थान ने 130 विरणात्मक सूचियाँ तथा 200 महत्त्वपूर्ण ग्रन्थों के विवेचनात्मक संस्करण प्रकाशित किया है।

राजस्थान प्राच्य शोध संस्थान, जोधपुर के विशाल पाण्डुलिपि संकलन में ग्रन्थों के साथ-साथ ताड़-पत्र, भूर्ज-पत्र, कागज, काष्ठ और वस्त्र पर पाल, पश्चिम भारतीय, राजपूत, कांगड़ा और जम्मू-कश्मीर शैली के लघु चित्र भी हैं। इसके पास द्विपथ, त्रिपथ और पंचपथ नामक सुलेखित पाण्डुलिपियाँ भी हैं। इसके कुछ अनुपम उदाहरण हैं, आर्ष रामायण, गीत गोविन्द (मेवाड़ शैली), वी.एस. 1485 का चित्रित कल्पसूत्र, बौद्ध आर्य महाविद्या पाण्डुलिपि और संक्षिप्त भागवत। गुजरात के धरनोज गाँव से पृथ्वीराज रासो की प्रामाणिक पाण्डुलिपि और स्वर्ण स्याही में अंकित अनेक पाण्डुलिपियाँ उल्लेखनीय है।

राजस्थान प्राच्य शोध संस्थान, जोधपुर में अक्टूबर 2003 से एम.आर.सी. कार्य कर रही है। यह मुख्य रूप से निवारक संरक्षण के क्षेत्र में कार्य कर रहा है और इस कार्य में सहयोग देने के लिए इसके पास सम्पूर्ण प्रयोगशाला है। इसने 16 संस्थानों में 349374 के पृष्ठों का निवारक संरक्षण किया है।

पता:

डॉ. श्याम सिंह राजपुरोहित
संयोजक
राजस्थान प्राच्य शोध संस्थान
पी.डब्ल्यू.डी. रोड
जोधपुर - 342011
राजस्थान
दूरभाष: 02912430244

दिगम्बर जैन पाण्डुलिपि संरक्षण केन्द्र, जयपुर, राजस्थान

दिगम्बर जैन पाण्डुलिपि संरक्षण केन्द्र, जयपुर, राजस्थान ने 12 नवम्बर 2004 को मिशन के साथ सहमति पत्र पर हस्ताक्षर किया। इस एम. सी. सी. के पास पैन पाण्डुलिपियों का अच्छा खासा संकलन है और उसे उचित रूप से रखा गया है। यह केन्द्र निवारक संरक्षण में सक्रिय रूप से संलग्न है। इसने पाण्डुलिपियों के संरक्षण के प्रति जागरूकता उत्पन्न करने के लिए 6 प्रचार अभियान चलाए हैं। इसने निवारक संरक्षण में अनेक संस्थानों को सहयोग दिया है। इसने 696973 पृष्ठों का निवारक संरक्षण किया है। यह उपचारात्मक संरक्षण में संलग्न है और कागज पर अंकित पाण्डुलिपियों के 4405 पृष्ठों का उपचारात्मक संरक्षण किया है।

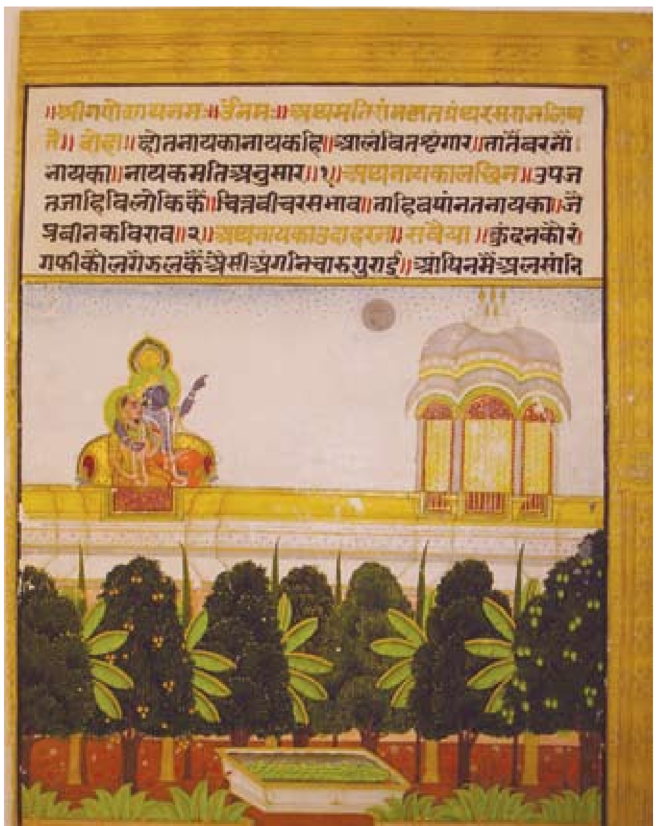

मतिराम के रसराज का एक पृष्ठ, आर.ओ.आर.आई, जोधपुर

पताः
कमल चन्द सोगानी
निदेशक
दिगम्बर जैन पाण्डुलिपि संरक्षण केन्द्र,
जैन विद्या संस्थान
दिगम्बर जैन नासिम भट्‌टारक जी
सवाई रामसिंह रोड
जयपुर- 302004
राजस्थान
दूरभाषः 0141 2385247

लालभाई दलपत भाई भारतविद्या संस्थान, अहमदाबाद

लालभाई दलपत भाई भारतविद्या संस्थान में जैन पाण्डुलिपियों के विशालतम निधि में से एक है। इसकी स्थापना मुनि श्री पुण्यविजय जी और श्री कस्तूरीभाई लालभाई ने की थी। इसमें 500 चित्रित पाण्डुलिपियों सहित 75000 पाण्डुलिपियाँ हैं और 45000 पुस्तकें हैं। इसमें वेद, आगम, बौद्ध धर्म, तंत्र, भारतीय दर्शन और काव्यशास्त्र सहित विभिन्न विषयों पर पाण्डुलिपियाँ हैं। संस्कृत, पुरानी गुजराती, हिंदी और राजस्थानी जैसी अनेक भाषाओं की स्तंभाकार सूचियाँ प्रकाशित की गई हैं।

इस एम.सी.सी. में आधारभूत सुविधा युक्त प्रयोगशाला और दो प्रशिक्षित संरक्षक हैं। इसमें अपने विशाल पाण्डुलिपि संग्रह का निवारक संरक्षण किया जाता है। इस संस्थान ने एक संस्थान के विभिन्न संकलनों के 58590 पृष्ठों का संरक्षण किया है।

पताः
डॉ. जीतेन्द्र शाह
निदेशक
लालभाई दलपत भाई भारतविद्या संस्थान
नवरंगपुर
निकट गुजरात विश्वविद्यालय
अहमदाबाद - 380009
गुजरात
दूरभाषः 079 6302463
ई-मेलः ldil@adl.vsnl.net.in

भण्डारकर प्राच्य शोध संस्थान, पुणे

प्रख्यात विद्वान, साहित्यकार और भारत में भारतविद्या के वैज्ञानिक प्रणेताओं में से एक रामकृष्ण गोपाल भण्डारकर की स्मृति में सन् 1917 में भण्डारकर प्राच्य शोध संस्थान, पुणे की स्थापना की गयी। इस संस्थान में धर्म, भाषा, वैदिक साहित्य, व्याकरण, संगीत, नाटक, पुराण, स्त्रोत्र, तंत्र, चिकित्सा और दर्शन शास्त्र सहित विभिन्न विषयों की 20000 पाण्डुलिपियाँ मौजूद हैं। इसके अभिलेखागार में दारा शिकोह द्वारा गीता और योगवशिष्ठ का फारसी अनुवाद, एक कश्मीरी पण्डित द्वारा विष्णु पुराण के फारसी अनुवाद, काजी हसन इफ्तखान द्वारा 390 वर्ष अश्व पालन पर लिखी पुस्तक और बादशाह शाहजहां के शाही पुस्तकालय की मुहर लगी हुयी मूल पाण्डुलिपि हैं।

अब तक इसने विवरणात्मक सूचियों (सरकारी पाण्डुलिपि पुस्तकालय की 1200 पाण्डुलिपियों से अधिक) के 35 खण्ड का प्रकाशन किया है। इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, नयी दिल्ली के तत्त्वावधान में इसने दस लाख पृष्ठों (4000 गैर सूचीकृत पाण्डुलिपियाँ इसमें सम्मिलित हैं।) की माइक्रोफिल्म तैयार की है।

भण्डारकर प्राच्य शोध संस्थान में स्थित एम.सी.सी. ने निवारक संरक्षण में प्रशिक्षित संरक्षकों को नियुक्त किया है। इसने 9 संस्थानों के 37500 पाण्डुलिपियों का निवारक संरक्षण किया है। साथ ही 1512 पृष्ठों का उपचारात्मक संरक्षण किया गया है।

पताः
प्रो. सरोजा भाटे
मान. सचिव
भण्डारकर प्राच्य शोध संस्थान
दक्कन जिमखाना
पुणे - 411047
महाराष्ट्र
दूरभाष 020 25656932, फैक्सः 020 25661362
ई-मेलः boril@vsnl.net

सिंधिया प्राच्य शोध संस्थान, विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन

सिंधिया प्राच्य शोध संस्थान, विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन की स्थापना सन् 1957 में की गयी। इस विश्वविद्यालय में पुरातत्त्व संग्रहालय और कला वीथिका के अतिरिक्त विरासत सामग्रियों और कलाकृतियों का एक प्रमुख भण्डार है।

सिंधिया प्राच्य शोध संस्थान, विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन में सभी भाषाओं की पाण्डुलिपियाँ हैं लेकिन संस्कृत की प्रमुख रूप से। इसके पास पुराने ताड़-पत्र, भूर्ज-पत्र और कागज की 18000 दुर्लभ पाण्डुलिपियों का संकलन है। इसमें प्राचीन दर्शन, विज्ञान,

धर्म, दर्शन, भाषा, व्याकरण और कला से संबंधित विषयों की पाण्डुलिपियाँ हैं। इनमें श्रीमद्भगवत गीता की स्वर्ण और रजत सेट में चित्रित पाण्डुलिपियाँ हैं, पुराने मुगल और राजपूत शैली की चित्रित पाण्डुलिपियाँ और अन्य विरासत के महत्त्व की पाण्डुलिपियाँ हैं।

सिंधिया प्राच्य शोध संस्थान, विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन ने एम.सी.सी. के रूप में कार्य करने के लिए 15 जून 2006 को मिशन के साथ सहमति पत्र पर हसताक्षर किया । इस एम.सी.सी. में केवल विरक संरक्षण पर जोर दिया जाता है। इसने 606963 पृष्ठों में ताड़-पत्र पर अंकित पाण्डुलिपियों का निवारक एवं उपचारात्मक संरक्षण किया है।

पता:

डॉ. बालकृष्ण शर्मा
निदेशक
सिंधिया प्राचीन शोध संस्थान,
विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन,
मध्य प्रदेश
दूरभाष: 0734 2515400
फैक्स: 07342514276
ई-मेल: sorimrc@yahoo.com

तवांग मठ

तवांग मठ 400 वर्ष पुराने बौद्ध गोपम के लिए विश्व विख्यात है। यह गोपम भारत का सबसे बड़ा है। यह मठ बौद्ध शिक्षा का एक महत्त्वपूर्ण केन्द्र है। इस गांपम को गाल्डेन नामग्याल ल्हात्से भी कहा जाता है। यह एक महायान मठ है। इसकी स्थापना सन् 1643-47 में लोदरे ग्यात्सों ने किया था जिन्हें मीरा लामा भी कहा जाता था। इस गोपम में 8 मीटर लम्बी भगवान बुद्ध की प्रतिमा है। इसके साथ ही इसमें अन्य प्रतिमाएँ और भित्ति चित्र भी हैं। 140 वर्गमीटर में विस्तृत यह पत्थर की तिमंजिला मठ है जिसमें 65 निवास कक्ष और कई गलियाँ और उप गलियाँ हैं। दुकनाग नामक मुख्य सभा कक्ष विभिन्न मुद्राओं में बुद्ध की प्रतिमाएँ है तथा पारखंग कक्ष में हस्तलिखित दुर्लभ पाण्डुलिपियाँ हैं। इसमें तांगिम, कंग्यूर और सुंगभूम नामक विशिष्ट ग्रंथ हैं। साथ ही कंजूर और तंजूर नाम प्राचीन शास्त्रों के 850 गट्ठर हैं। अनेक पाण्डुलिपियाँ स्वर्णाक्षर में अंकित हैं।

तवांग मठ ने मिशन के साथ अगस्त 2006 में सहमति पत्र पर हस्ताक्षर किया।

पता:

सचिव
तवांग मठ
तवांग
जिला: अरुणाचल
दूरभाष: 03794 - 223286/223476/9436051206 (मो.)

मणिपुर राज्य अभिलेखागार, इम्फाल

मणिपुर में लेखन कला के प्रारंभ होने के साथ ही अभिलेखों को सुरक्षित रखने की परंपरा रही है। सरकारी अभिलेखों को राजदरबार में सुरक्षित रखा जाता था। लोग स्वतंत्र रूप से अभिलेखों को सुरक्षित रखते थे। मणिपुर सरकार के समाज, कल्याण कला एंव संस्कृति निदेशालय के अंतर्गत मार्च 1982 में मणिपुर राज्य अभिलेखागार, इम्फाल की स्थापना की गयी। इस अभिलेखागार का उद्देश्य एक स्थान पर अतीत के सभी अभिलेखों को एकत्र करके रखना है, चाहे वह गोपनीय और अपोगनीय अथवा व्यक्तिगत हों। मणिपुर राज्य अभिलेखागार ने इन श्रेणियों की पाण्डुलिपियों का अधिग्रहण किया है - सार्वजनिक अभिलेख, व्यक्तिगत अभिलेख, प्राचीन मैती और बंगाली लिपियों में ऐतिहासिक पाण्डुलिपियाँ और पुस्तकालय की दुर्लभ पुस्तकें।

सन् 1891 से 1947 के बीच मणिपुर महाराजा के परवान और आदेश तथा मणिपुर में तैनात राजनीतिक ऐजेंट के कागजात तथा सन् 1886 से 1947 के बीच के राजनीतिक ऐजेंट और सहायक रजनीतिक ऐजेंट की डायरी जैसे महत्त्वपूर्ण कागजात मणिपुर राज्य अभिलेखागार में हैं। इस अभिलेखागार ने प्राचीन मणिपुरी और बंगाली लिपियों में लिखित कई ऐतिहासिक महत्त्व की पाण्डुलिपियों का संकलन और परिरक्षण किया है।

मणिपुर राज्य अभिलेखागार ने मिशन के साथ 24 अप्रैल 2006 को मिशन के साथ सहमति पत्र पर हस्ताक्षर किया। इसने ताड़-पत्र पर अंकित पाण्डुलिपियों के 20000 पृष्ठों का उपचारात्मक एवं निवारक, दोनों प्रकार का संरक्षण किया है।

पता:

डॉ. के. सविता देवी
निदेशक
मणिपुर राज्य अभिलेखागार
कैसामपाट
इम्फाल - 795001
मणिपुर
दूरभाष/फैक्स: 0385-2222813
मो.: 09436021755

श्री डी. के. जैन प्राच्य शोध संस्थान, आरा, बिहार

महान विद्वान और विद्या-प्रेमी श्री देवकुमार जैन ने 'जैन सिद्धांत भवन' की स्थापना सन् 1903 में की। यह केन्द्रीय जैन प्राच्य पुस्तकालय आरा के नाम से विख्यात है। इस पुस्तकालय में विश्व भर की पाण्डुलिपियों का अमूल्य संग्रह है। इसमें ताड़-पत्र पर लिखित 3179 और कागज पर अंकित 3500 ऐसी पाण्डुलिपियाँ हैं जो कम से कम 500 वर्ष पुरानी है। इनमें से सबसे महत्त्वपूर्ण जैन रामायण और भक्तमीरा की चित्रित पाण्डुलिपियाँ हैं। केवल जैन रामायण में ही मुगल और राजपूत शैली के उत्कृष्ट 200 चित्र हैं।

पाण्डुलिपियों के साथ-साथ इस पुस्तकालय ने लगभग सभी भारतीय तथा अनेक विदेशी भाषाओं में धर्म, दर्शन, इतिहास और साहित्य में 9000 पुस्तकें प्रकाशित की है। इसमें पुराने चित्र, कलाकृतियाँ और पुराने सिक्के मौजूद हैं। पौराणिक विषयों पर जो चित्र उपलब्ध हैं उनमें चन्द्रगुप्त के 16 सपने, 16 तीर्थंकर और पावापुरी मंदिर के चित्र हैं।

डी. के. जैन प्राच्य शोध संस्थान ने मिशन के साथ 24 अप्रैल 2006 को सहमति पत्र पर हस्ताक्षर किया। इसने अब तक 23855 पृष्ठों का उपचारात्मक एंव निवारक दोनों प्रकार के संरक्षण किए हैं।

पताः
डॉ. अजय कुमार जैन
श्री डी. के. जैन प्राच्य शोध संस्थान
देवाश्रम, महादेव रोड (आरा)
बिहार 802301

विश्वेश्वरानंद विश्वबंधु संस्कृत एवं भारत विद्या अध्ययन केन्द्र, होशियारपुर

विश्वेश्वरानंद विश्वबंधु संस्कृत एवं भारत विद्या अध्ययन केन्द्र, होशियारपुर देश के उत्तर-पाश्चिम हिस्से में पाण्डुलिपियों का एक प्रमुख भण्डार है। इसमें विभिन्न भाषाओं एवं विभिन्न विषयों के महत्त्वपूर्ण पाण्डुलिपियाँ हैं। यह विभाग अपने विशिष्ट संकलनों के लिए प्रसिद्ध है। ये भूर्ज-पत्र, ताड़-पत्र तथा कागज पर अंकित विभिन्न प्रकार की पाण्डुलिपियों का संकलन है। पावुची लिपि में अंकित सांचा पाण्डुलिपि इस संस्थान की अद्वितीय पाण्डुलिपियों में से एक है। इसके कहीं अन्यत्र उपलब्ध होने की जानकारी नहीं है। इस लिपि को विद्वानों द्वारा पढ़ा जाना शेष है।

इस संस्थान ने 12 अप्रैल 2006 से मिशन के साथ एम.सी.सी. के रूप में काम करना प्रारंभ किया। इसने 1546 पृष्ठों का निवारक एवं उपचारात्मक, दोनों प्रकार का संरक्षण किया है।

18-20 फरवरी, 2011 को नागार्जुन बौद्ध संस्थान में बौद्ध संस्कृत ग्रन्थों पर व्याख्यान देते हुए रा. पा. मि. के निदेशक प्रो. दीप्ति एस. त्रिपाठी

पता:
वी.बी.आई.एस.आई.एस.
भारतविद्या अध्ययन
होशियारपुर, पंजाब

क्षेत्रीय संरक्षण प्रयोगशाला, तिरूअनंतपुरम

क्षेत्रीय संरक्षण प्रयोगशाला, तिरूअनंतपुरम की स्थापना सन् 1978 में पुरातत्त्व विभाग के अंतर्गत किया गया। इसकी स्थापना संस्कृति विभाग, भारत सरकार के वैज्ञानिक सलाहकार के परामर्श पर किया गया। इसकी प्रयोगशाला भारत में सर्वाधिक सुविधा युक्त संरक्षण प्रयोगशालाओं में से एक है। इसमें शिला, धातु, भित्ति चित्र सामग्रियों का संरक्षण किया जाता है। विभिन्न संग्रहालायों से लायी गयी क्षतिग्रस्त सामग्रियों का वैज्ञानिक परीक्षण के बाद ठीक किया जाता है। इसमें जैव और अजैव सामग्रियाँ, यथा – शिला, धातु और पाण्डुलिपियाँ शामिल हैं। सभी स्मारक सामग्रियों का स्थानापन्न संरक्षण किया जाता है। कुछ परियोजनाओं में यह प्रयोगशाला राष्ट्रीय संरक्षण शोध प्रयोगशाला, लखनऊ; राष्ट्रीय संग्रहालय, नयी दिल्ली, भारतीय संरक्षण परिषद् संस्थान और अन्य संस्थाओं से सहयोग करता है। क्षेत्रीय संरक्षण प्रयोगशाला, तिरूअनंतपुरम भारतीय संरक्षण अध्ययन संस्थान का सदस्य है।

इसने राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन के साथ 27, अप्रैल 2006 को सहमति पत्र पर हस्ताक्षर किया। यह सम्पूर्ण केरल के अन्य संस्थानों के साथ निवारक एवं उपचारात्मक संरक्षण में सहयोग करता है। अनेक संस्थानों में संरक्षण कार्य सम्पन्न करने के लिए इसके पास सुव्यवस्थित प्रयोगशाला और प्रशिक्षित संरक्षक हैं।

इसने 20 संस्थानों के 50322 पृष्ठों का निवारक एवं उपचारात्क संरक्षण किया है।

पता:
डॉ. के. के. महानाम पिल्लै
संरक्षण अधिकारी
क्षेत्रीय संरक्षण प्रयोगशाला
कॉटन हिल, वझुथाकौड
पो. ओ. – सास्थामंगलम्
तिरूअनंतपुरम – 695010
दूरभाष: 074127256351

केन्द्रीय पुस्तकालय, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय

केन्द्रीय पुस्तकालय, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय देश के विशालतम पुस्तकालयों में से एक है। प्रो. पी. के. तेलंग ने अपने पिता न्यायमूर्ति के. टी तेलंग की स्मृति में कुछ पुस्तकें सन् 1917 में दान के रूप में दिए थे। उन पुस्तकों से इस पुस्तकालय को प्रारंभ किया गया। यह पुस्तकालय केन्द्रीय हिन्दू महाविद्यालय, खामचा के तेलंग हॉल में स्थित था। प्रारंभ में इसके विस्तार में इतिहासकार सर यदुनाथ सरकार ने योगदान दिया। विश्वविद्यालय के वर्तमान परिसर के बनने से सन् 1921 में यह पुस्तकालय केन्द्रीय कला महाविद्यालय (वर्तमान कला संकाय) में आ गया। गोल मेज सम्मेलन के बाद सन् 1931 में लंदन से लौटने पर ब्रिटिश संग्रहालय पुस्तकालय, लंदन की तरह पुस्तकालय बनाने के इस विश्वविद्यालय के संस्थापक पं. मदनमोहन मालवीय के परामर्श पर परम दानी बड़ौदा महाराज सियाजीराव गायकवाड़ द्वारा सन् 1941 में इसके वर्तमान भव्य भवन का निर्माण कराया गया। इसके भव्य चक्राकार केन्द्रीय कक्ष में बर्मा सागौन से निर्मित भव्य एवं दुर्लभ सामग्रियाँ हैं।

इसने राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन के साथ 23 नवम्बर 2006 को हस्ताक्षर किया। यह सम्पूर्ण क्षेत्र के अन्य संस्थानों के साथ निवारक एवं उपचारात्मक संरक्षण में सहयोग करता है। इसने 1,86,101 पृष्ठों का निवारक और उपचारात्मक, दोनों प्रकार का संरक्षण किया है।

पता:
डॉ. डी. के. सिंह
केन्द्रीय पुस्तकालय
बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय
बनारस – 221005

राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन की द्वि-मासिक गृह पत्रिका कृति रक्षण

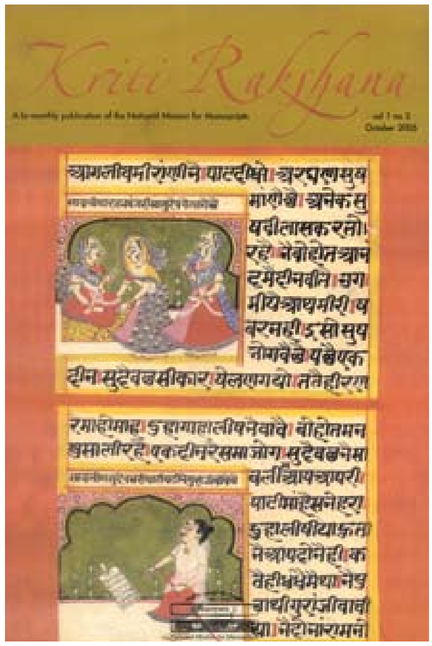

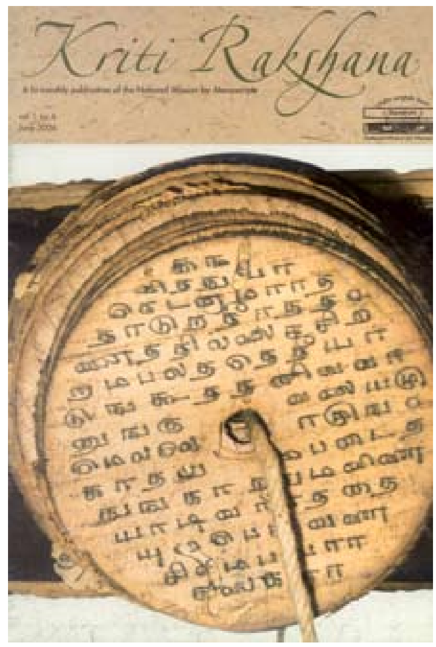

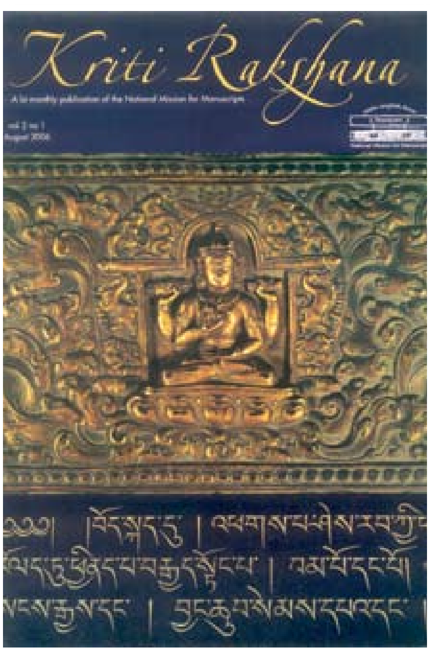

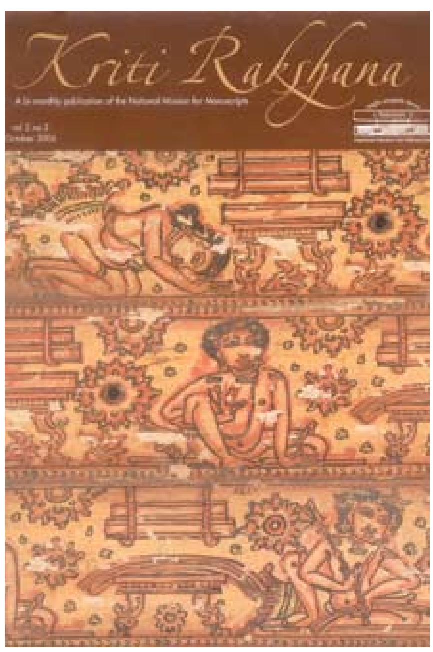

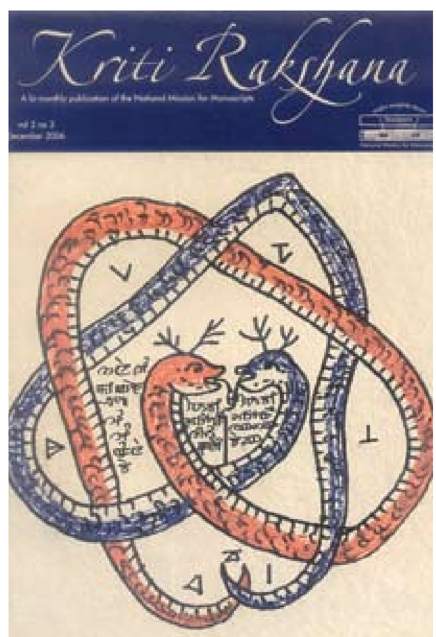

Kriti Rakshana
vol 2 no 4
February 2007

Kriti Rakshana
vol 2 no 5
April 2007

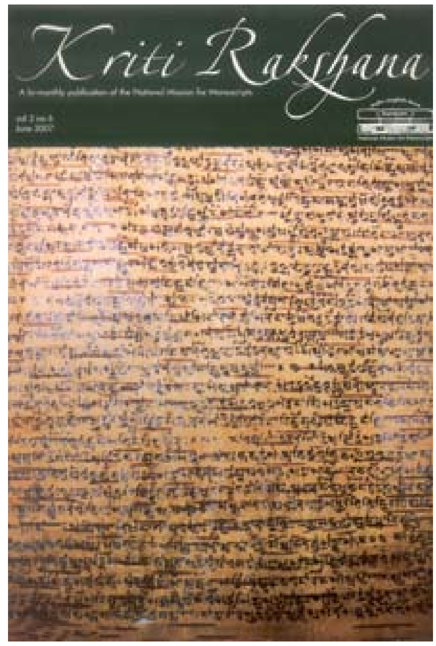
Kriti Rakshana
vol 2 no 6
June 2007

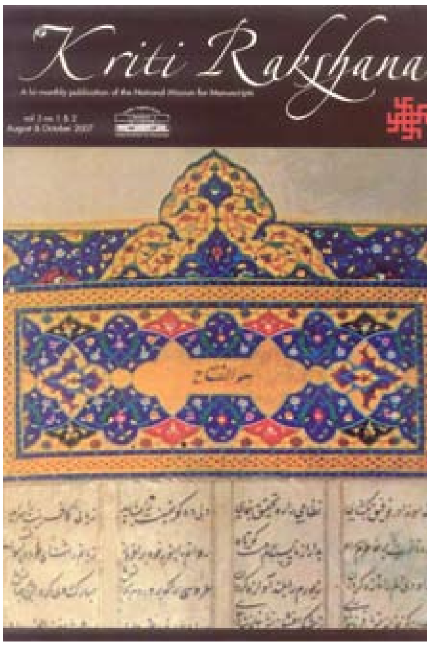
Kriti Rakshana
vol 3 no 1 & 2
August & October 2007

Kriti Rakshana
vol 3 no 3 & 4
December 2007 &
February 2008

Kriti Rakshana
A bi-monthaly publication of the National Mission for Manuscripts
Vol 3 no 5 & 6, vol 4 no 1-4
April 2008 – March 2009

Kriti Rakshana
A bi-monthly publication of the National Mission for Manuscripts
Vol. 4 nos. 5-6, vol. 5 nos. 1-4
April 2009 – March 2010

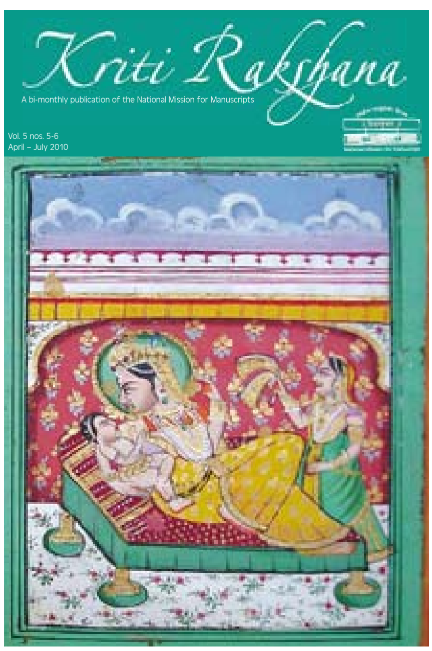
Kriti Rakshana
A bi-monthly publication of the National Mission for Manuscripts
Vol. 5 nos. 5-6
April – July 2010

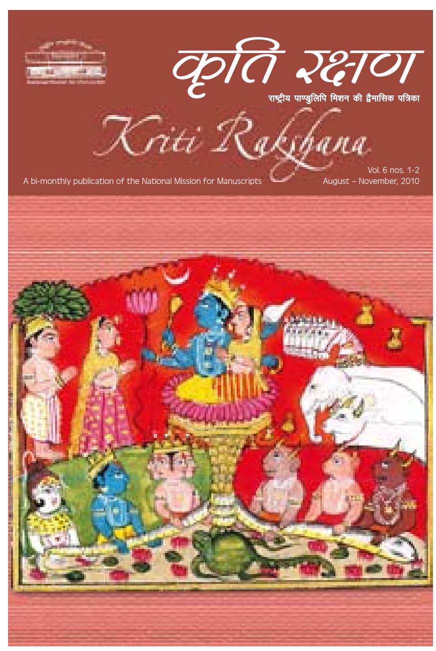
कृति रक्षण
राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन की द्वैमासिक पत्रिका
Kriti Rakshana
A bi-monthly publication of the National Mission for Manuscripts
Vol. 6 nos. 1-2
August – November, 2010

भावी योजनाएँ

- परिक्षण एवं संरक्षण हेतु प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन जारी रखना।
- संसाधन कर्मियों के दस्ते को शक्तिशाली करना।
- सांख्यिकीकरण के प्रयास को तेज करना।
- अप्रकाशित पाण्डुलिपियों का प्रकाशन।
- ब्रिटेन, फ्रांस, बेल्जियम, जर्मनी, अमरीका, कानाडा, आस्ट्रेलिया, थाईलैण्ड, कोरिया, मलेशिया, जापान, चीन, पाकिस्तान, बांग्लादेश, नेपाल में भारतीय पाण्डुलियों का पता लगाना।
- पाण्डुलिपि भण्डारों के साथ प्रत्यक्ष सम्पर्क करके पाण्डुलिपियों की प्रतियाँ प्राप्त करने का प्रयास करना।

राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन

॥ विज्ञानमुपास्य ॥

National Mission for Manuscripts